

A Sketch Of Anthropology And Psychology

The Mirror of Man

MIRAT-UL-INSAN

Rev. Mawlawi Dr. Imad ud-din Lahiz

दाना इन्सान की हिक्मत ये है कि अपनी राह पहचाने
(किताब मुकद्दस अम्साल 8:14)

मिरात-उल-इन्सान

ये किताब इन्सानी कैफ़ीयत वगैरा के बारे में

अल्लामा मौलवी इमाद-उद्दीन लाहिज़ डी. डी.





Rev. Mawlana Dr. Imad ud-din Lahiz

1830–1900

अल्लामा मौलवी इमाद-उद्दीन लाहिज़

Mirta-ul-Insan

The Mirror of Man

The Sketch of Anthropology and Psychology

By

Rev. Mawlawi Dr. Imad ud-din Lahiz

The wisdom of the prudent is to give thought to their ways

Proverbs 14:8

दाना इन्सान की हिक्मत ये है कि अपनी राह पहचाने

(किताब मुकद्दस अम्साल 8:14)

मिरात-उल-इन्सान

ये किताब इन्सानी कैफ़ीयत वग़ैरा के बारे में

अल्लामा मौलवी इमाद-उद्दीन लाहिज़ डी. डी.

ने इस मुराद से लिखी कि इस के पढ़ने वाले खुद-शनासी में
माहिर हो के खुदा शनासी की दौलत तक रसाई हासिल करें और

1889 ई.

मत्बअ रियाज़ हिंद अमृतसर में छपी

फ़हरिस्त-ए-मज़ामीन मिरात-उल-इन्सान

दीबाचा

दफ़ाअ_1	खुदा शनासी का बयान	8
दफ़ाअ_2	माख़ज़ खयालात किताब हाज़ा का ज़िक्र	9
दफ़ाअ_3	ईमान का बयान	11
दफ़ाअ_4	खुदा तआला जल्लशानहु का ज़िक्र	12
दफ़ाअ_5	लफ़ज़ इन्सान का बयान	14
दफ़ाअ_6	लफ़ज़ आदम का बयान	14
दफ़ाअ_7	लफ़ज़ हव्वा का बयान	15
दफ़ाअ_8	वहदत अबवी का बयान	15
दफ़ाअ_9	इन्सान एक खास वक़्त से दुनिया में है	16
दफ़ाअ_10	आदम क्योकर पैदा हुआ	17
दफ़ाअ_11	हम सब क्योकर पैदा होते हैं	19
दफ़ाअ_12	इन्सान की इस्तिलाही तारीफ़	31
दफ़ाअ_13	नुक्क़ (बात करने की ताक़त) के बयान में	23
दफ़ाअ_14	जान और रूह का बयान	24
दफ़ाअ_15	रूह और जान की ज़्यादा तौज़ीह	25
दफ़ाअ_16	नफ़्स-ए-नातिका में कुछ अलवी किरनें चमकती हैं	26
दफ़ाअ_17	फ़ायदा याद रखने के लायक़	28
दफ़ाअ_18	इन्सानी हवास अशराअ का बयान	29
दफ़ाअ_19	इन्सान के दिल का बयान	34
दफ़ाअ_20	दिमाग़ जिगर गुर्दों और अंतड़ियों का बयान	35
दफ़ाअ_21	गम का बयान	36
दफ़ाअ_22	खुशी का बयान	38
दफ़ाअ_23	जिस्म के बदकामों का बयान	43
दफ़ाअ_24	इन्सानी जिस्म के नामों का बयान	43
दफ़ाअ_25	रूह इन्सानी की सिफ़ात का बयान	44
दफ़ाअ_26	रूह इन्सानी ग़ैर-फ़ानी है	44

दफ़ाअ_27	इन्सानी रूह मज्बूर नहीं आज़ाद है	45
दफ़ाअ_28	रूह इन्सानी में दो तरफ़ा तोज़ है	45
दफ़ाअ_29	रूह जब गुनाह में है मुर्दा है मसीह इसे ज़िंदा करता है	46
दफ़ाअ_30	रूह पर अंधेरा सा है जिसके चार मखरज हैं	47
दफ़ाअ_31	ख़ुदा हमारा निशाना है	48
दफ़ाअ_32	नींद और ग़नूदगी का बयान	49
दफ़ाअ_33	ख़्वाब का बयान	49
दफ़ाअ_34	पैग़म्बरों और मोमिनीन के ख़्वाब का बयान	51
दफ़ाअ_35	अत्वार ताअलीम व तअलुम	51
दफ़ाअ_36	अत्वार तहकीकात का बयान	53
दफ़ाअ_37	कामिल इन्सान का बयान	55
दफ़ाअ_38	इन्सान के पैदा करने से ख़ुदा का क्या मतलब है	57
दफ़ाअ_39	मौत का बयान	60
दफ़ाअ_40	ताल्लुकात अर्वाह मोमिनीन बाख़ुदावन्द यसूअ	63
दफ़ाअ_41	रूह इन्सानी के लिबास का बयान	65

दीबाचा

हक़ तआला जलशाना की हम्दो सना के बाद बंदा **इमाद-उद्दीन लाहिज़** नाज़रीन किताब हाज़ा की ख़िदमत में यूँ अर्ज़ करता है कि अब तक मुझे कोई ऐसा रिसाला नज़र ना आया जिसमें इन्सान का ज़रूरी बयान कुछ तो हो जिस के वसीले से अवामुन्नास अपनी रूह की कैफ़ीयत से और अपनी अंदरूनी हालत से किसी क़द्र आगाही हासिल करें। ये मैं जानता हूँ कि मैं इस लायक़ नहीं हूँ कि ये भारी काम कर सकूँ और इस बहस के तमाम पहलू जैसे चाहीए वैसे दिखलाऊँ तो भी मैंने इरादा किया कि खुदा से दुआ मांग के जो कुछ लिख सकता हूँ लिखूँ और दूसरे ज़ी इल्म लायक़ आदमीयों को जो मुझसे बेहतर काम कर सकते हैं उभारूँ कि वो इस मुहिम की तरफ़ मुतवज्जा हों और यह मेरा रिसाला खुद-शनासी के बारे में एक इब्तिदाई किताब हो जाएगी। पस मैंने ये रिसाला लिख दिया और इस का नाम **“मिरात-उल-इन्सान”** रखा।

“मिरात” (مِرَاة) के मअनी हैं **“शीशा।”** वो सब शीशे जो लोगों के घरों में हैं इन में वो अपनी ज़ाहिरी सूरत को देख के दुरुस्त किया करते हैं ताकि वो अच्छे मालूम हों। ये किताबी शीशा है। चाहीए कि वो इस में अपनी अंदरूनी और पोशीदा कैफ़ीयत व हालत को फ़िक्र की आँख से देखें और अपनी इस्लाह के दरपे हों ताकि खुदा को पसंद आएँ जिसकी निगाह इन्सान के दिल पर है।

दफ़ाअ 1

खुद-शनासी के बयान में

अरबी ज़बान में एक क़दीम कहावत है और अहले तसव्वुफ़ उस का इस्तिमाल बहुत करते हैं और वह सहीह कहावत है जो ये है (مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ) यानी **“जिसने अपने आपको पहचाना उस ने अपने रब को पहचाना।”** “रब” के मअनी हैं “परवरिश कनुंदा।” “रबीब” के मअनी हैं “पर्वरिश याफ़ता।” हम सब रबीब हैं हमारा कोई रब है उसी का दूसरा नाम खुदा तआला है और रबूबियत वो काम है जो रब और रबीब के दर्मियान रब से होता है।

अगर आदमी अपने आप को पहचाने कि हम कौन हैं? और किस हाल में हैं? तो इस शनाख्त के वसीले से खुदा की शनाख्त कि वो कौन है? और कैसा है? आसान हो जाती है। रब की शनाख्त से मुराद ये है कि उस की कुछ शान और मर्ज़ी मालूम हो जाए कि वो कैसा है? और क्या चाहता है? ये मालूम करके जब कोई उस की मर्ज़ी के ताबेअ होता है तब वो शख्स अपनी ठीक वज़ा के मंशा में कायम हो के खुदा का मक़बूल और मुबारक बंदा हो जाता है।

अफ़सोस की बात है कि इस कहावत का मतलब बाअज़ सूफ़ियों ने ग़लत समझा है। वो कहते हैं कि **“अपने नफ़स का पहचानना रब का पहचानना है।”** यानी “तुम्हारा नफ़स ही तुम्हारा रब है” और यूँ वो हमा औसत (همه اوست) का दम भरते हैं। ये उनका ख़्याल इसलिए ग़लत है कि खुद-शनासी से हासिल नहीं होता है बल्कि खुद-फ़रामोशी से ये जहालत निकलती है।

रात-दिन के तजर्बों से हमें मालूम है कि जिस किसी आदमी पर खुदा का फ़ज़ल शुरू होता है। पहली बात जो वहां नज़र आती है यही है कि वो शख्स अपने आपको पहचानने लगा कि मैं बड़ा गुनाहगार, सख्त नातवां, निहायत मुहताज हूँ, नादान हूँ, निकम्मा हूँ। खुद-शनासी, खुदा शनासी की पहली मंज़िल है जिस क़द्र हम मार्फ़त एज़दी (खुदाई) में बढ़ते जाते हैं उसी क़द्र हम आपको ज़्यादा पहचानते जाते हैं। आखिरकार हम बड़े आरिफ़ होके यूँ कहते हैं यकीनन हम सबसे ज़्यादा खताकार, सबसे ज़्यादा नादान, सबसे ज़्यादा नातवां और बिल्कुल रहम के मुहताज हैं और खुदा तआला निहायत मेहरबान, निहायत पाक, बड़ा दाना, बड़ा हकीम, बड़ी कुदरत और ताक़त वाला है। उस ने यसूअ मसीह में हमारे लिए बड़ा ही रहम का दरवाज़ा खोल दिया और हम उस में दाखिल होके ज़रूर बच गए हैं।

कलाम-उल्लाह से जो मार्फत हमें हासिल होती है उस का खुलासा तो यही है जो मैंने ऊपर सुनाया लेकिन ये भेद जिस पर खुलता है वही उस का लुत्फ उठाता है और अपने को ऐसा और खुदा को वैसा दर्याफ्त करके अपनी रूह को बड़े चेन के मुकाम में पाता और खुदा में खुशी मनाता है।

इस बयान से मेरा ये मतलब है कि किताब-उल्लाह यानी बाइबल शरीफ जो सारे जहान की हिदायत के लिए खुदा ने नबियों से लिखवाई है उस में भी यही तरीका बरता गया है कि लोग वसीला खुद-शनासी के खुदा शनासी तक पहुंच जाते हैं और यह वही बात है कि **जब तक कोई अपने आपको बीमार ना जाने तबीब के पास नहीं आता।** ये सब लोग जो मज्हबों की बाबत झगड़ते फिरते हैं बेफ़ाइदा काम करते हैं। चाहिए कि सब तकरार और मुबाहिसे छोड़ के ज़रा अपनी तरफ़ मुतवज्जा हों और दर्याफ्त करें कि हम कौन हैं? और कैसे हैं? तो उन के सामने से बहुत सी मुश्किलात खुद-ब-खुद हल हो जाएंगी और वह अपने अंदरूनी अमराज़ से आगाह होके इलाज-ए-मुनासिब के जोयाँ (तलाश करने वाले) होंगे और उस वक़्त उन्हें मुआलिज नज़र आ जाएगा और वह उस के पास आके सेहत भी पाएँगे।

दुनिया में यही हाल हो रहा है कि हर तकरारी और बक् और झगड़ालू आदमी जब अपनी बकवास से चुप करके अपने गिरेबान में सर डालता है और अपनी तरफ़ देखता है। तब उसे मालूम होता है कि हर तरफ़ अंधेरा है सिर्फ़ कलाम-उल्लाह में रोशनी है। बल्कि कलाम-उल्लाह के किसी एक ही फ़िक्रह का जलाल उस की रूह को खुदा की तरफ़ खींच लाता है और ज़िंदगी के सोते तक पहुंचा देता है। किस को? उस को जो अपनी हालत पर मुतवज्जा होके और अपने आप को बीमार दर्याफ्त करके सेहत का तालिब होता है।

दफ़ाअ 2

माख़ज़ खयालात किताब हाजा के बयान में

इस किताब के माख़ज़ खयालात के बारे में चंद महीनों तक मैं फ़िक्रमंद रहा। अगरचे मैं ये जानता था कि बाइबल शरीफ़ के सिवा दुनिया में कोई किताब ऐसी नहीं है कि इन्सानी कैफ़ीयत का पूरा पूरा बयान उस में हो। लेकिन बाअज़ आदमी बाइबल शरीफ़ पर ईमान नहीं रखते और उस की दलीलों पर तवज्जा नहीं फ़रमाते। वो हमेशा

दुनियावी हकीमों के अक़ली खयालात की तरफ़ ताका करते हैं पस उन के लिए मुझे ऐसे खयालात की तलाश और तन्कीद में कुछ अरसे तक रहना पड़ा और जहां तक उन के ऐसे खयालात मैंने पाए और परखे उन में मेरी कुछ सेरी नहीं हुई और बहुत ही थोड़ा सा ज़खीरा तन्कीद के बाद मेरे हाथ में रह गया। अगर सिर्फ़ उसी को इस किताब में लिखता तो ये किताब **“मिरात-उल-इन्सान”** ना हो सकती थी क्योंकि वो बहुत ही थोड़ी बातें हैं।

पस मेरा वो एतिकादी खयाल इस वक़्त और भी ज़्यादा पुख्तगी को पहुंच गया कि इन्सान की कैफ़ीयत और उस की पूरी हालत का बयान सिर्फ़ उस का खालिक ही कर सकता है जो इन्सान से वाकिफ़ है ये काम भी आदमीयों से पूरा नहीं हो सकता है। अक़ली और इल्मी रोशनी से आदमी (अपने) आपको जैसा चाहे पहचान नहीं सकते। ईलाही आस्मानी इल्हामी रोशनी जब आदमीयों पर चमकती है तब वो (अपने) आपको पहचानते हैं कि हम कैसे हैं? पस मैं हकमाई खयालात की तरफ़ से बहुत हट गया और कलाम की तरफ़ मुतवज्जा हुआ कि उस की हिदायत के सामने किसी हकीम की राय तसल्ली बख़्श चीज़ नहीं है।

और इस वक़्त मैं नाज़रीन से ये भी कहता हूँ कि इन्सान की कैफ़ीयत और हालत का बयान जो बाइबल शरीफ़ में है तीन किस्म पर मुनक़सिम है :-

(1) इन्सान की इब्तिदाई हालत का बयान है कि वो क्योंकर और किस मतलब से पैदा किया गया?

(2) उस की इंतिहाई हालत का बयान है कि उस का अंजाम क्या कुछ होगा?

(3) इस की हालत-ए-मौजूदा का बयान है कि आदमी फ़िलहाल कैसे हैं? उन की हालत कैसी बिगड़ी हुई है और उन की इस्लाह क्योंकर हो सकती है?

पस इन तीन किस्मों के बयान में से पहली और दूसरी किस्म का बयान हुकमा (हकीम की जमा) से कुछ नहीं हो सकता क्योंकि ये ग़ैब की खबरें हैं जो अक़ल से नहीं खुल सकतीं। हाँ वो कुछ इमकानी तज्वीज़ें सुनाया करते हैं जिनका कुछ सबूत नहीं हुआ करता।

अलबत्ता तीसरी किस्म का बयान दुनिया के लोग कुछ कर सकते हैं और कुछ किया भी है। लेकिन ये भी पूरा पूरा बयान उन से नहीं हुआ। जहां तक उन की अक्ल दौड़ी वो कुछ बोले हैं और इस बयान के दूसरे हिस्से में इन्सान की इस्लाह क्योंकर हो सकती है? बड़े इख्तिलाफ़ उन लोगों में हैं और यह सब मज़हब जो दुनिया में जारी हैं। ये सब उन के इख्तिलाफ़ात की वजह से जारी हैं और इस्लाह की राह कुछ ना कुछ दिखाते हैं।

लेकिन इस मुक़ाम पर दो सवाल करने लाज़िम हैं

अव्वल

उन की बीमारी क्या है और तुम उस का ईलाज क्या बताते हो और उस ईलाज को क्या निस्बत इस बीमारी से है?

दोम

उनके इस ईलाज से जो तुम बताते हो किस-किस ने सेहत पाई है? उन के नाम भी पेश कीजिए?

ये दोनो सवाल दुनिया के सब झूटे मज़हबों को गिरा देते हैं और मसीही दीन की अज़मत दिखाते हैं। दुनियावी मज़ाहिब ना इन्सान की बीमारी का हाल पूरा पूरा सुनाते हैं ना उस का ईलाज मुनासिब दिखाते हैं ना सेहत-याफ़्तों के नमूने पेश कर सकते हैं। उन के अहल नाहक़ लड़ने फिरते हैं।

कलाम-उल्लाह जो बाइबल शरीफ़ है उस में इन्सान की निस्बत माज़ी और हाल व मुस्तक़बिल का पूरा बयान लिखा हुआ है और तसल्ली बख़श है और इस्लाह की राह ऐसी दिखलाता है जो कैफ़ीयत बयान शूदा या तशखीस शूदा के मुनासिब है और उस से हज़ार-हा हज़ार आदमी सेहत-याफ़ताह हैं और हम ने खुद इस राह से सेहत पाई है। पस अब फ़रमाईए कि ये कौनसी अक्ल का हुक़म है कि हम इस कलाम-उल्लाह की तरफ़ से जो ऐसा है चशमपोशी करके उन हुक़मा के उन चंद बे सर-ओ-पा खयालात ही की तरफ़ ताका करें और उन ही को आला दर्जे की दलीलें समझें उन में क्या उलवेयत (बुलंदी) घुस रही है वो तो वहम से हैं।

हाँ ये मैं कहता हूँ कि जो कुछ उन लोगों ने दुरुस्त तौर से कहा है। हम बह शुक्र इसे कुबूल करेंगे और तकमील व तरक्की के लिए कलाम-उल्लाह की तरफ़ मुतवज्जा होंगे और कलाम में इन्सान की हालत मौजूदा का जो ज़िक्र है उस पर गौर करेंगे। कि फ़िलवाक़े इन्सान ऐसा ही है या नहीं। अगर इन्सान ऐसा नहीं है तो ख़ैर जाने दो कलाम

को ना मानो और अगर वो ऐसा ही है तो अयाँ राचा बयाँ (फ मिस्ल, जाहिरा और अलानिया चीज़ को बयान करने की ज़रूरत नहीं) अपनी चशम दीदावर तजुर्बे की गवाही से इस बयान को कुबूल कर लो और इस्लाह की फ़िक्र करो और अगर अपनी इस्लाह आप कर सकते हो तो कर लो और जो उसी बद हालत में मरना मंज़ूर है तो इख्तियार बाक़ी है और अगर इस्लाह चाहते हो और खुद नहीं कर सकते तो उस मुआलिज के पास चले आओ जो बाइबल में जाहिर हुआ है और उस की दवा भी खाओ तब देखोगे कि क्या होगा।

दफ़ाअ 3

ईमान के बयान में

इन्सान की इब्तिदा और इन्तिहा की बाबत जो बयानात बाइबल में हैं वो सब ईमान से माने जाते हैं आप लोगों में ईमान है या नहीं?

ईमान नाम है उस यकीन का जो उन नादीदा और मोअतबर अशखास से शनीदह बातों की निस्बत होता है जो खुदा से इलाका रखती हैं। इसलिए कि वहां तक अकली तहकीकात को रसाई नहीं होती।

हम समझते हैं कि सब आदमीयों को ईमान की ज़रूरत है और सहीह ईमान जो लायक भरोसा के है, वो सिर्फ बाइबल शरीफ़ में बयान हुआ है। बाअज़ आदमी ईमानी ज़रूरत के तो काइल हैं, लेकिन बाइबल के बाहर कुछ और तरह के ईमान रखते हैं जिनके वो खूगर (आदी) हो गए हैं। उन्होंने ने ईमानों में मुकाबला करके सहीह ईमान की तलाश कभी नहीं की। वो लकीर के फ़कीर हैं और तहकीकात के नाम से जलते हैं और अगर बमजबूरी अकल कुछ तहकीक करते भी हैं तो उस जानिब को झुकते हैं जिसमें उन की गरज़ कायम रहे। वो हक के तालिब नहीं हैं कि रास्ती की तरफ़ झुकें। बाअज़ ऐसे हैं जो कुछ भी ईमान नहीं रखते सब ईमानों से बेज़ार हैं क्योंकि उन्होंने ने बाअज़ ईमानों को झूटा पाया है। इसलिए सब झूटे ईमानों में सच्चे ईमान को भी मिला के कहते हैं कि सब ईमान ग़लत हैं जो कुछ उनका दिल चाहता वो करते हैं।

हमारा एतिक़ाद ये है कि अगर इन्सान में बाइबल वाला ईमान ना हो और कोई ईमान हो या ना हो वो बेईमान है और उस की रूह हलाक हो जाएगी।

इस रिसाला के नाज़रीन बाईमान किस्म अक्वल और किस्म दोम का बयान भी किस्म सोम के साथ ज़रूर मानते हैं। लेकिन वो जो बा-ईमान नहीं हैं मैं उन से कहता

हूँ कि आप लोग किस्म सोम के बयान में जरूर गौर कीजिए और सोचिए कि आप इसी किस्म के आदमी हैं या नहीं। इतनी खुद-शनासी भी मुफीद होगी और ईमान भी इस से पैदा हो जाएगा फिर आप लोग बहुत कुछ खुदा से पा सकते हैं।

तीनों किस्म के बयान इस किताब में रुले मिले आते हैं नाज़रीन को खुद समझना होगा कि ये किस किस्म का बयान है?

और यह भी याद रहे कि पहली व दूसरी किस्म का बयान अगरचे ईमान से माना जाता है और तीसरी किस्म का बयान मुआयना फ़िक्री से। तो भी हमारी हालत-ए-मौजूदा का मुआयना इब्तिदाई व इंतहाई बयानात के दर्मियान होके एक खास निस्बत व इलाका हम में और उन दोनों बयानों में ज़ाहिर करता है। अगर संजीदगी से बगौर कुछ देख सकते हो तो देखो और यकीन करो कि बाइबल अपने बयान में बरहक़ है।

दफ़ाअ 4

खुदा तआला जल्लेशानहु ﷻ के बयान में

जहां तक मौजूदात खारजिया की कैफ़ीयत आदमीयों को मालूम हुई है यही दर्याफ़्त हुआ है कि हर खारिजी मौजूद काइम-बिल-ग़ैर है। फिर वो ग़ैर भी काइम-बिल-ग़ैर है और हो नहीं सकता कि ये तमाम कायम-बिल-ग़ैर का सिलसिला भला किसी इल्लत “कायम-बिल-ज़ात” “قائمبالذات” के कायम और मौजूद हो सके। इल्लत-उल-अलल (علةالعلل) कायम-बिल-ज़ात का होना अक्लन जरूर है। इसी का नाम अहले इल्म ने “वाजिब-उल-वजूद” “واجبالوجود” रखा है और यह नाम एक माहीयत (असलियत) की वाजिब हस्ती का है ना किसी खास शख्स का। उस हस्ती का हम-सर कोई नहीं हो सकता, इसलिए उस के हम-सर का नाम उन्होंने ने “मुम्तना-उल-वजूद” “ممتنعالوجود” रखा है और तमाम जहान की इश्याय मखलूका (खल्कत) को उन्होंने ने “मुम्किन-उल-वजूद” “ممکنالوجود” कहा कि उन की हस्ती का होना या ना होना अम्र जरूरी नहीं है बल्कि वाजिब-उल-वजूद सानेअ (صانع خالق) की मर्ज़ी पर मौकूफ़ है और हर चीज़ ऐसी ही है।

दुनिया के शुरू से सब कौमों में ये ख्याल बराबर चला आता है कि एक **हस्ती** है जो अज़ खुद अज़ल से अबद तक मौजूद है। उसी से सब हस्तियाँ मौजूद हुई हैं। हर ज़बान में उस हस्ती के लिए दो-चार लफ़ज़ निहायत उम्दा पाए जाते हैं जिन्हें उस ज़बान के अहल (मानने वालो) ने अपने मुहावरात में बह तकरीम (ताज़ीमन) इस्तिमाल किया है और अपनी रूहों के लिए उन के मफ़हूम को जाए पनाह दिखाया है मसलन इब्रानी में लफ़ज़ **“इलोहीम”** (الوہیم) है बमाअनी “माबूदान” सीगा जमाअ का है और उस माहीयत (असलियत) वाहिदा की निस्बत इस्तिमाल होता है। और लफ़ज़ **“यहोवाह”** (یہوواہ) बमाअनी **“हस्ती कायम-बिल-ज़ात”** उस का इस्म-ए-आज़म है। ऐसा ही लफ़ज़ **“खुदा”** “خدا” है असल में **“खुदा आ”** (خودا) था कि इस्म-ए-फाइल तरकीबी है बमाअनी **“खुदा आइंदा कि अज़ खुद मौजूद अस्त।”** “خودآیندہ کہاز خودموجود است”

इस हस्ती का सबूत हमेशा इस्तिदलाल एनी से होता है। जिसमें माअलूल (इस्तिलाह मंतिक में नतीजा) से इल्लत का सुराग लगाते हैं और इस तरह उस की सिफ़ात का सबूत होता है और दलाईल एनिया इस मक़सद पर जहान में बक़सत मौजूद हैं क्योंकि ये बेशुमार माअलुलात इस किस्म के दलाईल पैदा करते हैं। लेकिन इन दलाईल से सिर्फ़ इतना ही साबित होता है कि कोई हस्ती कायम-बिल-ज़ात ज़रूर कहीं मौजूद है, जिसका नज़ीर मादूम है और जिसमें हिकमत, कुदरत और इरादा है। क्योंकि हर माअलूल में ये तीन सिफ़तें मुस्तअमल नज़र आती हैं। लेकिन उस हस्ती का इल्म बालकहना (الکھنہ) (पुकारने या निदा देने का तरीक़) किसी इन्सान और फ़रिशते के भी ज़हन में नहीं समा सकता।

اے برتر از خیال و قیاس و گمان و وہم۔ وز ہر چہ گفتہ اند شنیدیم و خواندہ ایم۔

ऐ बरतर अज़ ख्याल व क़यास व गुमान वहम। विज़ हरचे गुफ़ता
अंद शनीद यम व खवान्दा ऐम।

अगर उसकी ज़ात व सिफ़ात का इल्म बालकहना कमा हो हो किसी मख्लूक के ज़हन में समा सकता तो वो खुदा ना होता। मख्लूकात के अहाता फ़िक्री में खालिक का इल्म महदूद हो जाता। वो जो कहते हैं कि पहले हमें समझा दो कि खुदा क्या है? तब हम ईमान लाएंगे। उनका मक़सद ये है कि पहले हम खुदा के हम-सर या इस से बड़े हो जाएं, तब उसे मानेंगे। सोचो कि ये हमाक़त है कि नहीं? कि वो लोग लाइन्तहा को अपने ज़हन की नहत्ता डिबिया में बंद करना चाहते हैं। क्या ऐसा होना कभी मुम्किन है?

खुदा ने आपको बज़रीये हमारी अक़ल के और बज़रीये कुतुब ईल्हामीया के हमारे ज़रूफ़ के अंदाज़े पर हमारे सामने ज़ाहिर किया है। और जिस क़द्र उस के फ़ज़ल से हमारे दिली और ख़्याली तरफ़ फ़राख़ होते जाते हैं, इस क़द्र ज़्यादा से ज़्यादा हम उसे पहचानते जाते हैं और मालूम नहीं कि कहाँ तक तरक्की हमारी होगी?

बड़ी बहस जो अहले-दुनिया खुदा की बाबत हमसे करते हैं वो वहदत और तस्लीस के बारे में है। जिसका मुफ़स्सिल बयान इस मुख्तसर रिसाले में नहीं हो सकता। इंशा अल्लाह आइन्दा किसी किताब में हो जाएगा उस वक़्त चंद फ़िक्रे इजमालन (इख़्तिसार के साथ) यहां लिखना काफ़ी है।

अक़ल से जहां तक खुदा मालूम हो सकता है आदमी जानते हैं और जान सकते हैं लेकिन ज़्यादा तरक्की इस बारे में अक़ल से नहीं हो सकती जब तक कि वो खुद ना बतलाए कि मैं क्या हूँ? और यह बात साबित हो चुकी है कि यकीनन उस ने दुनिया में पैग़म्बर भेजे और इल्हाम दिया जो बाइबल में है। पस हम अक़ली हिदायत से कुछ ज़्यादा इस बारे में उस के कलाम से सीखते हैं और ज़्यादा रोशनी और तसल्ली हासिल करते हैं। क्योंकि जो कुछ कलाम सिखाता है वो अक़ल के खिलाफ़ नहीं है। या अक़ल के मुनासिब है या अक़ल से बुलंद है। और यह बात हमें ख़ूब मालूम है कि ज़रूर खुदा तआला हमारे फ़हम से बुलंद व बाला है।

खुदा वाहिद है। ये बात बरहक़ है और हम ईमान से कहते हैं लाइलाहा-इल्ललाह (لا إله إلا الله) लेकिन ये कहना कि खुदा वाहिद है इस का मतलब क्या है? गौरतलब बात है। खुदा नाम है एक माहीयत (असलियत) का जैसे इन्सानियत, हैवानियत, मिलिकियत वगैरा माहीयतें हैं। उल्हियत भी एक माहीयत (असलियत) है और सब माहीयतें काइम-बिल-गैर और मुक्कब हैं। वो माहीयत (असलियत) गैर मुक्कब और कायम-बिल-ज़ात है। मुम्ताज़ बेनज़ीर और अज़ली व अबदी सब माहितियों की मूजिद और सब के ऊपर हाकिम है।

लेकिन उस की वहदत कैसी है? अक़ल से इस का बयान नहीं हो सकता। क्योंकि वहदत फर्दी और नोई और जिन्सी को वहां दखल नहीं, वर्ना खुदाई की शान नहीं रहती है और ना वहदत-उल-वजूदी है जो मुगाइरत (अजनबीयत) को मादूम करती और अपने काइल को बड़ा मुशरिक् बल्कि मुन्किर-ए-खुदा बनाती है। यही कहना पड़ता है कि उस की वहदत कुछ और ही किस्म की है जो फ़हम से बुलंद व बाला है।

कलाम से साबित हुआ कि इस की माहीयत (असलियत) वाहिदा है और इस में तीन उक़नूम (اقنوم) हैं यानी तीन शख्स "अब" (آب) "इब्न" (ابن) "रूह-उल-कुदुस" (روح)

उन के नाम हैं। जो माहीयत (असलियत) “अब तआला” “اَبَّ تَعَالَى” की है वही माहीयत (असलियत) “इब्न” (اِبْن) और “रूह-उल-कुदुस” (رُوحِ الْقُدُس) की है क्योंकि उनका जोहर (جوهر) ज़ात एक है। सिफ़ात भी एक हैं। हिक्मत, कुदरत और इरादा एक है। सिर्फ़ तअदुद शख़्सी है, वर्ना हर तरह से एक हैं और यही वाहिद खुदा है। खुदा ने अपनी ज़ात का बयान अपने कलाम में यूं ज़ाहिर किया है और हम उस के फ़ज़ल से समझे हैं कि ये हक़ है। ईसी का मानना खुदा का मानना और इस का इन्कार खुदा का इन्कार है। ये ख़याल खुदा ने ज़ाहिर किया पैग़म्बरों से पहुंचा और बाइबल शरीफ़ में बतफ़रील बयान हुआ और मोमिनीन के दिलों और ख़यालों में ज़िंदगी और रोशनी बख़्श नज़र आया और फ़िक्र से दर्याफ़्त हुआ कि खुदा इस अक़ीदे का हामी है। बल्कि सारी पाक रुहानी बरकतें और मार्फ़त-ए-ईलाही के इसरार उन्हीं आदमीयों के हिस्से में हैं जो इस वाहिद-फ़ील-तस्लीस (واحدني التثليث) खुदा को मानते हैं। तुम खुद सोचो कि तमाम दुनिया के अहले मज़ाहिब में मार्फ़त इलाही और खुदा शनासी के बारे में कौनसा फ़िक्र बढा हुआ है? सिर्फ़ ईसाई लोग। इस का सबब यही है कि हकीकी और ज़िंदा खुदा अभी बाइबल वाला खुदा है जो उनकी रूहों में बवसीला इस ईमान के मोअस्सर है और नूरबख़्श है। और अहले मज़ाहिब जो तारीकी में रहते हैं इस का सबब यही है कि इन के फ़र्ज़ी और वहमी या अक़ली खुदा जो फ़िल-हकीकत नाचीज़ शैय हैं कुछ रोशनी और ज़िंदगी उन में दाख़िल नहीं कर सकते। जब सब बुतलान दफ़ाअ होने का वक़्त आएगा ये सब लोग बे खुदा खड़े रह जाएंगे और हकीकी ज़िंदा खुदा अहले इंजील के साथ सबको मालूम हो जाएगा।

दफ़ाअ 5

लफ़ज़ इन्सान के बयान में

लफ़ज़ “इन्सान” (انسان) की असल “इन्सी” (إنسى) है। लफ़ज़ “इंसी” (إنسى) पर ज़्यादती मअनी की गरज़ से अलिफ़ नून (الفنون) ज़्यादा किया गया जैसे रहमान में कस्रत रहम दिखाने के लिए अलिफ़ नून (الفنون) ज़्यादा किया गया है। पस “इन्सी” (إنسى) से “इंस्यान” (انسيان) बिना कस्रत इस्तिमाल से याए तहतानी (يأت تحتاني) वो हर्फ़ जिसके नीचे नुक़ते हों) गिर गई (यानी ख़त्म कर दी गई) इन्सान रह गया। लफ़ज़ “इन्सी” (إنسى) ज़िद है “वहशी” की। “इन्सान” के मअनी हैं “वो शख़्स जो बड़े मुहब्बत व उन्स वाला है।” मुज़क्कर, मुअन्नस, वाहिद व जमा सब इस में एकसाँ हैं। इन्सान की हालत तमदुनी का बयान इस लफ़ज़ में ख़ूब है। अब आप सोचें कि अगर हम केंह तोज़ और

खुद गरज़ और बे मुहब्बत और वहशी-मिज़ाज हों तो हम इस्म-बा-मुसम्मा (اسم با مستی) (जैसा नाम वैसे गुण) इन्सान हैं या नहीं और ऐसे लोगों ने कहाँ तक अपनी वज़ाअ से इन्हिराफ़ (ना-फ़र्मांनी) किया है?

दफ़ाअ 6

लफ़ज़ आदम के ज़िक्र में

“आदम” “آدم” नाम है उस शख्स का जो पहला इन्सान और सब इन्सानों का बाप था। इस लफ़ज़ के माअनी हैं “मिट्टी या सुर्ख मिट्टी” क्योंकि वो शख्स सुर्ख मिट्टी से बनाया गया था। अगरचे उस की बनावट में और सब मख्लूक़ात अर्ज़ी की साख़त में बड़ा इम्तियाज़ है कि वो अजीब तौर से बना है और इस में ज़िंदगी का दम खुदा ने फूँका है। और वो सब अर्ज़ी मख्लूक़ात पर हाकिम है बल्कि तमाम कारखाना-ए-ज़मीन इसी के लिए तैयार हुआ है। तो भी उस का नाम “आदम” है यानी “मिट्टी।” उस लफ़ज़ में उस के जुज़ असफ़ली (جُزْءِ اسْفَلِي) का बयान होता है कि वो याद रखे कि मैं आदम हूँ यानी मिट्टी। पस हम सबको चाहिए कि इस लफ़ज़ के मअनी याद रखें और खाकसार रहें। मगरूरी की सर-बुलंदी को दिल में जगह ना दें कि हम खाक हैं और खाक में जाएंगे।

خاک شو پیش از آن که خاک شوی

“खाक शोपेश अज़ां कि खाक शिवी”

दफ़ाअ 7

लफ़ज़ हव्वा का बयान

इस लफ़ज़ के मअनी हैं “ज़िंदगी” ये नाम आदम ने अपनी बीबी को दिया था क्योंकि वो सब ज़िंदों की माँ है। (पैदाइश 3:20) उस औरत की पैदाइश नर में से हुई थी। इसी लिए नारी कहलाती है कि नर में से निकली। **खुदा ने आदम को एक ही औरत दी थी। इस से खुदा का क़ानून मालूम हुआ कि हर मर्द को एक ही औरत चाहिए।** औरतों की कसत का दस्तूर आदम के पोते लमक बिन काइन ने सबसे पहले दुनिया में निकाला है। अदा और ज़िला उस की दो बीबीयां थीं। (पैदाइश 4:19) ये आदमी खूनी था और इस का बाप काइन भी खूनी था। अब जो कोई एक से ज़्यादा औरतें जमा करता है वो इस शख्स की सुन्नत पर चलता है ख़वाह वो नबी हो या ग़ैर नबी। ये सच्च है कि पुराने अहदनामे के इतिज़ाम में ये दस्तूर कुछ मअयूब (एब वाला) ना था और खुदा तआला ने भी इस मुआमला में कुछ तरह (दरगुज़र) सी दी थी। किसी हिक्मत के सबब से लेकिन जब पाकीज़गी का क़माल ज़ाहिर हुआ तो सब कुछ साफ़ रोशन हुआ है। खुदा ने एक जोड़ा आदम और हव्वा का शुरू में पैदा किया और अब देखो कि ये ज़मीं इस जोड़े के बच्चों से किस क़द्र मामूर है।

दफ़ाअ 8

वहदत अबवी का बयान

सब आदमी बनी-आदम कहलाते हैं। “बनी” असल में “बनें” था। नून (ن) जमा का बाज़ाफ़त गिर गया यानी आदम के फ़र्ज़द। ये आवाज़ दुनिया के शुरू से चली आती है कि सब आदम के बच्चे हैं कोई नहीं कह सकता कि ये ख़याल थोड़े दिनों से मशहूर हुआ है।

हमने सुना है कि आदम एक ख़ास शख्स था और उस की एक ख़ास ज़ौजा (बीबी) थी और उन दोनों को ख़ालिक ने कुछ और ही क़ायदा से पैदा किया था। इन से ये सब आदमी पैदा हुए हैं और इसी आदम की तरफ़ मंसूब होके “बनी-आदम” कहलाते हैं। अगर ये ख़याल दुरुस्त है तो “वहदत अबवी” के सबब से हम सब एक ही घराने के बच्चे हैं।

बाअज़ अशखास ने “वहदत अबवी” के बारे में इख़्तिलाफ़ ज़ाहिर किया है। पस उनके गुमान में कई एक आदम होंगे लेकिन उन की दलीलें जो इस बारे में हैं तसल्ली बख़श नहीं हैं। उन्हें अक़ल-ए-सलीम कुबूल नहीं करती। “वहदत अबवी” का ख़याल बहुत सहीह मालूम होता है औरा इल्हामी तवारीख़ में है और जहांगीर है। दिलकश भी है और इस के सबूत की ताईद में हमारे पास जेल में खयालात मौजूद हैं। इन पर भी गौर व फ़िक्र करो।

1) सब दुनिया के आदमीयों में बदनी साख़त यकसाँ है।

2) हर दर्जे के आदमीयों में अख़लाकी व रूही कैफ़ीयत के उसूल मुसावी हैं। और इस से इत्तिहाद नोई ज़ाहिर होके मंबा की वहदत दिखाता है।

3) आदमीयों में कुछ तफ़रीकें भी हैं, लेकिन ऐसी तफ़रीकें नहीं हैं जैसी मुख्तलिफ़ अन्वा के जानवरों की आमेज़िश से उन के फलों में होती हैं। आदमीयों में जो तफ़रीकें हैं वो मुख्तलिफ़ ममालिक की आब-ओ-हवा और मुख्तलिफ़ अत्वार मईशत और तासीरात मुल्किया के सबब से हैं। चुनान्चे अफ़्रीका, एशिया और यूरोप के बाशिंदों में कुछ फ़र्क़ सा नज़र आता है मगर इंसानियत के ज़ाती उसूल बराबर हैं।

4) इल्म तरकीब अर्ज़ी से साबित हो गया है कि तरकीबी नस्लें आगे नहीं बढ़ें, सिर्फ़ फ़ित्री नस्लें आगे चलती हैं। फिर हम ये भी देखते हैं कि मुख्तलिफ़ ममालिक के आदमी आपस में शादी ब्याह करते हैं और उनकी नसलें बराबर दुनिया में चलती हैं। इस से वहदत अबवी ज़ाहिर है।

5) कुल बनी-आदम में नोई मुवानिसत (نوعی موانست) है और यह सरचश्मा की वहदत के सबब से है और क्रियास भी इसी तरह के निकलते चले आते हैं। हमारे दिलों को मुस्तइद करते हैं कि हम बमूजब हिदायत बाइबल शरीफ़ के आदमीयों में वहदत अबवी के काइल हों और कहें कि हम सब आदम के बच्चे हैं। किसी का बावा-आदम निराला नहीं है और यह जुदाइयाँ जो बातिल ताअलीमात ने आदमीयों में डाली हैं नादानी और मगरूरी के सबब से हैं और बहुत मुज़िर हैं। इंजील शरीफ़ इन जुदाइयों को दूर करती है और सब आदमीयों में एक ही लहू साबित करती है। अब वो सब लोग जिन्हें दुनिया के ख़ुद-पसंद लोगों ने ज़लील ठहरा के अलग खड़ा कर रखा है चाहीए कि खुशी का नारा मार के मसीह यसूअ ख़ुदावन्द की जमाअत में चले आएँ कि वही है जो सब का हक़ देता है।

दफ़ाअ 9

इंसान एक खास वक़्त से दुनिया में है

आदम किसी खास वक़्त में मौजूद हुआ था वो हमेशा से ना था। लेकिन वो कब पैदा हुआ था? उसे कितने बरस का अरसा गुजरा? इस के सन साल का क़तई सबूत हमारे पास नहीं है। एहतिमाली सबूत है ना क़तई। और वह ये है कि अहदे-अतीक़ के इब्रानी नुस्खों के नसब नामों पर फ़िक्र करके हमारे बुजुर्ग आलिमों ने यूँ दर्याफ़्त किया है कि आदम हमारे खुदावन्द यूसूअ मसीह से (4004) बरस पहले दुनिया में पैदा हुआ था और इस तादाद के साथ इस वक़्त (1889) मसीही बरस मिलाने से (5893) बरस आदम को होते हैं। उमूमन कलीसिया में ये तादाद मुसल्लम है बल्कि कलाम-उल्लाह के हाशिये पर भी मर्कूम है। क्योंकि पुराने नसब नामों के हिसाब से भी तादाद इतनी है।

सेप्टुवाजिन्त (Septuagint) और तवारीख यूसीफ़स (Josephus) से जहां हदीसों की भी रिआयत है। आदम से मसीह तक (5500) बरस का अरसा निकलता है। इसलिए हम बरसों की तादाद क़तअन मुईन नहीं कर सकते और ना किसी तादाद पर-ज़ोर देते हैं क्योंकि हमारा कोई ईमानी मसअला किसी तादाद पर मौकूफ़ नहीं है। हो सकता है कि वही हिसाब दुरुस्त हो जो इब्रानी नुस्खों से आता है।

हाँ इस बात का सबूत हम पर वाजिब है कि जहां की पैदाइश में आदम खुदा तआला की आखिरी मख़लूक़ था और कि छटे दिन में आदम और हवा की पैदाइश हुई है। उनकी पैदाइश के बाद किसी और चीज़ की पैदाइश का ज़िक्र नहीं है। यहां से दो बातें निकलती हैं।

अव्वल आंका वो जोड़ा आदम और हव्वा का तमाम पैदाइश में आखिरी मख़लूक़ था।

दोम उनकी सारी जिस्मानी पैदाइश का मक़सद वही जोड़ा था जिस पर ख़ालिक़ ने पैदाइश का काम तमाम कर दिया था।

वो जो कहते हैं कि आदमी हमेशा से यूँ हैं, बराबर चले आते हैं गलती पर हैं क्योंकि उनके लिए इब्तिदा जरूर साबित है।

इल्म तरकीब अर्जी साबित करता है कि इन्सान का वजूद एक खास वक़्त में नज़र आया है। वो लाइन्तहा अरसे से नहीं है और जब कि इल्मी तौर से ये बात मालूम हो गई तो फिर कलाम-उल्लाह पर ईमान लाने में क्या हुज्जत है?

हर इब्तिदा के लिए इतिहा है और इंसान के लिए इब्तिदा साबित है पस इन्सान के लिए इतिहा भी आएगी। और चूँकि इन्सान की रूह गैर-फ़ानी मख़लूक है, इसलिए उस की इतिहा भी है कि वो दूसरी हालत में जाये। इसी का नाम आखिरत है। उस वक़्त विलादत का कायदा बंद हो जाएगा और जहान के काम तमाम हो जाएंगे। कुदरत ईलाही कुछ और ही रंग दिखाएगी। अगर मर्जी होतो नबियों की बात मान लो कि आखिरत आने वाली है वर्ना इन्सान के लिए इल्मी तौर से अज़लियत साबित करो और इल्म तरकीब अर्जी को जो इन्सान के लिए इब्तिदा साबित करता है खाक में दबा दो जहां वो पहले दबा था या कहो कि हर इब्तिदा के लिए इतिहा साबित नहीं है और अपनी तमीज़ को आप ही जवाब दो।

दफ़ाअ 10

आदम क्योंकर पैदा हो गया?

दुनिया के सब आदमी कायदा मामूली के मुवाफ़िक़ वालदैन से पैदा होते हैं और यह उन के लिए फ़ित्री कायदा है। चुनान्चे सब हैवानात के लिए भी क़वाइद फ़ित्रयह मुकर्रर हैं। अगर यही कायदा शुरू से है तो पहले जोड़े के वालदैन कौन थे? और उन में से भी हर फ़र्द के लिए एक जोड़ा चाहिए। दूर तो किसी तरह से हो हि नहीं सकता कि उस जोड़े का वजूद हम पर मौकूफ़ हो और हमारा वजूद उस पर।

और तसलसुल भी बातिल है और यह ख़ूब साबित है कि इन्सान सबसे पीछे पैदा हुआ है। पस वो पहला जोड़ा यकीनन कायदा माअलूमा के ख़िलाफ़ किसी और कायदे से पैदा हुआ होगा और यह कायदा माअमूली उस की पैदाइश के बाद जारी हुआ है।

अब हुज्जत इस में है कि वो जोड़ा किस कायदे से और क्योंकर पैदा हुआ था? अगर कोई आदमी अपनी अक्ल से कहे कि इस तरह से या उस तरह से हुआ होगा तो

ये सब उस के बयान अक्ली इम्कान होंगे या कुव्वत-ए-वाहिमा के तुहमात होंगे जिनसे किसी अम्र का सबूत नहीं हुआ करता है।

और कोई नज़ीर भी दुनिया की तवारीख में नहीं है कि कोई इन्सान कभी इत्तिफ़ाक़ से या तरकीब बहायमी वगैरा से पैदा होके आदमीयों के झुंड में आ मिला हो जिस पर क्रियास करके उस पहले जोड़े को भी ऐसा ही समझें। हालाँकि इस वक़्त जो इन्सानी जोड़े दुनिया में मौजूद हैं उस पर गौर करने से उनकी बनावट में अजीब हिक्मत और इरादा सानेअ (पैदा करने का इरादा) का पाया जाता है। और ये ज़ाहिर होता है कि पहला जोड़ा जो इन सब जोड़ों का साँचा था और कुछ और ही कायदे से बना था। वो कायदा अपने वक़्त पर ज़ाहिर होके पोशीदा हो गया है और यह माअमूली कायदा जारी कर गया है। चुनान्चे तमाम दुनियावी फ़ित्री क़वाइद मुकर्ररा की जड़ों में कुछ और ही कायदे सानेअ के पास बचशम गौर नज़र आते हैं जो आदमीयों की समझ से बाहर हैं और वह अपने वक़्तों पर ज़ाहिर होते हैं। वो आम नहीं हैं कि हर वक़्त नज़र आया करें। उन्हीं क़वाइद मख़फ़ीह से ब-वक़्त मुनासिब मोअजज़ात भी होते हैं जो सच्चे मोअजज़े कहलाते हैं।

कोताहअंदेश लोग जो ख़ुदा की माफ़त से बेनसीब हैं उन्हें चंद फ़ित्रे मालूमा क़वाइद में ख़ुदा की सारी कुव्वत को मुन्हसिर समझ के गुमराही के गिर्दाब में नाहक़ डुबकों डुबकों कर रहे हैं।

बेदार मग़ज़ आदमी गहिरी निगाह से देखता है कि क्या है? बाइबल शरीफ़ की सदहा बातें इसी दुनिया में बरहक़ साबित हो चुकीं हैं। फिर क्या वजह है कि उस जोड़े की पैदाइश का ज़िक्र जैसे कि उस में लिखा है माना ना जाये? हालाँकि अक्ल-ए-सलीम साफ़ कहती है कि ये बयान ख़ुदा की शान के मुनासिब है।

(पैदाइश 2:7) में लिखा है कि ख़ुदा ने आदम को ख़ाक से बनाया। ये उस के जिस्मी माद्दा का ज़िक्र है और इस बात का बयान है कि वो हैवानी तरकीब से नहीं निकला बल्कि ख़ुदा ने ख़ाक का एक पुतला बनाया और उस में ख़ुदा ने ज़िंदगी का दम फूँका। ये उस के दूसरे जुज़ का ज़िक्र है जिसको “नफ़स-ए-नातिका” कहते हैं जो आलम-ए-बाला से उस में डाला गया। (पैदाइश 1:27) में मर्कूम है कि ख़ुदा ने उसे अपनी सूरत पर बनाया। **“सूरत” से मुराद ये है कि इन्सान की ज़ाहिरी और बातिनी रुहानी व अख़लाकी सूरत ऐसी बनाई कि ख़ुदा के साथ एक ख़ास निस्बत और मुशाबहत और इलाक़ा उस का हुआ।**

मुशब्बह (مُشَبَّه) और मुशब्बह ब (مُشَبَّه ب) में मुवाफिकत कुल्ली तो कभी नहीं होती है वर्ना दुई ना होगी लेकिन किसी कद्र मुवाफिकत और मुनासबत बाअज़ उमूर में हुआ करती है। इन्सान में और खुदा में पूरी दुई है। लेकिन वो ऐसी सूरत में पैदा हुआ है कि सिफात ईलाहीय का गो ना मज़हर और तजल्लियात का महबत और ईलाही मर्ज़ी व अहकाम की बजा आवरी के लायक वज़ा में है और आज़ाद भी है ना मजबूर और अक़ल कुबूल करती है कि ज़रूर इन्सान ऐसी वज़ा में है। अगरचे वो सूरत उस की बाद गुनाह के बिगड़ गई है तो भी शेअर :-

از نقش ونگار درودیوار شکسته. اثار پدیداست صنا دیدعجم را.

अज़नक़श व निगार दरोदीवार शिकस्ता आसार पदीद अस्त सना दीद अज्म रा

और इस से ये भी साबित है कि वो इत्तिफ़ाकी मख़लूक नहीं बल्कि इरादी है। आदम का जिस्म ख़ाक से बना और रूह अल्लाह ने फूँकी लेकिन उस की जौजा (बीवी) को उस की पसली से निकाला और उस की रूह का ज़िक्र नहीं है कि कहाँ से आई? क्रियास चाहता है कि जैसे जिस्म से जिस्म निकला वैसे रूह से रूह पैदा की। इसी लिए वो मर्द की दबैल और उस से कमज़ोर है।

अव्वल- खुदा ने ज़मीन व अस्मान को हुक्म से पैदा कर दिया और वह बे माद्दा सिर्फ हुक्म से मौजूद हो गए **सानियन-** उस ने ज़मीन को हुक्म देकर इस से हैवानात और नबातात निकलवाये। **सालसन-** आदम को खुद पैदा किया। **राबिअन-** आदम में से हव्वा को निकाला। **खामसुन-** तौवलीद का कायदा जारी किया। पस पहला आदमी काइन पैदा हुआ जो मामूली कायदे से है।

पहले चार काएदे अमल में आए। तब पांचवां कायदा जारी हुआ और वह कुव्वत जिससे ये कुछ हुआ खुदा में अज़ल से मख़फ़ी (छिपी) थी और अब भी उस में मख़फ़ी (छिपी) और मौजूद है। कोई नहीं कह सकता कि तू क्या करता है? या तूने ऐसा क्यों किया? किस का मुँह है जो ऐसा बोले? अलबत्ता काफिर आदमी जो चाहता है सो बकता है और अपना नुक़सान करता है। लेकिन खुदा के आरिफ़ लोग जानते हैं कि उस के सारे काम रास्ती और इन्साफ़ और हिक्मत और मुहब्बत के हैं। कोई समझे या ना समझे हाँ जिन्हों ने उस की किताब बाइबल शरीफ़ को उस से पढ़ा है वो ग़ैरों की निस्बत ज़्यादा समझते और तसल्ली से भरे हैं।

दफ़ाअ 11

हम सब क्योंकर पैदा होते हैं?

इसी कायदे से जो पहले जोड़े की पैदाइश के बाद जारी हुआ है सब आदमी पैदा होते हैं। (पैदाइश 1:28) खुदा ने इस जोड़े को पैदा करके बरकत दी और बरकत में चार लफ़ज़ फ़रमाए थे:-

“फलो और बढ़ो और ज़मीन को माअमूर व महकूम करो....”

(पैदाइश 1:28) लफ़ज़ **“फलो”** में खुदा ने हम सबको उस जोड़े में याद किया था और लफ़ज़ **“बढ़ो”** में सिलसिला तौवलीद के इजरा का ज़िक्र किया था और लफ़ज़ **“माअमूर”** में खुदा की निगाह इस बड़ी आबादी पर थी जो दुनिया में अब नज़र आती है और लफ़ज़ **“महकूम”** में वो इख्तयारात और तसर्रुफ़ात (कब्ज़े) याद किए गए थे। जो अब दुनिया में आदमीयों से हो रहे हैं और बढ़ते जाते हैं और जिन की तक्मील का वक़्त चला आता है।

इन अल्फ़ाज़ पर और दुनिया की तवारीख और हालत पर गौर कीजिए कि वो बरकत जो खुदा ने उस जोड़े को दी थी क्योंकर बतदरीज पूरी होती और तरक्की करती चली आई है? और उन अल्फ़ाज़े बरकत में कुछ सदाकत नज़र आती है या नहीं? और कि ये बरकत का बयान और यह किताब पैदाइश उस वक़्त की है या नहीं कि जिस वक़्त दुनिया में अंधेरा था, ना इस क़द्र आबादी थी और ना ऐसी हिक्मत थी। लेकिन एक वक़्त आया कि ये मज़मून सच्च निकला तो ऊपर का बयान भी जिसका ये मज़मून एक हिस्सा है क्यों ना सच्च होगा।

आदमी से आदमी पैदा होता है इसलिए तो आदम हमारी जिस्मानी मौजूदगी का एक ज़ाहिरी वसीला है। (1 करनत्थियों 15:45) जिस्म से जिस्म पैदा होता है और रूह से रूह पैदा होती है (युहन्ना 3:6) और वालदैन की जिस्मानी साखत और कुछ ना कुछ बल्कि बहुत कुछ मिज़ाजी और अखलाकी कैफ़ीयत भी और अमराज़ मतादिह (मताद्दी अमराज़-छूतछात से पैदा होने वाली बीमारीयां) भी औलाद में नज़र आती हैं जिनका इन्कार नहीं हो सकता। इसी लिए ये कहावत मशहूर हुई है कि “बाप पर पूत पिता पर घोड़ा बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा।” (हिन्दी मिस्ल- हर शख्स पर कुछ ना कुछ खानदानी असर ज़रूर होता है)

ज़ाहिर है कि वालिद से रहेम (कोख) ए वालिदा में एक कतरा गिरता है। इस में एक नुक्ता है जो इस पैदा होने वाले की ज़िंदगी का मर्कज़ सा है। इस में ईलाही कुदरत का कुछ तसर्रुफ़ (दखल देना - अमल) होता है जो इन्सानी समझ से बुलंद है “तू नहीं जानता है कि....हामिला के रहेम (कोख) में हड्डियां क्योंकर बढ़ती हैं.....”(वाइज़ 11:5)

डाक्टर कहते हैं कि यूं यूं होता है लेकिन नहीं कह सकते कि यूं क्यों होता है? कलाम-उल्लाह बताता है कि इन्सान की पैदाइश अम इत्तिफ़ाकी नहीं है। खुदा के इरादे से इन्सान, रहेम मादर (मां के पेट में) में डाला जाता है। (अय्यूब 31:15) जिसने मुझे रहेम में डाला उस ने इसे भी बनाया और उसी वक़्त से ईलाही कुमक उस जनीन या बच्चे की निस्बत मालूम होती है। “खुदावन्द तेरा खालिक जिस ने रहेम ही से तुझे बनाया और तेरी मदद करेगा यूं फ़रमाता है...” (यसअयाह 44:2) ज़बूर नवीस दाऊद लिखता है “जब मैं पौशयदगी में बन रहा था और ज़मीन के अस्फल में अजीब तौर से मुरत्तब हो रहा था तो मेरा कल्ब तुझ से छुपा ना था। तेरी आँखों ने मेरे बे-तरतीब माद्रे को देखा और जो अय्याम मेरे लिए मुर्करर थे वो सब तेरी किताब में लिखे थे।” (ज़बूर 139:15-16) ये कुदरती काम मिट्टी में शुरू होता है और आदमी मिट्टी से बनता है..... “मैं भी मिट्टी से बना हूँ।” (अय्यूब 33:6) आदम और हव्वा के सिवा सब आदमी वालिद के सुल्ब से पैदा होते हैं। याकूब के छयासठ सुल्बी (सगा) फ़र्ज़द मिस्र में आए थे। (पैदाइश 46:26) इसी तरह हर आदमी के लिए ऊपर की तरफ़ एक सुल्बी (सगा) सिलसिला है जो इस का “नसब” कहलाता है। वो नसब नामे जो इंजील मत्ती व लुका में हमारे खुदावन्द मसीह के मज़कूर हैं। वो मर्यम और यूसुफ़ के हैं। यूसुफ़ मसीह का शरई बाप था ना जिस्मानी। मर्यम खुदावन्द मसीह की जिस्मानी वालिदा थी। मसीह का बदन उस के खून से बना। लेकिन वो फ़क़त जो उस के रहेम में आया उसी कुदरत से आया था जिस कुदरत से आदम बना था। (लूका 1:35)

पस यूसुफ़ और अब्रहाम व दाऊद वगैरा मसीह के शरई बाप थे ना सुल्बी (सगा) और मर्यम के साथ खूनी मुशारकत (बाहम शिरकत करना- हिस्सादारी) के सबब से मसीह का जिस्म उन बुजुर्गों का खून था और मुशारकत शरई व जिस्मानी के सबब से वो उनका फ़र्ज़द कहलाता है। सब आदमीयों में एक ही लहू है और एक खास किस्म का लहू है जो सिर्फ़ आदमीयों में है। इस के अज़ा तमाम हैवानात के खून से अलग किस्म के अज़ा हैं। इस ज़माना में ये साबित हो गया है कि आदमी का खून खास किस्म का है अब आदमी धोका नहीं खा सकता कि जानवर के खून और आदमी के खून में इम्तियाज़ ना कर सकें। ये आदम का खून कुल दुनिया के आदमीयों में यकसाँ है और इस से भी वहदत अबवी ज़ाहिर होती है। खुदा ने एक ही लहू (असल) से

आदमीयों की सब क्रौमों को तमाम सतह ज़मीन पर बसने के लिए पैदा किया है। (आमाल 17:26) और यह भी दुरुस्त बात है कि खून में जोश है और मुवानिस्त (मुहब्बत, उन्स) का एक ये भी सबब बनी-आदम में है और जिद्दी खून का जोश अक्रब मुवानिस्त का बाइस है वो कहावत दुरुस्त है “आखिर लहू ने जोश मारा।”

दफ़ाअ 12

इन्सान की इस्तिलाही तारीफ़

इन्सान क्या चीज़ है? या यूँ कहो कि हम जो बनी-आदम कहलाते हैं हम क्या हैं? इस सवाल का जवाब अहले इल्म यूँ देते हैं “इन्सान हैवान-ए-नातिक (बोलने वाला) जानवर है।” इन्सान की तारीफ़ सबने यही की है और यह तारीफ़ दुरुस्त और सहीह है क्योंकि ये जिन्स करीब और फ़स्ल करीब से इन्सान की हदताम (मुकम्मल) है और इस से बढ़कर कामिल तारीफ़ इस की हो नहीं सकती।

अब मुनासिब है कि हम सब अपनी जिन्स और फ़स्ल पर गौर कर के (अपने) आप को खूब पहचानें और उस से कुछ उम्दा नताइज निकालें ना ये कि आम लोगों की मानिंद अपनी तारीफ़ का फ़िक्र ही सुनके चुप कर रहें।

वाज़ेह हो कि जब हम अपनी अजनास (जिन्स की जमा) में गौर करते हैं तो हमें नीचे की तरफ़ बहुत उतरना पड़ता है और जब फ़ूसूल (फ़स्ल की जमा) की तरफ़ देखते हैं तब ऊपर चढ़ते आते हैं।

पहले “हैवान” के मफ़हूम को टटोलो कि वो क्या है? ये कहना पड़ेगा कि (हैवान एक जिस्म है नामी, हस्सास, मुतहरिक बिलइरादा) ये हैवान की तारीफ़ हुई इस में जुज़ आज़म या जिन्स जिस्म है और नामी हास और मुतहरिक बिलइरादा फ़सलें हैं उन्हें छोड़ के जिस्म को देखो कि वो क्या है? यही कहोगे कि (जिस्म एक चीज़ है जिसमें अल-ईबाद सलसा हैं) ये जिस्म की तारीफ़ हुई। अल-ईबाद सलसा से मुराद है तूल अर्ज़ अमुक इस से नीचे उतरना मुझे मुनासिब मालूम नहीं होता क्योंकि अगर कुछ और भी नीचे उतरें तो अनासिर की और जोहर की बहस पेश आ जाती है और यही कहना पड़ता है कि कुछ है तो लेकिन अक्ल से साफ़ साफ़ मालूम नहीं हो सकता। इमकानी खयालात के ढेर लग जाते हैं जिनसे सिर्फ़ हैरानी पैदा होती है और हकीकी बात इन्सानी फ़हम से पैदा नहीं होती है। ये मुक़ाम एक व्रता या गिर्दाब है जिसमें बहुत लोग डूब मरे हैं और गौहर मुराद पाके कोई गौत ज़न नहीं निकला। ये खौफ़ खतरे का मुक़ाम है इसी जगह पर खड़े होके किसी ने कहा कि हमा ओसत (همه اوست) है और किसी ने कहा नहीं

हमा अज़ ओसत (بہمہ از اوست) है। पहला ख्याल ज़हर काइल और दूसरा ख्याल तिरयाक है जो इसी जगह से आदमी निकालते हैं। लिहाज़ा इस बहस को तूल देना बेफ़ाइदा दर्द सिरी है।

हम जो मसीही हैं इस मुक़ाम पर इस अम्बिया के क़ौल को मज़बूती से थाम लेते हैं कि खुदा-ए-कादिर ने माद्दा को बे माद्दा सिर्फ़ अपने हुक्म की तासीर से मौजूद किया और माद्दा का माद्दा गोया वो हुक्म ईलाही था कि उस ने कहा “हो जा” और “हो गया” कुछ ना था और सब कुछ हो गया।

देखो नीचे की तरफ़ उतरने में तनज़्जुल पर तनज़्जुल चला आता है और तमाम तंज़िलात के नीचे यही आता है कि कुछ ना था। तो भी अब हम सब कुछ मौजूद देखते हैं और कलाम इस में बाक़ी रहता है कि ये सब कुछ कहाँ से और क्योंकर हो गया? “कहाँ” से का जवाब तो हमारे पास सिर्फ़ यही है कि नीस्ती से निकला जो इन्सानी ख्याल में मुहाल है मगर वो फ़ित्री नूर जो खुदा ने हम में रखा है ये दिखाता है कि खुदा की कुव्वत के सामने मुहाल नहीं है और लफ़ज़ “क्योंकर” का जवाब ये है कि कादिर की कुदरत से हुआ। उस की कुदरत के सामने बहुत सी वो बातें जिन्हें हम मुहाल कहते हैं मुहाल नहीं हैं।

पस मैं जिस्म ही पर इस बहस को छोड़ता हूँ और यूँ कहता हूँ कि इस तरफ़ तहकीकात अकलीया का दरवाज़ा बंद है और जो जो कुछ अहले ख्याल बोलते हैं वो उन की इमकानी तज्वीज़ें हैं। पस चाहिए कि हम इस ख्याली ग़ार में से निकलें और अपनी माहीयत (असलियत) के मफ़हूम में ऊपर की तरफ़ चढ़ें जहां तक चढ़ सकते हैं और ख़ूब टटोलें कि हमारे वजूद में क्या कुछ है और कहाँ तक हमें उम्मीद है? पस मालूम हो जाएगा कि हम सब जिस्म मुतलक में शामिल होके ठोस बे-जान पत्थरों और ईंटों और खाक के हम-जिंस या हम-रुत्बा या रिश्तेदार हैं। खुदा-ए-कादिर हमें एक खास शक़ल में लाया और उस ने कुदरती तसरूफ़ से हम में कुव्वत-ए-नामिया जिससे बढ़ते और नशव-ओ-नुमा की शादाबी हासिल करते हैं पैदा की। तब हम जमादात के दर्मियान मुम्ताज़ हुए और दरख़्तों में शामिल हो गए और जमादात हमारे नीचे आए तो भी हैवानात ऊपर रहे।

ये कुव्वत-ए-नामिया हम में कहाँ से आ गई क्या सिर्फ़ जमादात में से निकली? हरगिज़ नहीं बल्कि ये हुआ कि हमारी जमुदियत को कोई ख़ारिजी कुव्वत तर्तीब खास में लाई और माद्दा के दर्मियान से नमी और हवा और धूप ने इसी तर्तीब में तासीर की और उस ख़ारिजी कुव्वत की मर्ज़ी और इरादे के मुवाफ़िक़ एक खास कुव्वत हम में मौजूद हो गई जिसको कुव्वत-ए-नामिया कहते हैं। इस कुव्वत के सबब से हम नबातात की जिन्स में शामिल हो गए और जिस्म नामी ठहरे। “जिस्म नामी” के मअनी हैं वो

जिस्म जिसमें निम्नो की कुव्वत है फिर भी बे-हिस-ओ-रकत थे सिर्फ निम्नो की शान आ गई थी।

इस के ऊपर एक और चीज़ जिसको “हयात” कहते हैं और इसी का नाम फ़ारसी में “जान” है हम में आ गई जिसके सबब से हम हस्सास और मुतहर्रिक बिलइरादा हो गए और नबातात की बिरादरी में से निकलते हैवानात में शामिल हुए।

“हयात” के मअनी हैं “ज़िंदगी”। हैवान वो है जिसमें हयात है। “हस्सास” के मअनी हैं “हिस्सों वाला” और “मुतहर्रिक बिलइरादा” वो है जो अपने इरादे से हरकत करता है। ये दोनों बातें यानी हिस्सों वाला होना और हरकत कनुंदा होना हयात को लाज़िम हैं। ये हयात या जान हैवानों में कहाँ से और क्योंकर आ गई है? ज़ाहिर तो है कि उंसरों की खास तर्तीब से निकली है तो भी इस कुव्वत खारिजी का जो जहां में हर कहीं मोअस्सर नज़र आती है इस हयात के ईजाद में साफ़ साफ़ दखल मालूम होता है क्योंकि हैवान की जान और उस के जिस्म पर गौर करने से और उस के खसाइस के देखने से मूजिद के आसार-ए-इरादा उस में नज़र आते हैं और वह इरादे हर जानवर की ज़िंदगी में पूरे भी होते हैं।

अलबत्ता हैवानात की जानों में इदराक और ताक्कुल नहीं है। सिर्फ जीस्त के बहाल रखने का और तलाश मईशत का थोड़ा शऊर फ़ित्री है जिसको अक्ल हैवानी कहना चाहिए और वहां तक इन्सान भी हैवानों के बराबर रहते हैं।

हैवानों में से एक क्रिस्म का हैवान इन्सान है और उस में एक खास चीज़ ऐसी दिखाई देती है जो और हैवानों में नहीं है। इस चीज़ को अहले इल्म “नुत्क” (نطق) कहते हैं। ये कोई और ही चीज़ है जो उस हैवान यानी इन्सान की जान के ऊपर कहीं से उस में आ गई है और इसी चीज़ के सबब से ये दीगर हैवानों में मुम्ताज़ हुआ है और उन में से निकल के आला रुत्बे को पहुंचा है और उस की तारीफ़ हैवान-ए-नातिक ठहरी है।

देखो हमारा निचला हिस्सा खाक है और उस के ऊपर निम्नो है और निम्नो के ऊपर जान है और जान के ऊपर नुत्क है और यह हमारा ऊपर का हिस्सा है ये सब कुछ तो साफ़ साफ़ मालूम होता है कि हमारा खालिक हमें तरक्की देता हुआ कहाँ से कहाँ लाया है? अब कौन कह सकता है कि आगे को तरक्की का दरवाज़ा बंद हो गया है। शायद हम और भी तरक्की करते करते खालिक की हुजूरी में पहुँचेंगे और खाक से अफ़लाक पर चढ़ेंगे या अस्फल अल्साफिल में गिरेंगे।

दफ़ाअ 13

नुत्क़ (نطق) के बयान में

“नुत्क़” (نطق) की तरफ़ देखिए कि वो क्या चीज़ है? अरबी ज़बान में “नुत्क़” के मअनी हैं “बोलना” लेकिन इस्तिलाह में सिर्फ़ “बोलना” ही नहीं बल्कि इदराक़ माअनी की भी इस में शर्त है और इस सूरत में “नुत्क़” नाम हुआ उस वक़्त का जो इदराक़ मअनी की कुव्वत इन्सान में है और इसी कुव्वत के लिहाज़ से इन्सान की रूह को “नफ़स-ए-नातिका कहते हैं।

जब कहा जाता है कि फुलां शख्स का नफ़स नातिका या बोलता निकल गया तो ये मुराद है कि उस की रूह निकल गई। लफ़ज़ “नफ़स” के माअनी हैं “हकीकत शैय।” “इन्सानी नफ़स” से मुराद है इन्सानी हकीकत यानी वो असली चीज़ जो इंसान में है।

उस का दूसरा नाम “रूह” है। लताफ़त के सबब से इस वक़्त ये मालूम हो जाए कि वो हकीकते इन्सान जिसको “नफ़स इन्सान” कहते हैं वो एक ही चीज़ है और उस के नाम छः हैं। बलिहाज़ उस की छः सिफ़तों के कुव्वत इदराक़ के लिहाज़ से उस को “नफ़स नातिका” कहते हैं क्योंकि उस में इदराक़ की कुव्वत है। और जब वो नफ़स दुनियावी लज़ज़तों की तरफ़ बशिद्धत माइल होता है तो इस सूरत में उस को “नफ़स-ए-अम्मारा” कहते हैं। और जब वो नफ़स अपनी बदकिर्दारी से पछताता है और शर्मसार होता है उस का नाम “नफ़स लव्वामा” होता है और जब वो खुदा से मग़फ़िरत और तसल्ली हासिल करके खुशी में होता है उस वक़्त उस को “नफ़स-ए-मुत्मईन्ना” कहते हैं और जब उस पर हिदायत ग़ैबी के अनवार ईलाही फ़ैज़ान से नाज़िल होते हैं या उस पर चकमते हैं तब उस का नाम “नफ़स मल्हिमा” होता है और लताफ़त के लिहाज़ से हर कोई उसे रूह कहता है। पस चीज़ एक ही है नाम छः हैं।

ये हकीकत इन्सान यानी रूह जिसमें ये छः कैफ़ियतें हैं और जिस के सबब से इन्सान अर्ज़ी मख़लूक़ात में अशरफ़ नज़र आता है। तमिज़ी इदराक़ कहता है कि वो हैवानी जान के ऊपर कोई शैय है लेकिन उस की माहीयत (असलियत) कि वो क्या है? अक़ल-ए-इंसानी से पूरी पूरी दर्याफ़्त नहीं हो सकती है। मगर बाइबल शरीफ़ ने इस बारे में हमारी तसल्ली कर दी है ये दिखा के कि ये “नफ़स-ए-नातिका” या “रूह” आलम-ए-बाला का एक शख्स है और मख़लूक़ है जिसे खुदा ने पैदा किया और इन्सान के बदन में उसकी जान के ऊपर रखा है। उसी का नाम कलाम-उल्लाह में “ज़िंदगी का दम” है

जो खुदा ने आदम में फूँका यानी पैदा किया गया था। पस हमारा दावा ये है कि ये नफ़्स-ए-नातिका जो इन्सान में है मिस्ल नमू और हयात के तरकीब अनासिर का हासिल नहीं है बल्कि आलम-ए-अलवी का एक जोहर बड़ा शरीफ़ और बेश-कीमत है।

दफ़ाअ 14

जान और रूह का बयान

लफ़ज़ “रूह” के मअनी हैं “हवा” लेकिन ना वो “हवा” जो हमारे चारों तरफ़ बहती है क्योंकि आदमी की रूह में कुछ कैफ़ीयत है जो आम हवा में नहीं है तो भी इस आम हवा के साथ उस की रूह का कुछ इलाका है। लताफ़त और सुकूनत के लिहाज़ से चुनान्चे अगर किसी मकान में खला कर दिया जाये और हवा खींच ली जाये तो वहां कोई जानवर और इन्सान जी नहीं सकता, फ़ौरन जान निकल जाती है। इस का नतीजा ये नहीं हो सकता कि रूह इन्सानी महज़ हवा है बल्कि ये बात है कि गोया रूह “हवा” पर सवार है और “हवा” उस का मस्कन सा है जब “हवा” पहुँचेगी तो रूह के लिए मस्कन ना रहा इसलिए वो गायब हो जाती है और कहीं चली जाती है हवा में रल-मिल भी नहीं जाती।

लफ़ज़ “रूह” के इस्तिलाही माअनों में और इस की माहीयत (असलियत) के बयान में अहले इल्म ने आज तक बहुत सा इख़्तिलाफ़ किया है और उन लोगों का सारा बयान पढ़ने से यही मालूम होता है कि रूह की माहीयत (असलियत) आदमीयों को अब तक मालूम नहीं हुई है। हाँ ये बात तो ख़ूब मालूम है कि इन्सान में मिस्ल सब हैवानात के एक हरारत है जिसको ये हकीम “हरारत-ए-गरीज़ी” कहते हैं। “गरीज़ा” नाम है “सरिशत या तबीयत” का और सरिशती हरारत जो अनासिर की आमेज़िश से पैदा होती है वही “हरारत-ए-गरीज़ी या सरिशती” है।

ये हरारत क़ल्ब (दिल) में कि गोशत के टूकड़ा है पैदा होती है और नसों के वसीले से सारे बदन में फलती है। इसी को तबीब लोग “रूह हैवानी” कहते हैं और बीमारी की हालत में इसी के सँभालने की कोशिश होती है क्योंकि हर जानदार की ज़िंदगी उसी पर मौकूफ़ है और उस का नाम जान है जिसके सबब से सब हैवान “जानवर” यानी “जान वाले” कहलाते हैं। लेकिन ये जिस्मानी है और जिस्म के साथ फ़ना हो जाती है। उस को कोई हकीम “हवाई जिस्म” कहता है और कोई “आतिशी” और कोई “आबी” बताता है और यहां तक इन्सान में और सब हैवानात में मुसावात रहती है। और जब कहा जाता है कि इन्सान में दो चीज़ें हैं यानी रूह और जिस्म तो

जिस्म की गायत उस के आज़ा ए कसीफ़ा से ले के उस की ऐसी जान तक मुराद होती है यानी जिस्म की हद में ये जान भी आ जाती है और रूह से मुराद वो चीज़ होती है जो हद जिस्मानी से बाहर है।

खुदावन्द यसूअ मसीह की निस्बत अथनासीस के अक्राइद नामा में लिखा है (फ़िक्रह 37) कामिल खुदा कामिल इन्सान नफ़स-ए-नातिका और इन्सानी जिस्म की तरकीब में मौजूद। यहां लफ़ज़ जिस्म में ये हैवानी जान भी शामिल है।

इस जान में भी किसी क़द्र शऊर मईशत की रोशनी ख़ालिक़ से डाली हुई नज़र आती है लेकिन वो शऊर है ना अक़ल। जानवर इस शऊर महदूद के वसीले से दुनिया में गुज़ारा करते हैं और मामूली तरीके में इस से काम लेते हैं। ना इस में तरक्की कर सकते हैं ना इसे इशकाल-ए-मतनवा में इस्तिमाल कर सकते हैं। पस वो एक ख़ास हद में रहते हैं।

आदमी में इस जान के ऊपर कोई और चीज़ है और वह सिर्फ़ इन्सान ही में पाई जाती है और वही फ़स्ल है जो कि इन्सान को हैवान-ए-मुत्लक़ में से निकालती है। जमादात में से निकालने के लिए निम्मो फ़स्ल था और नबातात में से निकालने के लिए ये जान फ़स्ल हुई थी। अब हैवानात में से निकालने के लिए ये चीज़ फ़स्ल है जिसको “नफ़स-ए-नातिका” कहते हैं।

ये रूह क्या चीज़ है? कोई कहता है कि वो एक नूर है उस में ताक्कुल और इदराक़ है और हरकत व इरादा की इस्तिदाद (सलाहियत) है। कोई कहता है कि वो कोई शैय क़दीम है लेकिन ऐसा बोलने वाला कुछ सबूत नहीं दे सकता। कोई कहता है कि वो हादिस (नई चीज़ जो पहले ना हो, फ़ानी) है लेकिन ग़ैर-फ़ानी है ख़ालिक़ ने उसे अबद तक ज़िंदा रखने के लिए पैदा किया है। उस के लिए इब्तिदा तो है लेकिन इंतिहा नहीं है। ऐसा बंद-ओ-बस्त ख़ालिक़ ने इस के लिए किया है। हमारा भी रूह की निस्बत ऐसा ही यकीन है और यही ख़याल सब पैग़म्बरों का था और सबूत इस ख़याल का इसी रूह की सिफ़तों में से निकलता है। बाअज़ अहले-फ़िक़्र ने कहा है कि ये रूह आलम तजर्द का एक शख़्स है जो ख़ाकी बदन में रहता है जैसे जिस्मानी आज़ा बदन में हैं वैसे ही रूह में भी आज़ा हैं। लेकिन ये ख़याल सूफ़िया का है और इस का सबूत कुछ नहीं है। कलाम-उल्लाह में इस रूह को “बातिनी इन्सान” कहा गया है।....” “गो हमारी ज़ाहिरी इन्सानियत ज़ाइल होती जाती है फिर भी हमारी बातिनी इन्सानियत रोज़ बरोज़ नई होती जाती है।” (2 करनत्थियों 4:16) “क्योंकि बातिनी इन्सानियत की रू से तो मैं खुदा की शरीअत को बहुत पसंद करता हूँ।” (रोमीयों 7:22) इसी बातिनी इन्सानियत के ज़िम्मे अफ़आल की जवाबदेही है। सारे पैग़म्बर इस बात पर-ज़ोर लगा रहे हैं कि ये बातिनी इन्सान अबदी दुखों से बचाया जाये। इसी की इस्लाह के लिए मसीह खुदावन्द

मुजस्सम होके दुनिया में आया और मस्लूब हुआ, मर गया, दफ़न हुआ, तीसरे दिन जी उठा और अपनी इस बेशकीमत मौत और हयात की तासीरों से वो हमारे इस बातिनी इन्सान को नया बनाता है। (इफ़िसियों 2:5, 4:24) और यही बातिनी इन्सान है जो खुदा की कुर्बत (नज़दिकी) और रिफ़ाक़त हासिल करता है और यह हर इन्सान की जान या रूह हैवानी पर सवार सा है लेकिन इस का जलाल दिमाग़ में ज़्यादा ज़ाहिर है।

दफ़ाअ 15

रूह और जान की ज़्यादा तौजीह

एक फ़ारसी शाएर ने यूं कहा है और बहुत ख़ूब कहा है उस पर ख़ूब गौर कीजिए।

از فرشته سرشته وز حیوان
در کند میل آن شود به زان

آدمی زاده طرفه معجونی ست
گر کند میل این شود بد زین

आदमीज़ादा तरफ़ा माअजूनी सत
गर कुंद मेल अन शिवो बद ज़ी

अज़ फ़रिशतह सर शता विज़ हैवान
दर कुंद मेल अन शोद बह ज़ां

इस जगह लफ़ज़ “फ़रिशता” से मुराद “फ़िरिस्ता” यानी “फ़िरिस्तादा” है जो खुदा से भेजा गया या पैदा हुआ है यानी रूह जिसे खुदा ने इन्सान में फूँका कि इस खाकी बदन में कुछ अरसा तक रहे और कुछ खास काम करे। लफ़ज़ “सिरिशता” (سرشته) जो “सर शितिन” (سرشتن) मुसद्दिर से है इस मेल मिलाप का बयाँ करता है जो उस फ़रिशते को रूह हैवानी से हुआ है। गोया उस के साथ गूंदहा गया है, और इस तरकीब से जो पैदा हुआ है वही आदमीज़ादा है। इस में दो मीलान साफ़ नज़र आते हैं जिनमें सख़्त मुखालिफ़त है। जिस्म की ख़्वाहिश रूह के मुखालिफ़ है और रूह की ख़्वाहिश जिस्म के मुखालिफ़ है। (गलतियों 5:17) और इस मुरक्कब शख्स का अपना इख़्तियार है। जिधर चाहे ज़्यादा मुतवज्जा हो वो किसी तकदीर का मजबूर नहीं है। अगर वो हैवानियत की तरफ़ माइल होता है जैसे कि सब नफ़स परवर और अय्याश और दुनिया के मग़लूब लोग हैं तो हैवान से ज़्यादा ज़लील और ख़वार है क्योंकि हैवान से ज़्यादा इज़ज़तदार चीज़ उस में थी यानी रूह और अगर वो फ़रिशते की तरफ़ माइल होता है यानी रूहानी ख़्वाहिशों की तरफ़ मुतवज्जा होता है तो दीगर आस्मानी फ़रिशतों से ज़्यादा रुत्बा पाता है क्योंकि उस ने वो बहादुरी की जो और फ़रिशतों ने नहीं की है। उन में कुछ हैवानियत ना थी, इस में थी फिर भी ये ग़ालिब आया और बहादुर निकला। अब नाज़रीन सोचें

कि ये बयान सच्य है या नहीं? अगर सच्य है तो फ़िक्र करो कि आप लोग कैसे हैं? आपके मिज़ाज शरीफ़ किस तरफ़ माइल हैं? आप हैवान से बदतर हैं या फ़रिश्तों से अच्छे हैं मरने से पहले अभी फ़ैसला कर लीजिए।

याद रहे कि मुक़र्रबान (मुक़र्रब की जमा) दोस्त, हमराज़ दरगाह ईलाही की भी शनाख्त है कि उन की सफ़लियत (पस्ती) पर उन की अलवियत (बुलंदी) ग़ालिब आती है और बुरे आदमी इसी लिए बुरे हैं कि वो सफ़लियत (पस्ती) के मग़्लूब हैं अलवियत (बुलंदी) की तरफ़ मुतवज्जा नहीं होते बल्कि ऐसे ख़यालों को ठट्टे में उड़ाते हैं।

सफ़लियत (पस्ती) उस वक़्त ग़ालिब आती है जब आदमी अपनी रुहानी कुव्वतों और ख़्वाहिशों का काम छोड़ देता है और सिफ़ली कुव्वतों और ख़्वाहिशों को काम में लाता है। अगर कोई चाहे कि मैं अपनी सफ़लियत (पस्ती) पर ग़ालिब आऊँ तो चाहीए कि वो अपनी सारी ताक़त से इस बारे में साई (कोशिश) हो और ख़ुदा से मदद मांगे वो उसे ताक़त बख़्शेगा।

दफ़ाअ 16

नफ़्स-ए-नातिका में कुछ अलवी किरनें चमकती हैं

इस शायर ने “नफ़्स-ए-नातिका” को “फ़रिश्ता” बताया है। हक़मा उसे “फ़ित्री नूर” कहते हैं। कलाम-उल्लाह में उस को “ज़िंदगी का दम” कहा गया है। लेकिन बाअज़ आदमी जो बेईमान हैं उस को तरकीब इमत्तीज़ाजी की कैफ़ीयत का हासिल बताते हैं। ये ख़याल ज़लील है और बे फ़ित्री का ख़याल है या ग़लत मुक़द्दमात का ग़लत नतीजा है और आदमी की ज़िंदगी के दायरे को ख़राब कर डालता है। वो जो कहते हैं कि नफ़्स-ए-नातिका तरकीब इमत्तीज़ाजी का हासिल है उन की दलीलें ये हैं कि तरकीब इमत्तीज़ाजी की बर्बादी के साथ नफ़्स-ए-नातिका भी बर्बाद हो जाता है और कि जिस्मानी कुव्वत की तरक्की से उस में तरक्की और तनज़ुल से तनज़ुल होता है इसलिए तरकीब मज़कूर का हासिल है।

मैं कहता हूँ कि कोई मुक्कब शए अपने अजज़ा की कैफ़ीयत से अलग कोई सिफ़त पैदा नहीं कर सकती है। तरकीब इमत्तीज़ाजी के अजज़ा अनासिर हैं और अनासिर में इदराक व इरादे की इस्तिदाद (सलाहियत) भी नहीं है। पस जो चीज़ अजज़ा

में मुतलक नहीं है वह तरकीब में कहाँ से निकल सकती है? रूह हैवानी या जान ज़रूर तरकीब अनासिर का हासिल है तो भी बताईए कि इस में हसासी और तहरूक कौन सी जुज़ की खासीयत है? वो तो एक रोशनी से है जो खारिज से उस में आई है। इसी तरह रूह इन्सानी की ना बाअज़ बल्कि तमाम खसलतें ऐसी हैं कि मादा से कुछ भी लगाओ नहीं दिखातीं। अलबत्ता इन्सान के मिज़ाज में अजज़ा मादा की तासीरात दिखाई देती हैं। लेकिन नफ़स-ए-नातिका में कुछ और ही मुआमला नज़र आता है। खयालात जेल पर गौर कीजिए।

- 1) मदारिज और मनासिब आलिया (आला मर्तबे) के हासिल करने की एक खास इस्तादाद सब आदमीयों की रूहों में मौजूद है जिससे बाअज़ आदमीयों ने हस्ब कोशिश हर हर काम में ताज्जुब के लायक तरक्की भी दिखाई है ऐसी इस्तिदाद (सलाहियत) ना किसी अर्ज़ी मख्लूक में है ना रूह हैवानी में है ना मादा के मुनासिब है। फिर ये इस्तिदाद (सलाहियत) नफ़स-ए-नातिका में कहाँ से है? अब इस इस्तिदाद (सलाहियत) की बुनियाद या तो मादा में से निकालो या मान लो कि नफ़स-ए-नातिका किसी ग़ैर जहान का शख्स है।
- 2) सब हैवानों की तरफ़ देखो सिर्फ़ सिफ़ली और जिस्मानी सिफ़ात उन में हैं। हाँ इतनी बात उन में है कि हसासी और तहरूक और किसी क़द्र मईशत का नाकिस साशावर खिलते हैं और मैं इस को भी बालाई चमक कहता हूँ। बाकी तमाम सिफ़तें जो उन की जानों में हैं सिफ़ली हैं क्योंकि उन में सिर्फ़ वही जान है जो तरकीब इमत्तीज़ाजी से पैदा हुई है और ये तरकीब मादा से है और मादा अपनी तासीरें मुस्ल्लमा उन में दिखा रहा है। लेकिन इन्सानी रूह में अलवेत की ख्वाहिश कहाँ से है?
- 3) हैवानात की जानों में जो ख्वाहिशें हैं वो सब इसी ज़मीन की चीज़ों से पूरी हो जाती हैं और तकमील पाती हैं और जानवर अपनी खुशी इसी जहान में पूरी कर लेते हैं। लेकिन इन्सान की रूह में जो ख्वाहिशें हैं वो इस जहान की चीज़ों से आसूदा और मुकम्मल नहीं हो सकती हैं। इस का यही सबब हो सकता है कि नफ़स-ए-नातिका आलम-ए-बाला का शख्स है और अपने देस की चीज़ों से जो उस की तबा के मुनासिब हैं वो आसूदा और खुश होता है क्योंकि हर चीज़ का मीलान उस के कुर्राह की तरफ़ होता है।

मसलन आदमी की रूह अबदी बका और हकीकी खुशी की यकीनन तालिब है और यह दोनों चीज़ें यानी अबदीयत और हकीकी खुशी इस दुनिया में कहाँ हैं? हम तो सब मरने वाले हैं ना आगे कोई रहा है ना हम रहेंगे। फिर वो अबदी बका कहाँ है? जिसकी ये रूह तालिब है और यहां जो खुशी है वो फ़ानी और तल्खी आमेज़ है। पस

हकीकी खुशी दुनिया में कहाँ है जिसकी तालिब रूह है? फिर फ़रमाईए कि रूह इन्सानी के दर्मियान इन दोनों चीज़ों की उमंग क्योंकर पैदा हो गई है? हम नहीं कह सकते कि इन्सानी रूह दीवानी है या उसे वहम हो गया है क्योंकि ये उमंग उस में तिब्बी है ना आरिज़ी। इसलिए हम कहते हैं कि वो अलवी है और आलम ए बाला में हकीकी खुशी और अबदीयत के वजूद की खबर हमारी तमीज़ भी हमें देती है। पस रूह वो चीज़ें माँगती है जो दुनिया में नहीं हैं लेकिन अल्लाह में हैं और इस का सबब यही है कि रूह इन्सानी अल्लाह की तरफ़ से है, माद्दा से पैदा नहीं हुई है। नाज़रीन बहुत फ़िक्र करें और गुमराह ना हों। नफ़स प्रवरों की वाहीयात बातों में फंस के अपनी रूहों को बर्बाद ना करें।

- 4) आम और खास आदमीयों में से उन आदमीयों की रूहें जिन्हें इस जहान के गुबार ने दबा के बिल्कुल अंधा नहीं कर दिया है बल्कि उन की आँखें कुछ टिमटिमाती हैं। वो सब अपने ज़रूरी फ़ायदे के लिए बवसीला नेक-आमाल के या रियाज़त बदनी और ईमान व एअतकाद के कुछ सवाब जमा करते हैं। हिंदू, मुसलमान, यहूदी और ईसाई वगैरह तमाम अहले मज़ाहिब यही कुछ करते हैं। ये बहस जुदा है कि कौन मुनासिब और कौन नामुनासिब मशक्कत खींचता है लेकिन कुछ ना कुछ मशक्कत ये सब खींचते हैं इस उम्मीद पर कि बाद इंतिकाल खुदा से कुछ पाएंगे और क्या पाएंगे वही अबदी बक्रा और खुशी मांगते हैं।

लामज़हबों, ताअलीम याफ़्तों की अखलाकी व तहज़ीबी कोशिशें भी कुछ ऐसे ही मतलब पर मालूम होती हैं। क्यों उन सबकी रूहें आइन्दा दुखों से थरथराती हैं? क्यों इन रूहों में ऐसा यक़ीन है कि बाद फ़ना इस तरकीब बदनी के हम बाकी रहेंगे और वह क्यों किसी ना किसी वसीले से छुटकारे और आराम के उम्मीदवार हैं? सब हैवानों की ऐसी कैफ़ीयत क्यों नहीं है? सिर्फ़ आदमीयों ही की ऐसी कैफ़ीयत क्यों है? इसी लिए कि हैवानी रूह फ़ानी और माद्दा की तरकीब से है और उस में इदराक नहीं। इन्सानी रूह ग़ैर-फ़ानी और आलम बाला से है और उस में इदराक है और वो इस जहान में आपको मुसाफ़िर समझती है और बाद इंतिकाल आपको शैय बाकी जानती है और जहां जाके बाकी रहना है उसे अपना घर और देस समझती है और ये रूह का ख़याल तिब्बी है और दुरुस्त है।

दफ़ाअ 17

एक फ़ायदा है याद रखने के लायक

चंद आदमी सकीम (बीमार, खस्ता) अल-अर्वाह या मग़लूब दुनिया या बहाईम सीरत या वहमी लोग या कज-फ़हम या बेईमान कि बेराह रवी करके नाउम्मीदी और नादानी के गार में जा पड़े हैं। अगरचे वो बज़ाहिर खुश-पोशाक और खुश-खुराक बल्कि खुश-अखलाक और ताअलीम याफ़्तह और साहब मदरिज क्यों ना हों लेकिन उन के दिलों और खयालों की वही कैफ़ीयत है जो ऊपर के सख्त लफ़ज़ों में पर्दा हटा के मैंने सुनाई या दिखाई है। (अगर मर्ज़ी हो तो गौर करके उन की तरफ़ ताकना कि वो ऐसे ही हैं या नहीं) ऐसे लोगों ने आइन्दा की उम्मीद को अपने दिलों और खयालों में से ज़बरदस्ती खींच खींच कर निकाला है और हैवानों के साथ इसी जहान में बर्बाद होने के शौकीन हुए हैं। उनकी रूहों में कैफ़ीयत मज़कूर बाला का ना होना रूह इन्सानी की फ़ित्री हालत का बयान नहीं हो सकता है क्योंकि उन में किसी इन्हितात का ज़हूर है और रूह की फ़ित्री कैफ़ीयत वही है जो जिम-ए-गोफ़िर की रूहों में पाई जाती है।

और मैं इस बात पर भी तवज्जा नहीं करता जो वो लोग कहते हैं कि वहशी आदमीयों की रूहों में ऐसी अलवी किरनें क्यों नहीं चमकती हैं जैसी तुम मज़हबी ताअलीम याफ़्तों की रूहों में हैं। मैं समझता हूँ कि वहां कुछ तो है जो बहुत गौर से नज़र आता है मगर आप लोग इल्मी रोशनी और आसाइश के मुल्कों और मकानों में आराम से बैठे हुए इन वहशियों के हक़ में दूर से जो चाहते हो सो कहते हो, ज़रा उन के नज़दीक जाना और उन के मुहावरात दोस्तो रात में मशक़ करके उन की कैफ़ीयत से आगाह होना जैसे हमारे भाई मिशनरी लोग करते हैं। तब मालूम होगा कि उन की रूहों में भी ऐसी ही इस्तिदाद (सलाहियत) और तलब है।

और यह कहना कि हमारी रूहों की ऐसी कैफ़ीयत ताअलीम के सबब से है ना कि रूह की तबा के इसलिए जायज़ नहीं है कि तालीमी दस्तूर सानेअ (कारीगर, खालिक) ने इन्सान की फ़ित्रत में रखा है। अगर आदमी का बच्चा ताअलीम ना पाए तो वो कुछ नहीं सीखता। पैदा होते ही बच्चे की ताअलीम वालदेन से शुरू होती है। वो सिखाते हैं कि दूध यूं पीना चाहिए, ये बाप है, ये माँ है वगैरा वगैरा। यहां तक कि वालिदा की छातीयों से शुरू करके बुढ़ापे की मौत तक इन्सान सीखता और ताअलीम पाता रहता है। यहां तक कि मर जाता है और ताअलीम तमाम नहीं होती है। पस ताअलीम इन्सान के लिए कोई आरिज़ी अम्र नहीं है बल्कि उस के कमाल का तरीका और अम्र फ़ित्री है। जो कोई ताअलीम से महरूम है ख्वाह वहशी हो या शहरी वो अपने कमाल के तरीके

से गिरा हुआ है। पस उस की रूह की तरफ़ देख के हम ऐसा हुक्म नहीं दे सकते कि खसाइस मज़कूर उमूर फ़ित्री नहीं हैं क्योंकि ऐसा क्रियास ग़लत है। हमको चाहिए कि इन्सान कामिल की तरफ़ देखें और वहां से रूह की शान दर्याफ़्त करें ना कि बच्चों, वहशियों, सक्रीम-उल-अर्वाह मुल्हिदों (बेदीन), बद ताअलीम याफ़्तों, अहमक, जाहिलों और जोगीयों वगैरा की तरफ़ देख के नीचे गिरें। हम तो तरक्की करते चले आए हैं और भी ज़्यादा तरक्की करेंगे। ताअलीम को फ़ित्री तरीका समझेंगे और सब तालीमों पर गौर करके उम्दा ताअलीम के पाबंद होंगे और इस तरीके से सैकल शूदा (साफ़-शफ़ाफ़) अर्वाह में रूहों के जोहर दर्याफ़्त करेंगे और कहेंगे कि तमाम अर्वाह बनी-आदम में ऐसे ऐसे जोहर हैं जो अलवेत दिखाते हैं और यूं इन्सान की रूह का अलवी जोहर होना साबित है।

देखो दरख्त अपने फलों से पहचाना जाता है कि वो अच्छा और मुफ़ीद दरख्त है या बुरा और मुज़िर। लेकिन कच्चे और हवा से टूटे और गिर के सूखे फलों से हम पूरी शनाख्त दरख्त की हासिल नहीं कर सकते हैं बल्कि कामिल और पुख़्ता फलों से जो मुनासिब वक़्त पर दरख्त से उतरते हैं दरख्त पहचाना जाता है। पस रूह इन्सानी के जोहर कामिल आदमीयों में देखना चाहिए, वहशियों और शरीरों और बच्चों में जो ना कामिल हैं और दरख्त इन्सानियत के कच्चे या गिरे और सूखे फल हैं क्या दर्याफ़्त कर सकते हो? तो भी जो कुछ उन में नज़र आता है वही हमारे मतलब पर मुफ़ीद है। नाज़रीन को चाहिए कि मुल्हिदों के बहकाने से गुमराह ना हों मगर खुद कामिल होने की कोशिश करें और कामिल शख्सों की तरफ़ देखें।

दफ़ाअ 18

इन्सानी हवास अशराह के बयान में

“हवास” जमा है “हासा” (حاسة) की इस के मअनी हैं “दर्याफ़्त करने की कुव्वत।” इन्सान में पाँच हवास-ए-ज़ाहिरी साफ़ नज़र आते हैं लेकिन हकीम कहते हैं कि पाँच हवास-ए-बातिनी भी हैं। क़दीम मुहम्मदी इन पाँच हवास-ए-बातिनी के क़ाइल नहीं हैं। लेकिन हम अगर उन के भी क़ाइल हों तो कुछ मज़ाइका नहीं है। पस मैं इस मुक़ाम पर ज़ाहिरी और बातिनी हवास को मिला के दस हवास का ज़िक्र करता हूँ। इन्सानी रूह बवसीला इन हवास अशराह के इस जहान की चीज़ों को दर्याफ़्त किया करती है और जो कुछ दर्याफ़्त करती है बमूजब उस के तज्वीज़ और इरादे और बंद-ओ-बस्त बांधती है और अपने बदनी आज़ा को हिलाती और काम भी करती है। हवास-ए-खमसा ज़ाहिरी

ये हैं “कुव्वत लामसा” “कुव्वत बासिरा” “कुव्वत सामेआ” “कुव्वत जायका” “कुव्वत शामा।”

कुव्वत-ए-लामसा (لامسه) का बयान

“लम्स” (لمس) के मअनी हैं “छूना” पस छू के दर्याफ्त करने की कुव्वत को लामसा (لامسه) कहते हैं। ये कुव्वत इन्सान के सारे बदन में है। कोई चीज़ इन्सान को किसी जगह से छूए या इन्सान का कोई उजू किसी चीज़ को छूए रूह को मालूम हो जाता है कि किसी ने मुझे छुवा और यह कि वो चीज़ सख्त है या नरम, सर्द है या गर्म, नोकदार है या मुसत्तह। अगरचे ये कुव्वत सारे बदन में है लेकिन हाथों में खुसूसुन उंगलीयों के सरों में ज़्यादा है। इसी लिए हकीम उंगलीयों के सरों से नब्ज़ को देखता है और सर्दी, गर्मी, सस्ती वसरात (फिरती) नब्ज़ की मालूम कर लेता है। अगर ये कुव्वत अल्लाह तआला हमारे सारे बदन में ना रखता तो हम मुज़िर चीज़ों के सदमात से क्योकर बचते। रूह को खबर भी ना होती और बदन कहीं सर्दी या आग में तलफ़ हो जाता। पस इस कुव्वत के लिए खुदा के शुक्रगुज़ार हो या नहीं?

“लम्स” (لمس) के वसीले से जब रूह को कुछ खबर मिलती है तब वो फ़ौरन बदन को हरकत देती और इस शैय की तरफ़ मुतवज्जा होके पहले आँखों से देखना चाहती है कि वो क्या है फिर जो मुनासिब समझती है सो करती है।

कुव्वत-ए-बासिरह (باصره) का बयान

ये देखने वाली कुव्वत है और सिर्फ़ इन दो आँखों में है और बदन के किसी टुकड़े में नहीं है। इनमें खुदा की तज्वीज़ से एक तर-ओ-ताज़ा शीशा सा है जिसके नीचे साफ़ पानी का एक चशमा सा है। रone के वक़्त आँसू इसी चश्मे से बहते हैं और इस पानी से वो शीशा या पर्दा तर-ओ-ताज़ा रहता है। इस पर्दे की हिफ़ाज़त और रोशनी की कमी बेशी के लिए पलकें हैं। हरपेश आइन्दा शेकी तस्वीर बतौर अक्स के इस पर दहया शीशा में मुनक्क़श होती है। उस के आगे दिमाग़ में एक नुक्ता है और नुक्ता इन्सानी रूह और इस शीशे के साथ एक खास निस्बत में वाक़ेअ है। पस रूह इन्सानी बवसीला इस नुक्ता के इस अक्स मनकूश को साफ़ देख लिया करती है।

तमाम चीज़ें जो तुम देखते हो वो चीज़ें तो नहीं देखते हो मगर उन के अक्रोस (अक्स) देखते हो। रूह शए लतीफ़ है और अक्रोस भी जो नज़रों में आते हैं लतीफ़ हैं। खुदा तआला सब कसीफ़ और बड़ी बड़ी चीज़ों को लतीफ़ शक़ल में लाके इस लतीफ़ रूह

को दिखाता है। देखो अल्लाह तआला की हिक्मत। जब दूर की चीज़ देखना है तो रूह इन्सानी आँख का मुँह ज़्यादा खोलती है और ज़्यादातर खारिजी रोशनी की तालिब है। अगर नज़दीक की चीज़ देखना है तो आँख का मुँह कुछ तंग खुलता है और इसी हिसाब पर लोगों ने दूर बीन और खुरद बैन बनाई हैं, जिनके शीशों में चीज़ों के अक्स पड़ते और बवसीला आँख के इन अक्सों के अक्स रूह को नज़र आते हैं। अगर आदमी उस चीज़ से जो बवसीला आँख के मालूम हुई है वाकिफ़ था तो उसे पहचान लेता है कि वो फुलां चीज़ है वर्ना और ज़्यादा दर्याफ़्त के दरपे होता है कि वो क्या है।

कुव्वत-ए-सामेआ (سامعه) का बयान

ये सुनने की ताक़त है और सिर्फ़ दो कानों में है और कहीं नहीं और बग़ैर खारिजी आवाज़ के सुन भी नहीं सकते। कान सलामत हों और आवाज़ भी कहीं से आए तब सुन सकते हैं। आवाज़ ख्वाह धीमी हो या बुलंद, मगर कुछ आवाज़ हो और आवाज़ भी बामाअनी मालूमा हो वर्ना सिर्फ़ एक खड़का सा कान में पहुँचेगा और रूह उस का मतलब ना समझेगी। जानवरों की आवाज़ें, हवा के सन्नाटे, बादिलों की गरज, बिजली की कड़क, चीज़ों के टकराने के खड़के और अजनबी ज़बानों के अल्फ़ाज़ सुनने से रूह को कुछ मतलब मालूम नहीं होता सिर्फ़ आवाज़ें पहुँचती हैं।

अरबी में “लफ़ज़” के मअनी हैं “फेंकना।” जब एक आदमी दूसरे आदमी से बात करना चाहता है तो अपने दिल का मतलब कलिमात माअलूमा में लपेट कर बवसीला अपनी ज़बान के हवा में मुखातब की तरफ़ फेंकता है। और देखते हो कि जैसे पानी के तालाब में पत्थर मारने से एक हलक़ा सा बंध जाता है इसी तरह इस हवा के समुंद्र में जो हमारे चार तरफ़ भरा है जो कलिमा या लफ़ज़ रूह से बवसीला ज़बान के फेंका जाता है वो हवा में एक हलक़ा या दायरा पैदा करता है और हलक़ा सदमें की ताक़त के मुवाफ़िक़ बंधता है जिस क़द्र लोग कानों वाले और उन अल्फ़ाज़ के समझने वाले इस हलक़े के दर्मियान होते हैं वो सब सुन और समझ लेते हैं। और सुनने का तौर ये है कि ये दो कान मिस्ल दो पंखों के हैं जो हवा की जुंबिश को जमा कर लेते हैं या रोक लेते हैं और इन के आगे एक सुराख़ है जिसके सिरे पर एक जली सी है इसी को कान का पर्दा कहते हैं। ये पर्दा ऐसा कसा हुआ है जैसे ढोलक का चमड़ा कसा हुआ होता है। पस उन पंखों की जमा की हुई या रुकी हुई जुंबिश उस ढोलक में जाके बजती है और वह पर्दा उस के सदमे से हिलता है। उस के आगे एक जंजीर सी है और वह जंजीर उस जुंबिश को मग़ज़ के अंदर पहुंचा देती है वहां से नफ़स-ए-नातिक़ा को मालूम हो जाता है कि फुलां शख्स ने यूँ कहा है। पस मैं पूछता हूँ कि ख़ालिक़ की इस हिक्मत पर फ़िक़र करके उसे सज्दा करना चाहते हो या नहीं?

कुव्वत-ए-जायका का बयान

ये चखने की कुव्वत है जो सिर्फ ज़बान में अल्लाह ने रखी है। जब कोई चीज़ ज़बान पर आती है और उस के अजज़ा थूक में किसी कद्र घुलते हैं तो इस हिस्स के वसीले से उस शैय का मज़ा रूह को मालूम हो जाता है कि वो किस मज़ा की है?

ज़बान से तीन काम निकलते हैं। मज़े चखती है, बोलती है और दाँतों से चबाई हुई गिज़ा को टटोल के मादा में उतरने की इजाज़त रूह से दिलवाती है और यह ज़बान बड़ी फुर्तीली है जल्द जल्द काम करती है।

कुव्वत-ए-शामा (شامة) का बयान

ये सूँगने की कुव्वत है और सिर्फ नाक में है। जब किसी चीज़ के लतीफ़ अजज़ा बवसीला हवा के उड़ के नाक में आते हैं या आदमी किसी चीज़ को नाक के पास ला के बवसीला हवा के ऊपर की तरफ़ दम खींच के उस चीज़ के अजज़ा लतीफ़ा को नाक में चढ़ाता है तब उस चीज़ की खुशबू या बदबू बवसीला इस हिस्स के रूह को मालूम हो जाती है। ये हवास-ए-खमसा ज़ाहिरी हैं और उन के काम भी खास खास हैं। हकीम कहते हैं कि पाँच हवास-ए-बातिनी और भी हैं और वह इन हवास-ए-ज़ाहिरी से दर्याफ़्त शूदा उमूर में अपना अपना काम किया करते हैं। इन के नाम ये हैं “हिस्स मुशर्क” “ख़याल” “वहम” “कुव्वत-ए-मुतसरिफ़ा” “कुव्वत-ए-हाफ़िज़ा”

हिस्स मुशर्क (مشرك) का बयान

हुकमा कहते हैं कि इन्सान के दिमाग़ में तीन खाने या तीन बतन हैं और उन को “बतन अव्वल” “बतन दोम” और “बतन सोम” कहते हैं। हर बतन में दो मुक़ाम बताते हैं और उन को “दर्जा अव्वल” और “दर्जा दोम” कहते हैं। **“हिस्स मुशर्क”** एक कुव्वत है। दिमाग़ के बतन अव्वल के पहले दर्जे में इस को हिस्स इसलिए कहते हैं कि वो एक कुव्वत ए हासा है और मुशर्क इसलिए कहते हैं कि वो हवास-ए-खमसा ज़ाहिरी और नफ़स नातिका के दर्मियान है। दोनों तरफ़ इस का इलाका है जो कुछ हवास-ए-ज़ाहिरी दर्याफ़्त करते हैं अव्वलन इसी हिस्स (س) के सामने आता है और यही हिस्स रूह को ख़बर देती है।

खयाल का बयान

“खयाल” के लफ्ज़ी मअनी हैं पिंदार वांचा दर-ए-ख्वाब दीदा शोद दिया दर बेदारी तखय्युल कर्दा एद वांचा दर-ए-आईना दीदा शोद। (پند آروانچہ در خواب دیدہ شود و یاد در بیداری متخیل کردہ) लेकिन यहां खयाल से मुराद “कुव्वत-ए-मुतखय्यला” है और वह एक कुव्वत है। बतन अक्वल के दर्जा दोम में जो कुछ हिस्स मुशतर्क को बवसीला हवास के मालूम होता है ये कुव्वत इस माअलूम के तसव्वुर को अपने अंदर कुछ अरसा तक महफूज़ रखती है।

वहम का बयान

वहम के मअनी हैं “आंचे दर-ए-दिल गुज़र्द यार फ़ितन दिल बसूए चीज़े बे-कस्द एन” लेकिन यहां मुराद वहम से कुव्वत-ए-वाहिमा है और यह कुव्वत बतन दोम के आखिर में है और इस का ये काम है कि अपने अंदर तसव्वुरात की तस्वीरें खींचा करती है ख्वाह ग़लत हों या सहीह।

हवास-ए-खमसा ज़ाहिरी से दर्याफ़्त हो के बवसीला हिस्स-ए-मुशतरक (حس مشترک) के जो कुछ खयाल हैं वो हिस्स मुशतर्क के मखज़न से पहुंचा करता है। ये कुव्वत-ए-वाहिमा उसे देख के शक व शुब्ह और जो जो कुछ चाहती है अपनी वहमी इमारतें बनाना शुरू करती है और कभी किसी दिली-ख्वाहिश पर ख्वाह वो ख्वाहिश नेक हो या बद बुनियाद कायम करके अपनी वहमी इमारत का एक महल सा बना खड़ा करती है। इस का मैदान बहुत फ़राख है। वो लोग जो अपने दिल ही दिल में बातों का सिलसिला बांधा करते हैं वहां यही कुव्वत काम किया करती है। किताब अलिफ़ लैला और सब ज़टल्ली मज़मून जो दुनिया में हैं इसी कुव्वत की तस्नीफ़ से हैं। सारी बेईमानी की जड़ यही कुव्वत है। ये कुव्वत ना खुदा के ताबे होती है ना अक्ल के। ये रात-दिन भोंकती रहती है जब तक कि इन्सान की रूह इस को धमका के चुप ना कराए ये चुप नहीं करती है सारे वस्वसे और शकूक और खौफ़ और सब झूटे मज़हब और तमाम भूतों और जादू टोनों के वाहीयात खयाल इसी से निकले हैं। इसी ने बाअज़ आदमीयों को दहरिया बाअज़ को हमा ओसत बोलने वाला बनाया है और किस्म किस्म के वाहीयात इसने आदमीयों के खयालों में भर रखे हैं। बाअज़ साहब-ए-इल्म आदमी कहते हैं कि ईमानी अक्राइद के बारे में जैसे जाहिलों के यक़ीन वासिक नज़र आते हैं हमारे ऐसे यक़ीन नहीं होते हैं। इस का सबब मैं यही जानता हूँ कि इन लोगों ने इस कुव्वत-ए-वाहिमा की

बहुत इताअत की है और अपने आप को उसके ताबे कर दिया है। इसलिए शक में शक उन के दिलों में चले आते हैं। अगर चाहो उन से कलाम करके देख लो कि वहम पर वहम वो उगलते हैं। अफ़सोस है कि आदमी अपने आप को इस कुव्वत की ताबेअ करे जो कि ना खुदा के और ना अक़ल के ताबेअ हो सकती है और फिर वो आदमी यूँ भी कहे कि मैं सच्चा मुहक्किक्क हूँ।

हाँ ये कुव्वत कुछ मुफ़ीद भी है अगर इस को एक हद में काम करने दें ताकि हम धोका ना खाएं। जो शकूक ये पेश करे उन पर फ़िक्र किया जाये ना ये कि इस से मुतलक़-उल-अनान करके हम खुद उस के पीछे हो लें। फिर वो तो कभी किसी बात पर भी कायम ना होने देगी। हमेशा कहेगी शायद यूँ ना हो यूँ हो, फिर भी यूँ हो, यूँ हो।

ये कुव्वत हैवानात में ज़्यादा है। इसलिए कि ये खास रूह हैवानी की कुव्वतों में से है। नफ़स-ए-नातिका की ये कुव्वत नहीं है। नफ़स-ए-नातिका की ख़िदमत में तो है पर खुद हैवानी सिफ़त है ना मुल्की। बाज़-औक़ात इस के काम से फ़ायदा भी होता है। पस चाहीए कि हर आदमी ये बातें सुन के होशियार हो जाए क्योंकि इस कुव्वत ने बहुतों को गुमराही में डाल रखा है। अगर उस को काबू में ना रखा जाये तो वो बाअज़ सदाक़तों को भी मानने ना देगी। जब ये कुव्वत ज़्यादती दिखाए उस को धमकाना चाहीए। सिर्फ़ धमकी से उस का मुँह-बंद होता है और हम इस का कान पकड़ के इस को खुदा के और अक़ल के ताबे करते हैं और जब ये बेहूदा बकती है तो हम कहते हैं चुप रह मत बक। हम अपने आप को इस के हवाला हरगिज़ नहीं करते हैं बल्कि इस को अपने ताबेअ रखते हैं।

कुव्वत-ए-मतसरफ़ा (متصرفه) का बयान

ये वो कुव्वत है जो खयालात में उलट पलट करके नतीजे निकाला करती है। ये बतन दोम के दर्जा अक्वल में है। ये निहायत ख़ूब चीज़ है और यह हैवानी कुव्वत नहीं है बल्कि नफ़स-ए-नातिका की कुव्वत है। इस की बहुत परवरिश चाहीए। इस का काम ये है कि बाअज़ हासिल शूदा शक़लों को बाअज़ मुतालिब के साथ मुक्कब करके और उन से नतीजे निकाल के कहा करती है कि इन शक़लों का मक़सद और मतलब मुझे यूँ मालूम होता है सो मैं नफ़स-ए-नातिका के सामने पेश करती हूँ, फ़तवा देना उस का काम है। पस ये कुव्वत नफ़स-ए-नातिका के लिए सलाहकार और मुशीर सा है। तज्वीज़ें इस से होती हैं और हुक्म नफ़स-ए-नातिका से मिलता है और कभी कभी नफ़स-ए-नातिका इस की तज्वीज़ों में भी मुरम्मत करता है। इस कुव्वत के दो नाम हैं क्योंकि दो तरह के काम इस से होते हैं जबकि ये कुव्वत मालूमात की तरकीब में नफ़स-ए-नातिका के साथ मिल के काम करती है। तब उस का नाम “कुव्वत मुतफ़क्किरह” (توت)

متفكره) होता है और ये इस का काम आला दर्जे का काम है लेकिन जब ये अपना काम कुव्वत-ए-वाहिमा के साथ मिल के करती है उस वक़्त उस को “कुव्वत-ए-मुतखय्यला” (متخذة) कहते हैं और इस काम में खतरे होते हैं।

सब मुहक्किकों पर फ़र्ज़ है कि तफ़क्कुर व तखील में इम्तियाज़ किया करें ताकि ग़लती से बचें। तखैयुलात ने इमान में बड़ा फ़साद मचा रखा है। तफ़क्कुरात बहुत कम-नज़र आते हैं।

कुव्वत-ए-हाफ़िज़ा का बयान

ये कुव्वत बतन ए सोम के दर्जा अक्वल में रहती है और तसव्वुरात ख्यालिया और वाक़ियात की शक़लों को याद रखती है और यही दिमागी दफ़तर का आखिरी मख़रन है और यह कुव्वत-ए-वाहिमा की चीज़ों को भी रख छोड़ती है। पच्चास बरस गुज़रे या कम ज़्यादा, कि जैद ने उमर को एक खास लिबास में जवान देखा था। अब उमर बूढ़ा हो के और तरह का हो गया लेकिन जैद की कुव्वत-ए-हाफ़िज़ा में इस की वही पहली सूरत महफूज़ है। अल-हाज़-उल-क़यास और और मिसालें खुद सोच लो। ये पाँच कुव्वतें जिन्हें बातिनी हवास कहा गया इन्सान में बचशम गौर दिखाई तो देती हैं तो भी रूह एक शैय मुम्ताज़ रहती है। इन कुव्वतों ही में रल-मल नहीं जाती। सबसे ज़्यादा बुलंद रुत्बे की कुव्वत कुव्वत-ए-मुतसरिफ़ा है और वह भी अपने काम में कभी वाहिमा की तरफ़ और कभी रूह की तरफ़ झुकी हुई नज़र आया करती है। ऐसी बातों से रूह में और कुव्वतों में इम्तियाज़ होता है और रूह सब कुव्वतों पर हाकिम रहती है। गौर से अपनी अंदरूनी कैफ़ीयत पर सोचो।

दफ़ाअ 19

इन्सान के दिल का बयान

“दिल” फ़ारसी लफ़ज़ है। अरबी में इस को “क़ल्ब” (قلب) कहते हैं और यह अरबी का लफ़ज़ निहायत ख़ूब और पुर-ताअलीम है। “क़ल्ब” (दिल) के मअनी हैं “पलटे खाना और उलट पलट होना।” चूँकि इन्सान का दिल किस्म किस्म के असरों से उलट पुलट होता रहता है इसलिए उस का नाम अच्छा है और खुदा को भी मुक़ल्लिब-उल-कुलूब (مقلب القلوب) इसी लिए कहा जाता है कि वो दिलों को उलट पुलट कर दिया करता है। दूसरे मअनी क़ल्ब (दिल) के हैं दरमयानी जगह या सदर जगह और चूँकि ये दिल

इंसान में गोया सदर जगह है जहां से इरादे और ख्वाहिशें निकलती हैं इसलिए भी इस का नाम कल्ब (दिल) अच्छा है। आम इस्तिलाह में “दिल” नाम है उस गोशत के टुकड़े का जिसकी शकल सनोबरी या गाजर जैसी है और वो इन्सान के सीने में बाएं तरफ़ है और वह एक उजू रईस है।

सूफी कहते हैं कि “दिल एक रब्बानी लतीफ़ा है उस का इलाका इस जिस्मानी दिल के साथ ऐसा है जैसा अर्ज़ों और सिफ़तों का इलाका अजसाम और मौजूफ़ात से होता है।”

एक और मुहक्किक़ ने कहा है “हकायक़ रुहानी और ख़साइस नफ़्सानी के दर्मियान और हकायक़ जिस्मानी व क़वाई मिज़ाजी के दर्मियान एक हकीक़त है जामिआ उस को दिल कहते हैं।”

एक और आलिम ने कहा कि “दिल एक नूरानी जोहर है। मुजरिद और वह रूह हैवानी और नफ़्स नातिक़ा के दर्मियान है और इसी से इन्सानियत कायम होती है। गोया ये दिल मल्कियत और हैवानियत के दर्मियान का मुक़ाम है जो दोनों माहीयतों से इलाका रखता है।” ये बात तो साफ़ है कि इन्सान के दिल ही से सारी बदी और नफ़्सानी व हैवानी ख्वाहिशें निकलती हैं और दिल ही में से बहुत सी खूबियां भी ज़ाहिर होती हैं और यह भी देखते हैं कि जब दिल से खूबियां निकलती हैं तब इस दिल को नफ़्सानी हैवानी बद ख्वाहिशों से बड़ा जंग करना पड़ता है और जब दिल से बदी आती है तब इस से मिल्कियत की मुखालिफ़त होती है। इसी से ज़ाहिर है कि दिल दर्मियान में है मल्कियत और हैवानियत के और इस का इलाका दोनों तरफ़ है।

कलाम-उल्लाह में इन्सान के दिल का बयान बहुत हुआ है। बाइबल के दर्मियान तखमीना दो सौ आयतें होंगी जिनमें दिल का बयान हुआ है। और कोई किताब दुनिया में ऐसी नहीं है जो दिल का ऐसा बयान दिखाए जैसा बाइबल शरीफ़ ने दिखाया है। इस का सबब यही है कि बाइबल खुदा से है और खुदा तआला सब आदमीयों के दिलों की कैफ़ीयत से पूरी तरह वाकिफ़ है। उस की निगाह में सब अक्वलीन व आख़िरीन के दिलों की कैफ़ीयत पूरी पूरी मौजूद है। इसी लिए वो आदमी के दिल का बयान अपनी किताब में पूरा पूरा कर सका है।

खुदा तआला चाहता है कि हर एक इन्सान की रूह अपने दिल की हिफ़ाज़त खूब तरह से करे क्योंकि जंग का मुक़ाम वही है उसी जगह से फ़तह या शिकस्त होती है। शैतान चाहता है कि आदमी अपना दिल उस को दे ताकि वहां बैठ के वो इस पर हुकूमत करे और काबिज़ हो के अपने साथ उसे जहन्नम में ले जाए।

खुदा फ़रमाता है कि तुम सब अपना दिल मुझे दो ताकि मैं तुम्हारे दिलों में सुकूनत करूँ और तुम मेरे साथ हमेशा खुशी में रहो।

और इन्सान की रूह का ये इख्तियार है कि अपना दिल जिसको चाहे दे और ये इख्तियार इसलिए है कि इन्सान आज़ाद पैदा किया गया है ताकि इस पर अदालत वाजिबी हो सके। क्रियामत और अदालत के दिन से पहले दोज़खी और बहिश्ती लोग इसी से पहचाने जा सकते हैं कि इन के दिलों में हाकिम कौन है? और कि वो किस की हुकूमत के तहत में मुए (मरे) हैं? वो जिसकी हुकूमत में मुए (मरे) हैं उसी के साथ, उसी के सिपाही और उसी की चीज़ों के वारिस होते हैं। अब नाज़रीन अपने दिलों की तरफ़ गौर करके (अपने) आपको पहचानें कि वो किस के लोग हैं?

बनिस्बत मुहम्मदी अहले शराअ के सूफ़ियों ने दिल का फ़िक्र ज़्यादा किया है और उस के दुरुस्त करने की कुछ तदबीरें भी सोची हैं। मैंने जब तक बाइबल शरीफ़ से रोशनी ना हासिल की थी मैं भी सूफ़ियों की तदबीरों पर फ़रेफ़ता था। अब मुझे मालूम हो गया कि सूफ़ियों की बातें अगरचे मुहम्मदियों की बातों से बेहतर हैं मगर फ़िल-हकीकत निकम्मी हैं। वो लोग बाअज़ रियाज़तों और बाअज़ तसव्वुरात और बाअज़ वज़ाइफ़ के वसीले से दिलों को सुधारने के दर पे रहते हैं लेकिन ये चीज़ें इस मर्ज़ की दवा नहीं हैं।

दिल पाक होता है सिर्फ़ मसीही ईमान से क्योंकि वो ईमान खुदा की बख़िश है और मसीह की सलीबी मौत की तासीर से जो बवसीला ईमान के मोमिन में असर करती है। दिल की बद ख्वाहिशें मुर्दा सी हो जाती हैं और मसीह खुदावन्द की क्रियामत की तासीर से दिल में ऐसी ताज़गी और कुव्वत और रोशनी आती है कि मसीही मोमिन बदी पर और दुनिया, नफ़स और शैतान पर ग़ालिब आता है और फ़त्ह पाता है और खुदा का मुकर्रब हो जाता और दुनियावी दुख सुख में खुदा की मर्ज़ी का मुतीअ होके अपनी ज़िंदगी बसर करता है और यही बड़ी नेअमत है जिसके सब मुहताज हैं।

दफ़ाअ 20

दिमाग, जिगर, गुर्दों और अंतड़ियों का बयान

दिमाग, ये लफ़ज़ तीन माअनों में आता है कभी सर के अंदर के पर्दों की चर्बी और गूदे को दिमाग कहते हैं और वहां कुछ हिस् (س) नहीं है। कभी तमाम खोपड़ी को दिमाग कहते हैं और चूँकि वहां पट्टे भी हैं इसलिए वहां हिस् (س) भी है। कभी सारे सर को दिमाग कहते हैं। लेकिन जब कहा जाता है कि फुलां बड़े दिमाग का आदमी है तब उस की अक्ल की गहराई और बड़ी रसाई पर इशारा होता है और कभी उस के गरूर पर और कभी उस की हमाक़त पर भी इसी लफ़ज़ से इशारा करते हैं।

हकीम कहते हैं कि “दिमाग वो उजू रईस है जो खोपड़ी में है और उस की शकल मुसल्लस मखरूती है। वही रूह का महल है जहां वो रहती है। कान और आँखें ज़बान और नाक जो पेशी के खादिम हैं उस के बहुत ही नज़दीक हैं सिर्फ एक कुव्वत-ए-लामिसा बतौर जासूसी के सारे बदन में छोड़ी हुई है। देखो अल्लाह की शान।”

जिगर यानी “कबिद” (كبد) दहने पहलू में एक उजू है और वह भी उजू रईस है। दिल, दिमाग और जिगर यही तीन उजू रईस कहलाते हैं। इनकी बहुत हिफ़ाज़त चाहीए क्योंकि जब उनमें से किसी में खलल आया तो फिर आदमी की ज़िंदगी नहीं है। जिस्मानी दिलावरी जिगर की कुव्वत पर मुन्हसिर समझते हैं। जब कहते हैं कि वो बड़े जिगरे का आदमी है तब उस की दिलावरी पर इशारा होता है।

गुर्दे वही दो गोले से हैं जो जानवरों में देखते हो। अरबी में वाहिद को “कुल्लिया” (كلىة) या “कलवा” (كلوة) कहते हैं और दोनों को कलेतें (كليتیں) कहा करते हैं। (ज़बूर 7:9 में है कि खुदा सादिक दिलों और गुर्दों को जाँचता है।

अंतड़ियां जिन्हें अरबी में मिआ (معا) कहते हैं जिसकी जमा “अमआ” (امعاء) है। इन्सान के पेट में छः अंतड़ियां बताते हैं। और कहते हैं कि गहिरा ग़म और बड़ी खुशी अंतड़ियों तक महसूस होती है। (नोहा 1:20) में बयान है कि मेरी अंतड़ियां उबलती हैं। उस ज़माने के लोग ऐसा समझते थे कि दिल की पोशीदा बातें गुर्दों में छुपी रहती हैं और गहरा ग़म और गहरी खुशी दिल से आगे बढ़ा के अंतड़ियों तक मोअस्सर है। पस ये अगले ज़माने का मुहावरा था और इसी मुहावरे पर कलाम-उल्लाह में कहा गया

है कि खुदा दिल और गुर्दों का जानने वाला है और कि ग़म से मेरी अंतड़ियां कलपती हैं। और कभी कभी मुहावरे में कहा जाता है कि अंतड़ियां इसीस देती हैं।

दफ़ाअ 21

ग़म के बयान में

ग़म एक कैफ़ीयत है नापसंदीदा जो इन्सान के दिल पर तारी होती है। जिससे दिल सुस्त और चेहरा अफ़सुर्दा हो जाता है और ज़्यादा ग़म से जिस्मानी कुव्वत में ज़ईफ़ आ जाता है। (अम्साल 12:25) इन्सान के दिल का ग़म उसे झुका देता है और शिकस्ता खातिर करता है। (अम्साल 15:13)

दिल के कमज़ोर आदमी ग़म की बर्दाशत ना करके कुड़कुड़ाते और वावेला करते और कभी कभी हद एतिदाल से बाहर हो जाते हैं लेकिन बुर्दबार अशखास जो साबिर और जफ़ाकश हैं बर्दाशत करके एतिदाल में रहते हैं। ग़म खाने का एक वक़्त है। (वाइज़ 3:4) सब जानते हैं कि इन्सान को ग़म कभी कभी होता है हमेशा नहीं रहता। अगर कोई आदमी अपनी ज़िंदगी के गुज़शता वक़्त पर फ़िक्र करे और सोचे कि किस क़द्र वक़्त ग़म और दुख में कटा और कितना वक़्त आराम में गुज़रा तो उसे मालूम हो जाएगा कि खुशी व आराम के लिए बहुत वक़्त था और ग़म के लिए बहुत ही थोड़ा वक़्त था। लेकिन नादानी से या मुबालगा से बाअज़ आदमी कहा करते हैं कि मेरी तो सारी उम्र ग़म में गुज़री है ये नाशुक्री की बात है और दुरुस्त नहीं है।

ग़म जो कभी कभी दिलों में आ जाता है अच्छा नमूना है। इस आइन्दा दुख की हालत का जो गुनाहों के वबाल के सबब से बे ईमानों और बदकारों का हिस्सा होगा जिसे आदमीयों ने अभी नहीं देखा, चाहीए कि हम सब उन दुनियावी ग़मों की तल्खी को चख के होशयार हो जाएं और वह काम ना करें जिनके सबब से आइन्दा अबदी ग़मों के सज़ावार होते हैं।

लोग हंसी खुशी को बहुत पसंद करते हैं और अपनी ज़िंदगी का वक़्त खुशी में बसर करना चाहते हैं बल्कि बाज़ों के तो हर वक़्त दाँत पसरे ही रहते हैं। कहके मार मार कर हंसते और ऐसी ऐसी बातें दिल से निकालते हैं जिनसे आप ही हँसें और दूसरों को भी हँसाए। लेकिन कलाम-उल्लाह में लिखा है। “ग़मगीनी हंसी से बेहतर है।” (वाइज़ 7:3) बहुत हंसी से आदमी का दिल मुर्दा सा हो जाता है और ग़म दिल को सुधारता है खुदावन्द मसीह ने फ़रमाया है कि ग़मगीन लोग मुबारक हैं। (मत्ती 5:4) पस ग़म निशान बरकत है। ग़म दो किस्म का होता है :-

अव्वल दुनिया का ग़म है कि दुनियावी चीज़ों के लिए अहले दुनिया के दिलों में मोअस्सर होता है और यह बहुत है। चारों तरफ़ अहले दुनिया इसी ग़म में मुब्तला हैं। कभी कभी ये दुनियावी ग़म भी आदमीयों को खुदा की तरफ़ खींच लाता है लेकिन अक्सर ये ग़म हलाकत का बाइस होता है।

दूसरा ईलाही ग़म है जो अपने और दूसरों के गुनाहों की यादगारी से दिलों में आता है और तौबा की बरकत दिल में पैदा करता है यही ग़म मुबारक है। (2 कुरनत्थियों 7:10) ग़म की फिर और तरह पर दो किस्में हैं “बेवकूफी का ग़म” और “दानिशमंदी का ग़म”

बेवकूफी का वो ग़म है जो काज़ी साहब को था किसी ने पूछा काज़ी जी आप दुबले क्यों हो गए हैं? फ़रमाया कि शहर के ग़म ने मुझे दुबला कर दिया है। जो बातें ईलाही इंतज़ाम के वाक़ियात से दुनिया में होती हैं और यूं ही हुआ करेगी जब तक कि आखिरत आए। पस उन के लिए बेहद वावेला से क्या फ़ायदा है? मसलन ज़वाल दौलत का ग़म या मौत अहबाब का ग़म या बाअज़ रिश्तेदारों और दोस्तों की तरफ़ से बेमुरव्वती और बे इंसाफी और जफ़ा व दगा देखने का ग़म वगैरा। बहुत बातें ऐसी हैं जिनसे दिल पर चोट लगती है लेकिन ऐसी चोटों के नीचे दाँत पसार के गिर जाना बेवकूफी है कुछ अक्ल को भी काम में लाना चाहिए।

दानिशमंदी का वो ग़म है जिसका ज़िक्र (वाइज़ 7:4) में है कि “दाना का दिल मातम के घर में है और अहमक का दिल इशरत खाना से लगा है।” दानिशमंद आदमी हर वक़्त हर अम्र में अंजाम बख़ैर के लिए दूर-अँदेश और फ़िक्र मंद रहता है और यह दूर अँदेशी व फ़िक्रमंदी उस के दिल के लिए गोया एक मातम-खाना सा होता है और यह मातम-खाना अच्छा है। बेवकूफ़ आदमी नादान बच्चों की मानिंद कुछ दूर-अँदेश नहीं है। अदना फ़ानी चीज़ों को पा कर खुश होता और उन के ज़वाल से बच्चों की तरह चिल्ला चिल्ला कर रोता है। पस उस (बेवकूफ़ आदमी) की खुशी और उस का ग़म बेवकूफी के साथ है और उस (दानिशमंद आदमी) की खुशी और ग़म दानिशमंदी के साथ है और कामयाब भी वही होगा।

बाअज़ ग़म और दुख इन्सान की सेहत रुहानी के लिए भी अल्लाह तआला से जो हकीकी मुदब्बिर और प्यारा बाप है आया करते हैं। वो इन्सान के हक़ में बमंज़िला दवा के होते हैं उन की तहकीर ना चाहै। हर एक ग़म और दुख जो इन्सान पर आता है अगर वो उस से कुछ नसीहत हासिल ना करे तो वो ग़म फ़िल-हकीकत ग़म है और जो वो उस से कुछ इस्लाह पज़ीर हो तो वो ना सिर्फ़ ग़म है बल्कि बरकत है।

गम अगरचे तलख चीज़ है मगर इस में कुछ मज़ा भी है। एक शायर कहता है “गम खाता हूँ लेकिन मेरी नीयत नहीं भर्ती।” क्या गम में मज़ा है, कि तबीयत नहीं भर्ती। अगरचे इस शायर ने दुनियावी गम की निस्बत ऐसा कहा है लेकिन फ़िल-हकीकत ईलाही गम में मज़ा है। दुनिया के गम में महज़ तलखी है। मसीह खुदावन्द की सलीबी मौत के वक़्त मसीहीयों को भी बड़ा गम और अलम हुआ था लेकिन बमूजब इर्शाद मसीह के उनका वो गम मुबदल बखुशी हो गया था। (युहन्ना 16:20) और वह खुशी अब तक हमारी रूहों में बराबर चली आती है और अबद तक बजलाल रहेगी। गम और अलम का वजूद तो मादूम ना होगा बल्कि बे ईमानों के लिए गम का समुंद्र ज़ाहिर होगा और वह अबद तक मग़मूम रहेंगे। हाँ मसीही मोमिन के लिए गम ऐसा मादूम होगा कि वह सियोन में गीत गाते हुए आएंगे और अबदी ताज़ उन के सरों पर होगा। वो खुशी और शादमानी हासिल करेंगे और गम उनसे काफ़ूर जाएंगे।” (यसअयाह 35:10)

और वो (खुदा) उन की आँखों के सब आँसू पोंछ देगा। इस के बाद ना मौत रहेगी और ना मातम रहेगा। ना आह-ओ-नाला ना दर्द। पहली चीज़ें जाती रहीं।” (मुकाशफ़ा 21:4) इस वक़्त भी मसीहीयों के गमों में ग़ैर मसीहीयों के गमों की निस्बत बहुत फ़र्क़ होता है। इनके गम हल्के और उन के गम भारी हैं। देखो क्या लिखा है तुम औरों की मानिंद जो ना उम्मीद हैं गम ना करो। (1 थिसलीनकों 4:13) वो कवी उम्मीद जो मसीहियों को मसीह में है उन के गमों का बोझ हल्का करती है। नाउम्मीद शख्स के लिए क्या आसरा है कुछ नहीं पूरा बोझ गम का उसे उठाना होता है। ये भी याद रहे कि गम के वक़्त हमें क्या करना चाहिए। अगर कोई तुम में गमगीन हो वो दुआ मांगे। (याकूब 5:13) यानी खुदा के हुज़ूर में जाये और अपना बोझ उस के सामने रखे वहां से कुव्वत सबरी और तसल्ली हासिल करेगा।

दफ़ाअ 22

खुशी के बयान में

खुशी एक शीरी कैफ़ीयत है जो दिल पर आती है। सब आदमी रात-दिन खुशी की तलाश में हैं। वहशी भी और बच्चे भी, अहमक भी और दानिशमंद भी, ईमानदार और बेईमान भी सब खुशी चाहते हैं। लेकिन **खुशी दो किस्म की है फ़ानी और ग़ैर फ़ानी**। “फ़ानी खुशी” फ़ानी चीज़ों में है। ये फ़रेबी खुशी है जो चंद रोज़ा है और आखिरकार यह खुशी मुबदल नअम हो जाएगी और मसलुब (नाबूद) होगी। ये खुशी जिस्मानी ख्वाहिशों की तकमील में है किसी क़द्र तो इस की हाजत दुनिया में इन्सान

को है मगर ये नादानी की बात है कि हम उस के हो रहे। दानिशमंद की रूह इस खुशी से कभी सैर नहीं होती और ना हो सकती है।

“गैर-फ़ानी खुशी” गैर-फ़ानी चीज़ों में है। ये खुदा के पास है और खुदा की कुर्बत (नज़दिकी) से हासिल होती है। ये रूह का फल है जो मसीह बख़्शता है और इस का बर्याँ इंजील शरीफ़ में है। वो मोमिनीन की रूहों में मोअस्सर होती है और मसीह अपने खास बंदों को इस खुशी से भर देता है। फ़ानी खुशी इस गैर-फ़ानी खुशी के सामने ऐसी हकीर होती है कि खुदा के बंदे इसके लेने को उसे छोड़ देते हैं और इन का ऐसा काम बेजा नहीं बल्कि बजा है। हाँ मुनासिब तौर से कभी फ़ानी खुशी को भी वो अमल में लाते हैं मगर उसे मग़लूब बगैर फ़ानी रखते हैं।

लेकिन वो दुनियादार जो गैर-फ़ानी खुशी की तरफ़ से अंधे हैं। फ़ानी खुशी की तलाश और तक्मील में तमाम ज़िंदगी बसर करके मर जाते हैं और उन की खुशी इसी जहान में फ़ना हो जाती है और उन की रूहें बे-खुशी के अंदर तक हाय हाय करती हुई दुख में चली जाती हैं। नाज़रीन किताब हज़ा को चाहिए कि गैर-फ़ानी खुशी को तलाश करें फ़ानी खुशी पर फ़रेफ़ता होके चुप ना कर रहीं।

दफ़ाअ 23

जिस्म के बदकामों के बयान में

यहां जिस्म से मुराद रूह हैवानी है क्योंकि वो जिस्म की हद में दाख़िल है। रूह हैवानी के कामों को खुदा के कलाम में जिस्म के काम कहा गया है और यह ज़ाहिर किया गया है कि रूह हैवानी जब बुरे काम करती है और नफ़स नातिका उसे दबा के नहीं रखता बल्कि उस की ख़्वाहिशों का खुद मुतीअ हो रहता है तो खुदा का गुस्सा उस शख़्स की तरफ़ होता है।

रूह हैवानी एक फ़ानी चीज़ है। वो बदन के साथ फ़ना हो जाएगी। उस पर कुछ मलामत नहीं और ना इसे माख़ज़ में आना है। लेकिन रूह इन्सानी जो बाकी और गैर फ़ानी है और जिस में इदराक और तमीज़ है वो क्यों एक जानवर की मुतीअ हो जाती है इसलिए वो आफ़तों की सज़ावार है।

इस बात को यूँ समझना चाहिए कि अगर कोई घोड़े का सवार जो इन्सान है घोड़े की लगाम अपने हाथ में ना रखे और अपनी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ जहां चाहे उसे ना ले जाये बल्कि लगाम ढीली छोड़ के आप घोड़े का मुतीअ हो जाए कि जिधर चाहे खुद

घोड़ा उसे ले जाये तो क्या वो बचेगा? या खुदकुश हो के मरेगा? और कसूर किस का होगा? घोड़े का या उस शख्स का जिसने उस के हाथ घोड़ा बेचा था या खुद ये हज़रत मलामत के लायक होंगे जिन्होंने इस जानवर को क़ाबू में ना रखा? यही हाल जिस्मानी बद ख्वाहिशों की इताअत से आदमीयों की रूहों का हो रहा है। जिस्म की उसूली बद ख्वाहिशों की फ़हरिस्त ये है।

1) **शहवत** उस ख्वाहिश का नाम है जो नर और मादा में मेल की ख्वाहिश कहलाती है। असल तो उस की ख़ूब है कि तनासुल की गरज़ से अल्लाह ने ये कुव्वत जानवरों में रखी है और इन्सान में भी है। जब ये कुव्वत इन्सान में ज़ाहिर होती है उस वक़्त को बलूगत का वक़्त कहते हैं और जब आदमी बूढ़ा हो जाता है और कुव्वतें कमज़ोर हो जाती हैं उस वक़्त ये कुव्वत भी मुनक़ते हो जाती है।

नादान, अहमक, ना तजुर्बाकार जवान जो ना खुदा से डरते और ना अहले तजुर्बा बुजुर्गों की नसीहतें सुनते हैं वो इस कुव्वत में आके बहुत उछलते हैं। इस को दबाते नहीं बल्कि इस में मगन हो जाते हैं और अपनी दीगर कुव्वतों को इस का मग़्लूब करते हैं और ऐसा मग़्लूब करते हैं गोया उन के हवास-ए-खमसा पर भी शहवत छा जाती है। बुरे गीत गाते, बुरी बातें खुशी से सुनते सुनाते, बद सोहबतों को पसंद करते और नफ़स अम्मारा को मज़ा देते फिरते हैं। शरीर औरतों के दरपे होते हैं हरामकारी पर कमर बाँधते हैं और सख़्त बेहया हो जाते हैं। चारों तरफ़ ताक झांक करते फिरते हैं। घोड़ों की तरह हिनहिनाते और कुत्तों की तरह कुत्तियों के दरपे फिरते हैं। आपस में लड़ते भी हैं, बंदिशें भी बाँधते हैं, नारे मारते, फ़रेब देते और फ़रेब खाते फिरते हैं।

बड़ी बड़ी आफ़तें भी उन पर आ जाती हैं और उन की ख़ूब ख़ाना-ख़राबियाँ होती हैं। आतिशक की बीमारी और बरस या कोढ़ इसी से होता है और ऐसी सख़्त तकलीफ़ होती है कि इन बीमारीयों में मुब्तला होके इन्सान मौत मांगता है और नहीं आती। अगर किसी अय्याश को ऐसी बीमारीयों ना हों और वह कुछ अरसा तक उछल कूद के बैठा रहे तो भी वो बाकी उम्र-भर रोया करता है। इसलिए कि उस में से असली कुव्वत निकल जाती है और उस की औलाद कमज़ोर पैदा होती है और उस के बच्चे आए दिन बीमार रहते बल्कि कम उम्र में मर जाते हैं। ये आफ़त बाप की शरारत से औलाद में आती है और उस सज़ा के सिवा जो ऐसे लोगों पर खुदा से आने वाली है ये हरामकार लोग ऐसी दुनिया में अपना बहुत नुक़सान कर लेते हैं। अक्सर उन की नसलें मुनक़ते (खत्म) हो जाती हैं और उन के अब्बा का नसबी सिलसिला नेस्त व नाबूद हो जाता है।

इन लोगों में बाअज़ तो गरीब बदकार हैं जो बे तहज़ीब और जाहिल होते हैं। वो ज़्यादा रुस्वा और ख़वार हो जाते हैं। बाअज़ मुहज़ज़ब, जी इल्म और दौलतमंद बदकार हैं और वह कुछ संजीदगी और दानाई और सर्वत खुफियतन (छुपके) एसे काम किया करते हैं और वह उन गरीबों की निस्बत कुछ कम रुस्वा होते हैं तो भी ईलाही ग़ज़ब, आतिशक व कोढ़, कमज़ोरी नसल और इन्क़िता नसब (नसल ख़त्म होना) वगैरा आफ़ात में सब का बराबर हिस्सा है। बाअज़ दीनदारी के लिबास में छिप के ऐसे बदफ़ेलों के मुर्तकिब होते हैं वो सब से ज़्यादा बुरे हैं। ऐसों के हक़ में किसी शायर ने क्या ख़ूब कहा है।

लंबी डाड़ीयों पे ना जादिला ये सब आहूओं के हैं मुब्तला
ये शिकार करते हैं बरमला इन्हीं टीट्टियों की आड़ में
 (टीट्टी यानी आड़, पर्दा, लंबी डाड़ी)

ख़ुदा का बंदोबस्त जो इन्सान के लिए सरासर मुफ़ीद है इस बारे में यूं है कि जवान आदमी एक शादी करे और अपनी इस बीबी को जो मुनासिब तौर से इस ने पाई है मुहब्बत और इज़ज़त से रखे और उसी के साथ ज़िंदगी बसर करे। हाँ अगर दोनों में से एक मर जाये और दूसरा फिर शादी के लायक रहे। अगर वो चाहे तो फिर अपना बंद-ओ-बस्त पाक तौर पर कर ले ताकि गुनाह से बचे और इस कुक्वत को काबू में रखे। ख़ुदा से डरे और अपने बदन की भी हिफ़ाज़त करे और दानाई से रहे। ऐसा आदमी ख़ुदा से बरकत पाएगा। दुनिया में भी खुश रहेगा और आखिर को उस का भला होगा और इस की औलाद भी बहुत बीमारीयों से बची रहेगी। तमाम सच्चे मसीही ऐसा ही करते हैं।

2) **तमअ (लालच)** जिसको लालच कहते हैं असल इस की भी ख़ूब है और वह ये है कि आदमी अपनी हाजतों के रफ़ा करने में मुनासिब कोशिश करे और अपने आराम की चीज़ें तलाश करके, जायज़ तौर पर ले। अगर उसे हौका (यानी किसी चीज़ की बे-इंतिहा ख़्वाहिश) लग जाये तब वो तमअ और लालची है। उस की निगाह इन्साफ़ और हक़ पर नहीं रहती जिस क़द्र पाता है उस से सैर नहीं होता बल्कि ख़ुदा को छोड़ के ज़र-परसत हो जाता है। ऐसे आदमी का दिल हमेशा दुख में रहता है। अगर वो ऐसा ही मर गया तो ख़ुदा के ग़ज़ब की आग में चला जाएगा। तमअ (लालच) ख़्वाहिश हैवानी है। नफ़स-ए-नातिका की ये ख़्वाहिश नहीं है बल्कि उस के खिलाफ़ क़नाअत (जितना मिल जाए उस पर सब्र करना) नफ़स-ए-नातिका की ख़्वाहिश है जो निहायत अच्छी चीज़ है।

- 3) **हसद** क्या है? दूसरे शख्स के पास कोई अच्छी चीज़ देख के अपने दिल में जलना है। ये भी हैवानी ख्वाहिश है। तंग दिल लोगों में हसद बहुत होता है कुशादादिल लोग हसिद कम होते हैं। खैर ख्वाही और खैर अंदेशी और बिरादराना मुहब्बत जो नफ़स नातिक़ा की सिफ़तें हैं हसद उन के खिलाफ़ है।
- 4) **गरूर** ये ख्याल रखना कि मैं भी कुछ हूँ आप पर फ़रेफ़ता होना है और यह हैवानी सिफ़त है। हर एक सांड ये समझता है कि “हम चूमन दीगरे नेस्त” (फ़ारसी मिसाल-मेरी मिस्ल दूसरा नहीं) यही हाल अहले तकबुर का है कि अपने आपको बड़ा आदमी जानते हैं और दूसरे लोगों को जो खाकसार हैं हकीर समझते हैं। ये गरूर पैदा होता है। क़ौमी शराफ़त के ख्याल से और दौलतमंदी की वजह से और इल्मी लियाक़त से भी बल्कि बाअज़ दीनदारों में भी उन की दीनदारी उन की जान का वबाल हो जाती है जबकि उन में बजाय फ़िरोतनी (हलीमी) के गरूर पैदा होता है और वह समझते हैं कि मैं कुछ हूँ। सच्ची दीनदारी का फल ये है कि मैं कुछ नहीं हूँ लेकिन झूठी दीनदारी कहती है कि हाँ मैं कुछ हूँ। बाअज़ खुदा के बंदे क़ौम से भी शरीफ़ हैं, दौलतमंद और साहिबे इल्म भी हैं तो भी खाकसार फ़रोतन (हलीम) रहते हैं और गरूर को दिल में हरगिज़ जगह नहीं देते हैं।
- 5) **किना** कसी के साथ दिल में पोशीदा दुश्मन रखने का नाम “कीना” है। ये एक आग है जो आदमी के दिल में पोशीदा या दबी हुई रहती है और उसी के दिल को अंदर अंदर जलाती रहती है। फिर मौक़ा पाके भड़कती है ताकि उस को भी जला दे जिसकी निस्बत ये कीना है। ये भी हैवानी सिफ़त है। नफ़स-ए-नातिक़ा की ख्वाहिश ये है कि इन्सान का दिल सबकी तरफ़ से साफ़ हो। याद रखना चाहिए कि **कीना-वर आदमी मसीही नहीं हो सकता जब तक कि उस के दिल से कीना निकल ना जाये** और वह लोग जो मसीही कहलाते और दिलों में कीना रखते हैं वो अभी तक मौत में रहते हैं। मसीह की रूह उन में नहीं है और वह खुदा के सामने मसीही नहीं हैं।
- 6) **ग़ज़ब** यानी “गुस्सा” ये सिफ़त आम है। ये हैवानों में भी है और नफ़स नातिक़ा इन्सानी में भी है बल्कि खुदा में भी है कि वो शरीरों (बेदीनों) पर गुस्सा होता है और उन की शरारत के सबब से नाराज़ होके उन पर आफ़तें नाज़िल किया करता है और सब शरीरों (बेदीनो) को अबद तक अपने गुस्से के साये में रखेगा यही मुक़ाम दुख का है। मगर नादानी का गुस्सा और बेजा गुस्सा और हैवानियत के जोश का गुस्सा और जूद रन्जी का गुस्सा और बे हलिम गुस्सा मकरूह बल्कि हराम और खून रेज़ि के बराबर है। इसी से आदमी गुनाहगार होता है। हाँ दानिशमंदी और खैर-

अंदेशी के साथ इंतज़ाम के लिए जो गुस्सा है वो जायज़ और मुफ़ीद भी है चाहीए कि हम सब अपने गुस्सों को भी परखें।

- 7) **दुश्नाम दही** (دشنام دہی) यानी “गालियां बकना” या कुछ और बुरी बातें किसी की निस्बत मुँह से निकालना और कोसना या बददुआएं देना या अपने ऊपर आप या किसी ग़ैर पर लानत भेजना ये सब काम बुरे हैं और आदमीयों के दिलों पर अपने मुँह से चोट मारना है। ऐसी बातों से मालूम हो जाता है कि इस शख्स का दिल अंदर से नापाक है और वो बुरी बातें जो उस के मुँह से निकलती हैं उस के नापाक दिल की बदबू हैं और दिली बदबू उस के मुँह से बाहर आती है और सुनने वालों के मिज़ाज ख़राब करती है और उस आदमी की बेदीनी ज़ाहिर होती है। ये भी मालूम होता है कि उस शख्स के दिल में शैतान रहता है। वही उस के अंदर बैठा हुआ है जो ऐसी बुरी बातें बोलता है। खुदा ने उस के दिल को नहीं छुवा। उस की इबादात, नमाज़ (दुआ) और रोज़ा सब वाहीयात हैं। कुछ असर नेकी का उस के दिल पर नहीं हुआ है। सच्चे मसीही जिनके दिल पाक हैं ऐसे काम हरगिज़ नहीं करते। उन के अंदर से सिर्फ़ ख़ूबी निकलती है और ज़ाहिर करती है कि उनका दिल खुदा के साथ है। तालिबान-ए-हक़ को मालूम हो जाए कि वो जो हिंदूओं और मुसलमानों वग़ैरा में “बुजुर्ग” कहलाते हैं और मक़ताअ शक़ल रखते और हाथ में तस्बीह लेकर “सुब्हान-अल्लाह सुब्हान-अल्लाह” पढ़ा करते हैं जब उन के साथ तुम तन्हाई में होते हो और उन के मुँह से मसीहीयों वग़ैरा को गालियां निकालते सुनते हो तो मालूम कर जाओ कि वो किस किसम के आदमी हैं? और सच्चे मसीहीयों से भी रिफ़ाक़त करके मालूम करना कि उन के अंदर से दुश्मनों और मूज़ियों के लिए क्या निकलता है, महज़ ख़ैर अंदेशी और दुआ है। ये मसीही दीन की पाक तासीर है जो उन पर हुई है और वो जो उन ग़ैर-मज़हब के बुजुर्गों की कैफ़ीयत है वो भी उन के दीन की तासीर से है। इस से साबित कर सकते हो कि दीन ए हक़ की तासीर कैसी है?

- 8) **क़सम** इंसान को खुदा के सिवा ग़ैर शैय की क़सम खाना अक्लन व शरअन हराम है। वो जो कहा करते हैं कि मुझे अपने पीर की क़सम या अपने सर व जान व औलाद की क़सम वग़ैरा ये सब गुनाह करते हैं। बुत-परस्तों से ऐसी क़समों का रिवाज जारी हुआ है। वो जो ऐसी क़समें खाते हैं ज़ाहिर करते हैं कि ये चीज़ें उन्हें ज़्यादा प्यारी हैं और उन के गुमान में ये बड़ी चीज़ें भी हैं। लेकिन फ़िल-हक़ीक़त खुदा बड़ा है और वही सब चीज़ों से ज़्यादा महबूब होना चाहीए।

पस खुदा के सिवा ग़ैर चीज़ की क़सम खाना बेईमानी है और खुदा का हक़ ग़ैर को देना है। पस हासिल कलाम ये है कि सिर्फ़ खुदा की क़सम खाना चाहीए और सिवाए

खुदा के और किसी चीज़ की कसम खाना हराम और नाजायज़ है। लेकिन खुदा की कसम भी बार-बार खाना और उसे तकया कलाम बना रखना खुदा की बेइज़्जती और ठट्ठों में उड़ाना है और अपने आप को लोगों की नज़रों में बे-एतिबार करना है। सख्त ज़रूरत के वक़्त आदमी सच्चाई और संजीदगी से खुदा की कसम खा सकता है। वरना हर हाल में जब वो बोलता है तो उस की हाँ और नहीं बमंज़िला कसम के मोअतबर होना चाहिए।

फ) खुदा तआला ने भी अपने पाक कलाम में अब्रहाम व दाऊद से अपनी ज़ात-ए-पाक की कसम खा कर बात की है और वह बड़ी भारी बात थी। चुनान्चे तुम खुदा इस बयान को पैदाइश 22:16, ज़बूर 89:3 में देख सकते हो। कुरआन शरीफ़ ज़ाहिर करता है कि खुदा ने अपनी चंद मख्लूक चीज़ों की कसमें खाई हैं। हम समझते हैं कि ये बात खुदा की शान से बईद है कि वो इन मख्लूक चीज़ों की कसम खाए और उन फ़ानी चीज़ों को अपनी बात की सदाक़त में पेश करे। ये ख़याल जो कुरआन शरीफ़ में है इन्सान की तज्वीज़ है खुदा से नहीं है।

9) **गीबत** यानी पीठ पीछे लोगों के हक़ में बुरी बातें बोलना या उन की तहक़ीर करना, उन पर हँसना, उनका नुक़सान करना। ये बद् आदमी का काम है। भले लोग जैसे सामने होते हैं वैसे ही पीछे भी रहते हैं। ये ग़ीबत बड़ी फ़साद की सूरत है। ये कभी मख़फ़ी (छिपी) नहीं रहती। ज़ाहिर हो जाती है और उस के कान तक भी जा पहुँचती है जिसके हक़ में वो हुई। तब उस का दिल ख़राब हो जाता है और दुश्मनीयां पैदा होती हैं। वो जो ग़ीबत किया करता है दानिशमंदों की निगाह में हक़ीर है। वो खुद उस से नफ़रत करने लगते हैं। इस ख़याल से कि ये आदमी उस शख़्स की ग़ीबत हमारे सामने करता है हमारी ग़ीबत कहीं और जा कर करेगा। ये नालायक़ है इस से होशयार रहना चाहिए। पस ग़ीबत से क्या होता है? अपने भाई का नुक़सान, खुदा का गुनाह और दानिशमंदों के सामने खुद ज़लील होना है। इसलिए मुनासिब है कि कोई किसी की ग़ीबत ना करे बल्कि जो कुछ कहना हो उस के मुँह पर साफ़ साफ़ कहे। ये सफ़ाई की बात है और उस का जवाब भी उस से सुने। शरीरों (बेदीनो) की मजलिसों में ग़ीबत करने वाले और ग़ीबत सुनने वाले लोग अक्सर जमा हुआ करते हैं और इस किस्म के बहुत चर्चे वहाँ होते हैं। बाअज़ लोगों को ग़ीबत सुनने में और बाअज़ को ग़ीबत करने में मज़ा आता है। इस का सबब यही है कि उन के दिलों में शैतान रहता है।

10) **निफ़ाक़** इस लफ़्ज़ के मअनी हैं “बज़ाहिर दोस्ती और ब-बातिन दुश्मनी।” ख़ालिस दोस्ती की ख़ुशबू और निफ़ाकी दोस्ती की बदबू हरगिज़ छिपी नहीं रहती। मैं अपने उन दोस्तों को ख़ूब पहचानता हूँ जो मुझसे ख़ालिस दोस्ती रखते हैं और उन को भी नाम बनाम जानता हूँ जो मुझसे निफ़ाकी मुहब्बत रखते हैं और यह मैंने क्योंकर जाना है सिर्फ़ इसी से कि बाअज़ की दोस्ती में से ख़ुलूस की और पाक नीयत की ख़ुशबू दिमाग़ तक पहुंची है और बाअज़ की दोस्ती में से निफ़ाक़ की बू आ गई है। तब मैं भी उन की तरफ़ से होशयार हो गया हूँ। उन के लिए दुआ करता हूँ कि ख़ुदा उन के दिलों को पाक करे और उन के फंदों से बचने के लिए हर वक़्त होशयार रहता हूँ और मैं ख़याल करता हूँ कि और लोग भी इस तरह अपने ख़ालिस और निफ़ाकी दोस्तों को पहचानते होंगे। निफ़ाकी दोस्त दुश्मनों से ज़्यादा बुरे हैं और बड़े नुक़सान का बाइस हैं। चाहिए कि कोई आदमी अपनी रूह में निफ़ाक़ को जगह ना दे।

11) **बद-गुमानी, बद-गोई**, इज़ा रसानी, इल्ज़ाम लगाना, बेहयाई, बददियानती, बेईमानी, बिसयारखोरी (बिसयारखोर-बहुत खाने वाला, पेट), बातिल अकाइद, बुत-परस्ती, कब्र परस्ती, पीर-परस्ती, बे-इंसाफी, तास्सुब, ख़ुसूमत (अदावत-दुश्मनी), खुदगरज़ी, दुज़दी (चोरी), दारोग-गोई, दगा, रियाकारी, शराबखोरी, सुस्ती, जुल्म, अय्याशी, नाशुक्री, ना-फ़रमानी वगैरा। ये सब काम ग़लबा हैवानियत के सबब से होते हैं जबकि नफ़स-ए-नातिक़ा अपना काम पस अंदाख़्त करके रूह हैवानी का मुतीअ हो जाता है। ये सब जिस्म के काम कहलाते हैं। ये रूह के काम नहीं हैं और रूह इन्सानी जब जिस्म की ताबे हो रहती है तो इन सब कामों से वो मलामत के लायक़ ठहरती है।

दफ़ाअ 24

इन्सानी जिस्म के नामों का बयान

तमाम दुनिया की ज़बानों में जिस्म के कुछ ऐसे नाम मिलते हैं जो रूह इन्सानी को जिस्म से जुदा ज़ाहिर करते हैं और यह बात भी गौरतलब है कलाम-उल्लाह में इन्सानी जिस्म के लिए छः नाम मज़कूर हैं। पैदाइश 2:7 में जिस्म को “मिट्टी”, अय्यूब 4:19 में उसे “मिट्टी का मकान”, अय्यूब 10:11 में जिस्म को “चमड़ा, गोश्त”, हड्डी

और नसें”, 2 कुरंथियो 5:1 में जिस्म को “खेमे का घर”, 2 कुरंथियो 4:7 में जिस्म को “मिट्टी का बर्तन”, 2 पतरस 1:13 में उसे “खेमा” बयान किया गया है। इन नामों में बदन को “मकान” और रूह को “मकी” ज़ाहिर किया है जिससे बदन और रूह में साफ़ साफ़ फ़र्क़ दिखाया गया है। फिर जब रूह बदन से निकल जाती है तो इस जिस्म का नाम “लाश” होता है और लफ़ज़ “लाश” की असल “लाशी” यानी “कुछ चीज़ नहीं है।” क्योंकि शैय वही थी जो उस में से निकल के चली गई है।

दफ़ाअ 25

रूह इन्सानी की सिफ़ात के बयान में

अम्साल 20:27 में “आदमी की रूह (ज़मीर)” को “खुदावन्द का चिराग़” कहा गया है क्योंकि इस तमाम कारखाना बदनी में रोशनी बख़्श चीज़ रूह है। मत्ती 6:23 में खुदावन्द मसीह ने फ़रमाया है कि “....अगर वो रोशनी जो तुझमें है तारीकी हो जाए तो कैसी तारीकी ठहरेगी।” ये उसी रुहानी रोशनी का ज़िक्र है। 1 कुरंथियो 2:11 में लिखा है कि “क्योंकि इन्सानों में से कौन किसी इन्सान की बातें जानता है सिवाए इन्सान की अपनी रूह के जो उस में है? इसी तरह खुदा कि रूह के सिवा कोई खुदा की बातें नहीं जानता।” पस इन्सानी रूह में इल्मी रोशनी है अपनी निस्बत।

तब ये रूह इन्सानी एक रोशनी सी है जिसमें ज़िंदगी है और उस में हिस्स (حس), इदराक (أدراك), इरादा और कुव्वत भी एक हद में है। मसनूआत (موضوعات) की तरफ़ देख के रूह इन्सानी जो सानेअ (صانع) का सुराग़ लगाती है। इस का यही सबब है कि उस में खुदा की तरफ़ से ये इस्तिदाद (सलाहियत) रखी हुई है। रोमीयों 1:20 में लिखा है कि “उस की अनदेखी सिफ़तें यानी उस की अज़ली कुदरत और उलूहियत दुनिया की पैदाइश के वक़्त से बनाई हुई चीज़ों के ज़रीये से मालूम हो कर साफ़ नज़र आती हैं। यहां तक कि उन को कुछ उज़्र बाकी नहीं।” ये इल्म किस को हासिल होता है “इन्सान की रूह” को? नोहा 3:24 में है कि “मेरी रूह कहती है कि खुदावन्द मेरा हिस्सा है।” वो ऐसा क्यों कहती है? इदराक के सबब से और उस की खास मेहरबानी अपनी तरफ़ मालूम करके। आस्तर 4:14 में बयान है कि “....खलासी और नजात यहूदीयों के लिए किसी और जगह से आएगी।” ये कौन कहता था? उस की इन्सानी रूह, उस इदराकी इस्तिदाद (सलाहियत) से जो उस में थी। ज़बूर 139:14 में ज़बूर नवेस कहता है कि “....मेरा दिल उसे ख़ूब जानता है।” ये यक़ीन क्योंकि पैदा हुआ? रूही इदराक से। अम्साल 23:3 में “दगा के खाने” का बयान है और अम्साल 6:30 में

“भूके चोर को हकीर ना जानना” लिखा हुआ है। ये सब हिदायतें रूही इस्तिदाद (सलाहियत) इदराकी से हैं। फिर हम देखते हैं कि इन्सान की रूह नेकी पर आफरीन और बदी पर नफरीन (मज़म्मत) करती है, जुल्म से ईज़ा पाती है, इन्साफ़ से खुश होती है और फ़ानी खुशी से आसूदा नहीं होती। ये सब कुछ उस की ज़ाती इस्तिदाद (सलाहियत) के सबब है।

दफ़ाअ 26

इन्सानी रूह गैर-फ़ानी है

इब्रानियों 12:9 में लिखा है कि खुदा “रूहों का बाप” है। ज़करीयाह 12:1 में है कि “खुदावंद इन्सान के अंदर उस की रूह पैदा करता है।” गिनती 16:22 में लिखा है कि “खुदा सब बशर की रूहों का खुदा है।” इसी तरह के बहुत से और हवालेजात में भी बयान है कि इन्सानी रूह खुदा की तरफ़ से है और उसी की तरफ़ वापिस लौट जाती है मसलन “जानें जो मैंने बनाएँ” (यसअयाह 57:16), “तू इन का दम रोक लेता है और ये मर जाते हैं।” (ज़बूर 104:29:), “वो अपनी रूह और अपने दम को वापिस ले ले। तो तमाम बशर इकट्ठे फ़ना हो जाएंगे।” (अय्यूब 34:14-15), “उस वक़्त खाक खाक से जा मिलेगी जिस तरह पहले मिली हुई थी और रूह खुदा के पास लौट जाएगी जिसने उसे दिया था।” (वाइज़ 12:7)

इन आयतों से ये बात साबित है कि इन्सान की रूह में और खुदा में एक खास किस्म का इलाका है और कि जब इन्सान मर जाता है तो इस का बदन खाक में मिल जाता है और उस की रूह अल्लाह के पास चली जाती है नेस्त नहीं हो जाती।

दफ़ाअ 27

इन्सान की रूह मजबूर नहीं आज़ाद है

पैदाइश 3:22 में लिखा है “...ऐसा ना हो कि वो अपना हाथ बढ़ाए और हयात के दरख्त से भी कुछ ले कर खाए और हमेशा जीता रहे।” क्योंकि आदम मजबूर ना था। वो इरादे और फ़ैअल (अमल करने) में आज़ाद था। बाइबल मुकद्दस के बेशतर हवालेजात से इन्सान की इस आज़ादी का सबूत मिलता है। 1 पतरस 2:16 में लिखा है कि “और अपने आप को आज़ाद जानो मगर इस आज़ादी को बदी का पर्दा ना

बनाओ।” ज़बूर 110:3 में है कि “लश्कर कुशी के दिन तेरे लोग खुशी से अपने आपको पेश हैं।” “अपनी मुस्तइद रूह से मुझे सँभाल।” (ज़बूर 51:12) “जहां कहीं खुदावन्द का रूह है वहां आज़ादी है।” (2 कुरंथियो 3:17) मेरी रूह इन्सान के साथ हमेशा मुज़ाहमत ना करती रहेगी।” (पैदाइश 6:1-4) इसलिए कि वो आज़ाद है और कभी कभी अल्लाह की रूह की हिदायत को भी नहीं मानता और अपने मन्सूबों की तरफ जाता है। ये सज़ा और जज़ा इसी आज़ादी पर मुरत्तिब है और गुनाहों पर मलामत का और हिदायत का तरीका इसी सबब से जारी है कि आदमी आज़ाद पैदा हुए हैं। वो हरगिज़ किसी तक्दीर के मज्बूर नहीं हैं। और खुदा की मर्ज़ी ये है कि सब आदमी अपनी आज़ादी के साथ अपनी खुशी से इस के ताबेअ फ़रमान हों।

(फ) जिस खुदा ने आदमीयों को आज़ाद पैदा किया क्या अक्ल मानती है कि उस की तरफ से कोई जबरी शराअ आदमीयों के लिए निकले कि ज़रूर कलिमा पढ़ो या जज़िया दो या मारे जाओ?

दफ़ाअ 28

रूह इन्सानी में हमेशा दो तरफ़ा तवज्जा है

हर आदमी अपने आपको एक शख्स मौजूद समझता है और मैं बोलता है और दुनिया की चीज़ों की तरफ भी मुतवज्जा होता है। इस के साथ वो ये भी जानता है कि मैं यक्रीनन कायम-बिल-ज़ात नहीं हूँ। किसी दूसरे के हाथ में मेरी ज़िंदगी है और यह दूसरा वही है जो कायम-बिल-ज़ात और जहान का मालिक है। पस इन्सानी रूह हर दो तरफ़ देखती है। अपनी तरफ़ और खुदा की तरफ़ और उस की ये दोनों तोजिहात उस की ज़ाती खसलतें हैं।

दफ़ाअ 29

इन्साऩी रूह जब गुनाह में है, मुर्दा है, मसीह उसे ज़िलाता है

ऐसा “मुर्दा” नहीं कि बे-हिस व हरकत मिस्ल लाश के हो मगर मौत के साये में है और मौत का ज़हर उसे चढ़ा हुआ है। इसी लिए ख़ुदा के कलाम में बे ईमानों और बदकिर्दारों को “मुर्दा” कहा गया है। “यसूअ ने उस से कहा तू मेरे पीछे चल और मुर्दों को अपने मुर्दे दफ़न करने दे।” (मत्ती 8:22) और उस ने तुम्हें भी ज़िंदा किया जब अपने कुसूरों और गुनाहों के सबब से मुर्दा थे।” (इफ़िसियों 2:1), “जब कुसूरों के सबब से मुर्दा ही थे तो हमको मसीह के साथ ज़िंदा किया।” (आयत 5) “...ऐ सोने वाले जाग और मुर्दों में से जी उठ।” (इफ़िसियों 5:14), “...गुनाह के सबब से मौत आई और यूँ मौत सब आदमीयों में फैल गई इसलिए कि सबने गुनाह किया।” (रोमीयों 5:12), “जिस्मानी मिजाज़ मौत है।” (रोमीयों 8:6)

ये मुर्दा रूहें जब तक कि आदमीयों के बदनों में हैं उनका इलाज हो सकता है कि मौत उनमें से निकल जाये और ज़िंदगी आ जाए और फिर वो अबद तक ज़िंदा रहें। लेकिन ये काम सिर्फ़ यसूअ मसीह से और उस की रूह से होता है और यही बात मसीही दीन की बड़ी फ़ज़ीलत है। दुनिया में और कोई तदबीर दफ़ाअ मौत के लिए नहीं है मगर सिर्फ़ यसूअ मसीह का नाम है जिस से लाखों करोड़ों आदमीयों की रूहों में से मौत निकल गई है और ज़िंदगी आ गई है।

जब सच्चे मसीही बनते हैं तब गुनाह दिल में से निकलता है और मौत रूह में से निकलती है। अंधेरा दफ़ाअ होता है और गुनाह का वबाल मसीही कफ़फ़ारे से जाता रहता है और जब फ़र्माबरदार होके मसीह के पीछे हो लेते हैं तब उस के नूर से मुनव्वर होते हैं और मसीह की रूह से हमारी रूहों में ज़िंदगी आ जाती है। तब हम ख़ुदा की इबादत रूह और रास्ती से करते हैं। (युहन्ना 4:24)

तो भी जब तक दुनिया में हैं जिस्म फ़ानी में और जंग रुहानी में फंसी हैं। लेकिन दिलों और खयालों में रोशनी और आनंद है। आइन्दा को फ़रिश्तों की मानिंद होंगे। (लूका 20:36) बक्का और जलाल और कुदरत और रुहानी जिस्म ख़ुदा से पाएँगे। फ़ना और हक्कारत नातवानी और नफ़सानियत जाती रहेगी। (1 कुरंथियो 15:42-44)

बल्कि हम मसीह की मानिंद होंगे। (1 युहन्ना 3:2) खुदा के बेटे के हम-शक्ल होंगे (रोमीयों 8:29), आस्मानी सूरत पाएँगे। (1 कुरंथियो 15:49), हमारे खाकी बदन भी उस के जलाली जिस्म की मानिंद होंगे। (फिलिप्पियों 3:21) और हम जलाल में ज़ाहिर होंगे। (कुलुसियों 3:4)

इन बातों का यकीन हमें इसलिए है कि हमने मसीह से अपनी रूहों में इस वक़्त बतौर बयाना के कुछ पाया है। और कि हम मसीह को पहचान गए कि वो कौन है? और कि उसकी कुव्वत से भी आगाह हो गए हैं और उस का कलाम हक़ साबित हो चुका है और जब कि ये सब बातें उमूर वाक़ई हैं तो साबित है कि हमारी रूहों की असलीयत मल्की है कि हम अपनी तकमील फ़रिश्तों की मानिंद होने में देखते हैं।

दफ़ाअ 30

आदमीयों की रूहों पर कुछ अंधेरा सा है जिसके मखरज हैं

ना सब आदमीयों की रूहों पर मगर अक्सरों की रूहों पर। हाँ वो जो अब मुनव्वर नज़र आते हैं पहले उन की रूहों पर भी अंधेरा था। उन को मसीह ने अब रोशन किया है। इस में कुछ शक नहीं कि बहुत सी रूहों में अंधेरा है। लेकिन ये अंधेरा कहाँ से आ गया है? ये काबिल-ए-गौर है।

अव्वलन ये देखते हैं कि आदमी के अंदर से अंधेरा निकलता है। जब आदमी अपनी ख्वाहिशों और बद मन्सूबों और खुद-गर्जियों वगैरा का मग़लूब हो के बुरे काम करता है तो ये अंधेरा उसी के अंदर से निकलता है। “...क्योंकि उन्होंने अपने ग़ज़ब में एक मर्द को क़त्ल किया। और अपनी खुद-राई से बैलों की कोंचें काटीं।” (पैदाइश 49: 6) “...और अपनी जान से कहूँगा ऐ जान ! तेरे पास बहुत बरसों के लिए बहुत सा माल जमा है। चैन कर और खा पी खुश रह।” (लूका 12:19) देखो ये सब अंधेरे की बातें हैं और इन्सान के अंदर से निकलती हैं।

सानियन खारिज में बहकाने वाले भी हैं। शरीर (बुरे) दोस्त, बदकार हम-नशीन और बद नमूने जो दुनिया में नज़र आते हैं अंधेरे का बाइस हैं।

सालसन एक और पोशीदा बदरुह है जो इन्सान की दुश्मन है जिसने हव्वा को बहकाया था। (पैदाइश 3:13) और यही बदरुह इन्सान पर गालिब आके दुनिया में ऐसी मुसल्लत हो गई है कि मसीह ने उसे इस “जहान का सरदार” और पौलुस रसूल ने उसे इस “जहान का खुदा” कहा है। क्योंकि वो बद-इरादे लोगों के दिलों में पैदा करता है और बहुतों से अपनी परस्तिश कराता है। उस का नाम शैतान है। उस ने बहुत सा अंधेरा लोगों की रूहों में डाल रखा है। इंजील शरीफ में लिखा है “यानी उन बेईमानों के वास्ते जिनकी अक़लों को इस जहान के खुदा ने अंधा कर दिया है ताकि मसीह जो खुदा की सूरत है उस के जलाल की खुशखबरी की रोशनी उन पर ना पड़े।”(2 कुरंथियो 4:4) वो लालच देता है और बातिन में तासीर करता है। (मत्ती 4:8)

राबिअन जब आदमी गुनाह पर गुनाह करता चला जाता है और खुदा की हिदायतों के ताबेअ नहीं होता है तब एक वक़्त ऐसा आ जाता है कि खुदा उस आदमी को छोड़ देता है। मेहरबानी और फ़ज़ल को उस की तरफ़ से हटा लेता है। तब उस आदमी के दिल पर बड़ा अंधेरा सा आ जाता है और वह संगदिल हो जाता है। यहां तक कि हलाक हो जाए। फिरऔन और हबों का हाल ऐसा ही हुआ और हर ज़माने में गर्दनकश शरीर जो खुदा की तरफ़ आना नहीं चाहते और हमेशा हिदायत ईलाही की तहक़ीर करते और बजाय ईलाही हिदायतों के अपने दिल से ख़्याल निकालते हैं और झूटी राहों के हिमायती हो रहते हैं। इसी तरह खुदा से छोड़े जाते हैं और फिरऔन के सामान हो के मरते हैं। हमारे देखते देखते कई एक हमारे दोस्त खुदा से छोड़े गए। उन की तरफ़ से रोशनी हट गई और वह सख़्त तारीकी में फंस के हलाक हो गए। इसलिए मुनासिब और फ़र्ज़ है कि हम इन अंधेरे के चार मखरजों से खबरदार हैं।

दफ़ाअ 31

खुदा तआला हमारा निशाना है

यानी वो चीज़ जिसकी तरफ़ आदमीयों को हमेशा ताकना चाहिए कि उस की मुशाबहत होके अपने कमाल को पहुँचें खुदा तआला है और उस से हमारी रूहों की शान ज़ाहिर होती है कि वो किस रुबे की हैं? अगरचे खुदा तआला के काम दुनिया में कुछ नज़र आते हैं मगर उस की ज़ात-ए-पाक ग़ैर मुरे या नादीदनी है। यसूअ मसीह खुदा की सूरत है। वो नादीदा (अनदेखे) खुदा को अपनी ज़ात में दिखाता है और यूँ हिदायत करता है कि “तुम कामिल हो जैसा तुम्हारा आस्मानी बाप कामिल है।” (मत्ती 5:48) आदमी इस से कामिल होता है कि खुदा की सिफ़तों का मज़हर बने। इस तरह से कि

खुदा की तरफ बदिल व जान मुतवज्जा हो और अपने मिजाज को उस के मिजाज के मुशाबहा करने में कोशिश करे। खुदा नेक, पाक, हलीम, साबिर, बुर्दबार, गयूर, रहीम, मुंसिफ और आदिल वगैरा सिफतों के साथ मौसूफ है और यह सब सिफतें कामिल तौर पर इस में हैं और यही सिफात हैं जिनसे आदमी लायक होता है। अगर ये सिफतें इन्सान में ना हों तो वो आदमी बड़ा नालायक और नफरती होता है। इस बयान से समझ लो कि हमारी रूहों में और खुदा में क्या इलाका है? लेकिन इस बात का लुत्फ इन्सान पर उस वक्त खुलता है कि वो गुनाह के नशे से होश में आता है। तब कहता है कि मैं अपने बाप के पास जाऊँगा। (लूका 15:17-18) कलाम-उल्लाह में खुदा तआला की निस्बत तीन खास बातों का जिक्र है :-

अव्वल खुदा रूह है। (युहन्ना 4:24)

दोम खुदा नूर है और उस में तारीकी ज़रा भर भी नहीं। (1 युहन्ना 1:5)

सोम खुदा मुहब्बत है। (1 युहन्ना 4:16)

और इन्सान के आला फ़राइज़ भी यही तीन हैं कि आदमी अपनी रूह से खुदा के सामने झुके और ईलाही नूर की रोशनी में चले फिरे और यह कि खुदा की मुहब्बत और बिरादराना मुहब्बत के अहाता में हर वक्त रहे। इस का हासिल ये है कि वो जो खुदा तआला की खास खूबी है उसी में कायम रहना इन्सान की खूबी है।

एक किस्म के आदमी हैं जिनको कलाम-ए-खुदा में “खुदा” कहा गया है मजाज़न देखो। ज़बूर 83:6 “मैंने कहा था कि तुम खुदा हो।” युहन्ना 10:34-35 में लिखा है कि “.....मैं ने कहा कि तुम खुदा हो? जब कि उस ने उन्हें खुदा कहा जिनके पास खुदा का कलाम आया।” ये वही कलाम है जिसका जिक्र युहन्ना 1:1 में है कि “इब्तिदा में कलाम था और कलाम खुदा के साथ था और कलाम खुदा था।” ये यसूअ मसीह की निस्बत लिखा है जो मुजस्सम होके जाहिर है। वो अनदेखे खुदा की सूरत है। जब वो आदमी के दिल में आता है तो आदमी को खुदा की सूरत में और ईलाही तबीयत और मिजाज में लाता है और आदमी इतना बड़ा खिताब पाते हैं। बाइबल की इबारत को जो “कलाम-उल्लाह” कहा गया है इसलिए कहा गया है कि वो उस का कलाम है। (युहन्ना 14:23) और यह ज़िंदगी का कलाम है जो उसी से आता है और जब ये इबारती कलाम दिल में आता है, तो वो आता है, जिसका वो कलाम है। आदमी जो पैदा होता है रुहानी नहीं बल्कि जिस्मानी पैदा होता है। फिर एक खास वक्त बाअज़ आदमीयों पर ऐसा आता है कि वो जिस्मानी से रुहानी हो जाते हैं जबकि तौलीद जदीद उन की रूहों में होती है। (1 कुरंथियो 15:45-46) और जब ये होता है तो इन्सान की रूह मौत से गुजर के ज़िंदगी में आ जाती है। (1 युहन्ना 3:14)

दफ़ाअ 32

नींद और गन्दगी के बयान में

नींद एक हालत है हर एक हैवान को आरिज़ होती है। उस में ये सब हवास कुछ मुअत्तल से हो जाते हैं और गैर ज़रूरी हरकात छोड़ देते हैं सिर्फ़ ज़रूरी हरकतें मसलन सांस लेना वगैरा कायम रहते हैं। क्योंकि थकान के सबब से लतीफ़ अबखरे (बुखार की जमा - बुखारात, भाप) दिमाग़ में घुस जाते हैं और हैवानी रूह को ऐसा ग़लीज़ करते हैं कि वो पट्टों में नहीं बहती। जब तक कि नींद का वक़्त पूरा ना हो जाए या वह आदमी सदमात सख़्त से जगाया ना जाये। नींद सेहत के लिए मुफ़ीद है अगर अपनी हद में हो इस से हैवान तर-ओ-ताज़ा होके फिर उठता है।

“गन्दगी” या “नवम मतमलमल” (نوم متملل) एक और हालत है जो नींद और बेदारी के दर्मियान होती है जिसमें हैवान कुछ सोता है कुछ जागता है। नींद को तशबीयन मौत की छोटी बहन समझना चाहिए। बड़ी बहन मौत है जिसमें तमाम कारख़ाना उलट पुलट हो जाता है। रोज़ रोज़ सोना और फिर जागना मर के जी उठने का एक नमूना सा है।

दफ़ाअ 33

ख़्वाब के बयान में

कभी-कभी सोते वक़्त आदमी कुछ देखते हैं या उन्हें कुछ मालूम होता है और जब जागते हैं तो कहते हैं कि हमने ये ख़्वाब देखा। ये तो सच्य है कि उन्होंने ख़्वाब देखा। मगर वाक़ियात के तजुर्बी से मालूम हुआ है कि ये ख़्वाब कई तौर पर हुआ करते हैं। चाहिए कि हम ख़्वाबों की किस्मों से भी आगाह हो जाएं। अक्वल “अज़्गास-ए-अहलाम” (أضغاث أحلام) (परेशान ख़्वाब जिनकी कोई ताबीर हो) हैं। इस लफ़ज़ के मअनी हैं “सूखे घास के मट्टे” ख़्वाबों के ये वो वाहीयात परेशान ख़्वाब हैं जो मेअदा (पेट) की ख़राबी से नज़र आते हैं जब कि पेट में कब्ज़ है या कोई ऐसी गिज़ा खाई है जिससे ख़राब अबखरे दिमाग़ की तरफ़ चढ़े हैं। या वो शख्स अपनी बदनी कैफ़ीयत और दिमागी वहमी ख़यालात के मुवाफ़िक़ कुछ देखता है मसलन दमवी मिज़ाज (वो शख्स जिसमें खून की खिलत बढ़ जाये) आदमी अक्सर ख़्वाब में सुर्ख रंग की चीज़ें देखता है और सिफ़रवाई मिज़ाज (तलख मिज़ाज) को आग व अंगारे नज़र आते हैं। और जब रिह

(मादा की हवा, पेट की गैस) का गलबा है और मिज़ाज में कुछ बादी है तब देखता है कि गोया हवा में उड़ता हूँ और अहमक समझ लेता है कि मैं शायद वली अल्लाह हो गया हूँ। सौदावी मिज़ाज (जुनूनी आदमी) को पहाड़ धुंए के गुबार नज़र आते हैं और बलगमी मिज़ाज (वो शख्स जिसमें बलगमी खलत ज्यादा हो, मोटा) को पानी की नहरें और बारिश और सफ़ेद रंग की चीज़ें दिखाई देती हैं।

कभी-कभी ऐसा होता है कि दो या चंद कैफ़ीयतों में तरकीब हो जाती है। नफ़सानी ख्वाहिशें और रूह की बुरी कैफ़ीयत और बदनी अमराज़ वग़ैरा मिल के अजीब शक़्लें पैदा करते हैं। ये सब वाहीयात ख़्वाब हैं और ख़ुदा के कलाम में इन ख़्वाबों को नाचीज़ बताया गया है। भूका और प्यासा आदमी ख़्वाब देखता है कि खाता और पीता हूँ। (यसअयाह 29:8) “क्योंकि ख़्वाबों की ज़्यादती और बतालत और बातों की कस्रत से ऐसा होता है लेकिन तू ख़ुदा से डर।” (वाइज़ 5:7)

(फ) वो जो दानिशमंद आदमी है वो ख़्वाबों के वसीले से अपनी अंदरूनी बिगड़ी हुई कैफ़ीयत से ख़बरदार होके सेहत और सफ़ाई के दरपे होता है और मिज़ाज को एतिदाल पर लाने की जुलाबों वग़ैरा से कोशिश करता है। लेकिन बेवकूफ़ आदमी कभी कभी ऐसे ख़्वाबों का मुअतकिद (अक़ीदतमंद) होके अपने दीन का और दुनिया का भी नुक़सान कर लेता है।

बाअज़ वक़्त वो मशाइख़ जो खुलूस से बेबहरा (अन्जान) हैं और दीनदारी के लिबास में होके दुनिया कमाते हैं। कहते हैं कि आज हमने एक ख़्वाब देखा उस की ताबीर ये है कि यूं यूं होगा। और ऐसे लोग ना सिर्फ़ बातिल मज़हबों के मशाइख़ों में हैं बल्कि ख़ुदा की जमाअत के दर्मियान भी होते हैं। उनकी शिकायत ख़ुदा तआला ने अपने कलाम में यूं की है “ख़ुदावंद फ़रमाता है कि देख मैं उनका मुख़ालिफ़ हूँ जो झूटे ख़्वाबों को नबुव्वत कहते और बयान करते हैं और अपनी झूटी बातों से और लाफ़ ज़नी से मेरे लोगों को गुमराह करते हैं।” (यरमयाह 23:32) यरमयाह 29:8 में है कि अपने ख़्वाब बीनों को जो तुम्हारे ही कहने से ख़्वाब देखते हैं मत मानो।

इन झूटे और वाहीयात ख़्वाबों का ज़िक्र सुनके ये ना समझना चाहिए कि ख़्वाब मुतलक़ ग़लत और बातिल ही होते हैं। ऐसी बात हरगिज़ नहीं है बल्कि **वोह जो हकीकी ख़्वाब हैं और ख़ुदा की तरफ़ से बाअज़ आदमीयों की रूहों पर ज़ाहिर होते हैं बरहक़ और रास्त हैं।** मुहम्मदी लोग इन को मुबशरात कहते हैं। उनमें ये खुसूसीयत नहीं है कि सिर्फ़ नेक और ख़ुदा-परस्त दीनदार और बा-ईमान आदमी ही देखते हैं बल्कि काफ़िर और बुत-परस्त भी कभी-कभी सच्चे ख़्वाब देखते हैं। देखो फिरऔन और नबुकदनज़र ने भी जो बुत-परस्त लोग थे सच्चे ख़्वाब देखते हैं। और

फिरऔन के नानपज़ और साक्री ने भी जो देखा था सच्य था। (पैदाइश 40:8-20, 41:1-8, दानीएल बाब 2) नबूकदनज़र के ख़्वाब का बयान कैसी ताज्जुब की बात है कि दानीएल ने उस का ख़्वाब भी बताया और ताबीर भी कही और वैसे ही ज़हूर में आया। अब कौन कह सकता है कि वो ख़्वाब ना था ख़्याल था? फिर देखो एक आदमी बुत-परस्त पीलातुस की ज़ौजा (बीवी) ने जो अदालत के वक़्त अपने शौहर के पास यसूअ मसीह ख़ुदावन्द की निस्बत अपने ख़्वाब की ख़बर पहुंचाई कैसी सहीह ख़बर थी? (मत्ती 27:19) दुनिया में सचचे ख़्वाबों का वजूद भी ज़रूर पाया जाता है। बाअज़ लोग अपने सचची ख़्वाबों के ऐसे मुअतकिद (अक्रीदतमंद) मिलेंगे कि इन के इस एतिक़ाद को कोई फिलासफ़र हरगिज़ हटा ना सकेगा। वो कहेंगे कि अलबत्ता दुनिया में बातिल ख़्वाब ख़्याल भी होते हैं मगर हमारा फ़ुलां ख़्वाब ज़रूर सच्चा था। पस अगरचे उस का वो ख़्वाब सच्चा हो लेकिन ग़ैर शख़्स के लिए वो सनदी बात नहीं हो सकती है। अगर कुछ सनदी बात है तो उसी के लिए है जिसने वो ख़्वाब देखा है। क्योंकि बाज़-औक़ात आइन्दा वाक़िया का अक्स हो सकता है कि किसी आदमी के दिल पर गिरे और मुदब्बिर आलम के इरादे से गिरे जबकि ख़ुदा कोई बात किसी पर ज़ाहिर करना चाहे।

लेकिन आदमीयों की नजात के बारे में जो ताअलीम ज़रूरी थी वो सब पैगम्बरों और साहिबाने इल्हाम के वसीले से बाइबल शरीफ़ में ख़ुदा की तरफ़ से बयान हो चुकी है और कामिल सबूत को पहुंच गई है और यह काम ख़त्म हो गया है। अब जो कुछ इस बारे में कोई आदमी बाइबल के खिलाफ़ कहेगा वो हरगिज़ ख़ुदा से ना होगा। “अगर हम या आस्मान से कोई फ़रिश्ता सिवाए इस इंजील के जो हमने सुनाई दूसरी इंजील तुम्हें सुनाए सो मलऊन हो।” (गलतियों 1:8)

ये और बात है कि कोई कहे मैंने एक ख़्वाब देखा है फ़ुलां शख़्स पर कोई आफ़त या बरकत आती हुई नज़र आती है। हम कह सकते हैं कि शायद ऐसा हो देखा जाएगा। जब वैसा हो तो कह सकते हैं कि तुम्हारा ख़्वाब सच्चा था। लेकिन हमें और तुम्हें दोनों को कलाम-उल्लाह का मुतीअ (फ़र्माबरदार) होना ज़रूर है ना ख़्वाब ख़्यालों का।

दफ़ाअ 34

पैगम्बरों और मोमिनीन के ख़्वाब का बयान

चूँकि ये लोग भी इन्सान हैं। उन्हें भी बदहज़मी और बीमारी वगैरा अस्बाब से बातिल ख़्याल आ सकते हैं और आते भी हैं। मगर उन लोगों के वो ख़ास ख़ास ख़्वाब जो कलाम-उल्लाह में मज़कूर हैं इल्हाम की किस्म से हैं। इसलिए उन की उन ख़्वाबों को हकीकी ख़्वाब मानना वाजिब है।

देखो क्या लिखा है “ख़्वाब में रात की रोया में जब लोगों को गहिरी नींद आती है और बिस्तर पर सोते हैं उस वक़्त, तब वो लोगों के कान खोलता है और उनकी ताअलीम पर मुहर लगाता है।” (अय्यूब 33: 15-16)

अब सोचिए कि ये ताअलीम दुरुस्त है या नहीं। तजुर्बे से यकीन है कि दुरुस्त है। उस वक़्त आदमी के हवास मुअत्तल से होते हैं तो भी उस की रूह कुछ सुनती, कुछ देखती, कुछ सीखती है। अगर रूह इन्सानी एक मुस्तक़िल जोहर ना होता तो ऐसा मुआमला किस तरह हो सकता था?

(अय्यूब 4:12-21 पढ़ो) देखो जब वो सोता था और आँखें बंद थीं हवास मुअत्तल थे तब उस की रूह ने एक और रूह को देखा और उस से मुतास्सिर हुई और एक आवाज़ भी सुनी इस हालत में जो देखना और सुनना हुआ नफ़स-ए-नातिका से बिला तवस्सुत हवास ज़ाहिरी के हुआ। (गिनती 12:6-9) ख़ुदा तआला नबी को अपने तीन रोया में मालूम कराता है और उस से बातें करता है और मूसा से आमने सामने बोलता है। और यह भी लिखा है कि सच्चे ख़्वाब वाला नबी जो बद ताअलीम दे कुबूल ना किया जाए कि वो आज़माईश का मुक़ाम है। (इस्तिस्ना 13:3-4)

दफ़ाअ 35

अत्वार ताअलीम व तअल्लुम

(सीखने सिखाने के तौर तरीके)

इन्सान महज़ जाहिल पैदा होते हैं और पैदा होते ही इस जहान की बातें सीखना शुरू करते हैं और वो सुनने, देखने, क्रियास और तजुर्बे से ताअलीम पाते चले जाते हैं। वो बदी भी सीखते हैं और नेकी भी सीखते हैं। उन की ताअलीम कभी पूरी नहीं होती कि वो मर जाते हैं और सीखने के लिए बहुत कुछ बाकी रह जाता है। उन्हें ना इस कद्र फुर्सत है ना इस कद्र ताक़त है कि सब कुछ सीख सकें।

ज़रूरी बात इन्सान के लिए ये है कि वो अपने खालिक की मर्ज़ी को दर्याफ़्त करे कि वो क्या चाहता है? और उसी के मुवाफ़िक़ अपनी ज़िंदगी बसर करके इस से रुखस्त हो। हाँ दुनिया की और बातें भी जहां तक वो सीख सकता है सीखे इस से भी फ़ायदा होता है। लेकिन आला गरज़ यही होना चाहिए कि वो खुदा की मर्ज़ी को दर्याफ़्त करे क्योंकि बहबूदी उस की इसी पर मौकूफ़ है। आम तरीका ताअलीम आदमीयों के लिए इक़तिसाब और इस्तिफ़ाज़ा (फ़ायदा उठाना) और फ़िक्र है और यह तरीका हवास से इलाका रखता है और पूरा होता है। लेकिन खुदा की मर्ज़ी इस तरीके से पूरी पूरी दर्याफ़्त नहीं हो सकती है। इसलिए खुदा ने एक और तरीका ताअलीम का दुनिया में ज़ाहिर किया है जिसे “इल्हाम” कहते हैं। ये तरीका खास ईलाही मर्ज़ी के इज़हार के लिए है और ये आम आदमीयों के लिए नहीं है बल्कि खास लोगों को बख़शा गया था जिनके वसीले से ईलाही मर्ज़ी बाइबल शरीफ़ में कलम-बंद हो गई है। इस तरीके से जो ताअलीम होती है उस के लिए अल्फ़ाज़ जेल दुनिया में मशहूर हैं यानी इल्हाम, मुकाशफ़ा, इल्का, वही, वज्द, वज्दान, फ़ैज़।

“इल्हाम” के मअनी हैं कि “कोई मतलब इन्सान के दिल में खुदा की तरफ़ से आए जिसमें इक़तिसाब और इस्तिफ़ाज़ा और फ़िक्र को और कुव्वत वाहिमा को दखल ना हो।”

“मुकाशफ़ा” के मअनी हैं “पर्दा हटा के कुछ दिखाना”

“इल्का” के मअनी हैं “खुदा की तरफ़ से कोई बात दिल में डाला जाना”।

“वही” के मअनी हैं “खुदा का पैग़ाम”

“वज्द” के मअनी हैं “बवसीला चश्म-ए-दिल के खुदा को देखना।”

“वज्दान” इन के मअनी हैं “गुम-शुदा को पाना।”

“फ़ैज़” के मअनी हैं “खुदा की तरफ से दिलों में बरकत का बह के आना”

दुनिया में बड़ा मुबाहिसा इस बारे में हो रहा है कि आया ये दो तरीके यानी “इकितसाबी” और “इल्हामी” फ़िल-हकीकत जहान में हैं या नहीं। बाअज़ कहते हैं कि सिर्फ इकितसाबी तरीका है इल्हामी तरीका फ़र्ज़ी बात है या वो मुग़ालता दे कर इल्हामी तरीके को इकितसाबी में शामिल कर देते हैं। चुनान्चे ब्रहमो और नेचरियों का यही हाल है। ये सब इल्हाम के मुन्किर हैं। इन की बातें हमें कुछ संजीदा नज़र नहीं आतीं और ना उन लोगों में कुछ ख़ैर ख़ूबी दिखाई देती है। दुनिया के दर्मियान जिस क़द्र ख़ैर ख़ूबी नज़र आती है वो सिर्फ इसी इल्हामी तरीके से निकली हुई मालूम होती है। इसलिए ऐसे मुन्किर हमें बुतलान पर नज़र आते हैं।

बाअज़ कहते हैं कि हाँ इल्हाम का तरीका तो मौजूद है मगर वो आम है। हर ज़माने में लोगों को इल्हाम हुआ करता है। खास ज़माने में खास लोगों पर और खास किताबों में मुन्हसिर नहीं है। ये क़ौल फ़रेब का है जो मुन्करीन इल्हाम ने कायलें इल्हाम को फ़रेब और मुग़ालता दे के अपने जाल में फँसाने के लिए बनाया है ताकि अपनी वहमी बातों को इस ज़माने का इल्हाम कह के इन से कुबूल करवाएं और हकीकी इल्हाम को इन से छुड़ाएं। ऐसे लोगों को मुन्करीन इल्हाम कहना चाहीए।

मैं पूछता हूँ कि इल्हाम की हमें ज़रूरत क्यों है? सिर्फ इसलिए कि हम खुदा की मर्ज़ी को मालूम करें कि हमारी उखरवी और हाल की बहबूदी क्योंकर हो सकती है? और अक़ल इस बात को कुबूल नहीं करती है कि खुदा की मर्ज़ी हर ज़माने में लोगों की निस्बत बदला करे आज कुछ मर्ज़ी है और कल कुछ और मर्ज़ी हो जाए। इस की एक मर्ज़ी है जो अक्वल से आख़िर तक सब आदमीयों की निस्बत है। सो एक दफ़ाअ एक ज़माने में इस का इज़हार काफ़ी है। हर ज़माने में इल्हाम की कुछ ज़रूरत और हाजत नहीं है। हाँ फ़ैज़ की हाजत है कि हर ज़माने में हर कोई अपने दिल में बरकत पाने का मुहताज है कि इलाही मर्ज़ी ज़ाहिर शूदा में मुस्तक़ीम हो। खुदा की तरफ़ से जो पैग़ाम आना था वो पैग़म्बरों के वसीले से आ चुका है। उस की मर्ज़ी ज़ाहिर हो गई है जो बाइबल में मुंदरज है और बरकत रुहानी ईमानदारों को हर ज़माने में बराबर मिलती रहती है जिससे वो दीनदारी में कायम और ईमान में खुश-वक़्त रहते हैं। **दुनिया में अहले बाइबल के सिवा और लोग भी हैं जो एक एक किताब ले के उस के इल्हामी होने के मुद्दई हैं इस का फ़ैसला क्योंकर हो सकता है?**

हम जानते हैं कि बाअज़ आदमीयों को वहम भी होते हैं क्योंकि कुव्वत-ए-वाहिमा उन में है। बाअज़ आदमी धोका भी खाते हैं क्योंकि वो इन्सान “ज़ईफ़-उल-बुनयान”

(जिसकी बुनियाद कमज़ोर हो) हैं और दुनिया में फ़रेब बहुत है। बाअज़ आदमीयों को मालेखौलिया (ماليخوليا) भी हो जाता है। सिफ़र-ऊई-ग़लबा (صفر اوى غلبه) से बाअज़ आदमी खुद भी फ़रेब देना चाहते हैं कि अपनी कोई गरज़ पूरी करें। बाअज़ आदमी बेवकूफ़ भी हैं क्योंकि सबने मुनासिब ताअलीम नहीं पाई है। बाअज़ आदमी शरीर (बुरे, बेदीन) भी हैं क्योंकि उन के दिलों में शर है। बाअज़ आदमी बजा-ए-ख़ुद नेक और ख़ुदा तरस और सच्चे भी हैं इसलिए हर मुद्दई का क़ौल बेताम्मुल कुबूल करना या रद्द करना मुनासिब नहीं है जब तक कि मुनासिब तहक़ीक़ ना हो जाये। पस जो कोई चाहे उठे और तहक़ीक़ करे कि कौनसी किताब अल्लाह से है और ऐसी सच्चाई से दर्याफ़्त करे कि ख़ुदा के सामने रूसियाह ना हो जाये। बेईमान और बे इन्साफ़ मुंसिफ़ होके फ़ैसला ना करे। बाइबल शरीफ़ की कैफ़ीयत का मुक़ाबला सब अहले मज़ाहिब की किताबों की कैफ़ीयतों से ब-हज़ार कोशिश और इन्साफ़ लायक़ आदमीयों से हो गया है और साबित हो चुका है कि सिर्फ़ बाइबल ही हक़ है, वही ख़ुदा से है। इसी में इल्हाम है, इसी में इन्सान के लिए ज़िंदगी और तसल्ली है, इसी में रोशनी है। चाहो तो बाइसाफ़ ख़ुद मुक़ाबला कर के देखो।

दफ़ाअ 36

अत्वार तहक़ीक़ात

दुनिया में झूट और सच्चाई ये दोनों मौजूद हैं बल्कि झूटी ताअलीमात बक़सत फैली हुई हैं। क्या करें कि गुमराही से बचें और ग़लतीयों में से निकलें? इस की राह सिर्फ़ यही है कि अक्वलन हम हर तरफ़ से निगाह हटा के अपने दिल में और ख़याल में सच्चे बनें यानी सच्चाई के सच्चे तालिब हों।

यहां तीन अल्फ़ाज़ हैं जिन्हें ख़ूब याद रखना चाहिए। अक्वल सच्चाई, दोम उस की तलब, सोम सच्ची तलब। सच्चाई नाम है अम्र वाक़ई का और किज़ब के खिलाफ़ है और अपने नमूने या साये का ऐन भी है। मसअला ज़ैद जो फ़िलवाके अंधा है अगर कहें कि वो आँखों वाला है तो ये झूट है और जो कहें कि वो अंधा है ये सच्चाई है। इस तरह अगर ज़ैद की तस्वीर को कहें कि ये ज़ैद है ये अम्र वाक़ई नहीं है। ज़ैद फ़िल-हक़ीक़त वो शख्स है जिसकी वो तस्वीर है। अक्लन व नक़लन सच्चाई उम्दा शैय है और किज़ब (झूठ) मकरूह है। इन्सान की तमीज़ को और सब ज़िंदा तमीज़ शख्सों को और ख़ुदा को भी सच्च प्यारा है। सच्चाई ख़ुदा की सिफ़त है और झूट शैतान की सिफ़त है। सच्चाई पर ईलाही रहमत का साया रहता है और झूट पर ख़ुदा के गुस्से की घटा छाई रहती है। सच्चाई से दिल पाक और किज़ब (झूठ) से

नापाक होता है। पस चाहिए कि हम सच्य बोलें और हर बात में सच्चा इन्साफ करें और सच्चे ख्याल अपने जहन में रखें और हर बात में सच्य के तालिब रहें और सच को इज्जत दें और दिलों में महबूब रखें और खुद इस में कायम हों।

हर कोई मुँह से तो कहता है कि सच्चाई खूब चीज़ है क्योंकि इन्सान की तमीज़ ऐसा कहती है। लेकिन हर कोई उस का तालिब नहीं है, उसे तलाश नहीं करता, इसके लिए दिन रात ऐसा मुश्ताक नहीं जैसा अपनी और गरज़ों का मुश्ताक है। इस का यही सबब है कि सच्चाई उस की नज़रों में कुछ कीमती और अज़ीज़ शैय नहीं है। वो मुहावरे के तौर पर कहता है कि सच्चाई खूब चीज़ है। ऐसा आदमी सच्चाई को ना पाएगा बल्कि झूट के जाल में फंसा हुआ मरेगा और वहां जाएगा जहां झूट का बाप यानी शैतान रहता है। चाहिए कि सच्चाई की तलब हम में हो और सच्ची तलब हो, झूटी तलब से सच्चाई हाथ नहीं आती है। वो जो सच्चाई का तालिब है चाहिए कि पहले अपनी जेब से झूट को निकाल के दूर फेंक दे ताकि सच्चाई का आशिक कामिल हो तब उस का महबूब उसे नज़र आएगा कि कहाँ है? सच्चाई नज़र आती है, सच्ची आँखों वाले को। पस चार चीज़ों को जो सच्चाई के खिलाफ हैं अपने अंदर से निकाल और दो बातों को अमल में ला तब तू हक को खूब पहचानेगा।

अव्वल बेजा तरफ़दारी को छोड़ दे, हक़ का तरफ़दार हो।

दोम खुदगरज़ी को निकाल कि ये शैतान की रस्सी है जो आदमीयों को शैतान के पास बाँधे रखती है।

सोम कजबहसी का तौर (अमल तरीका) छोड़ दे कि ये शैतान का जाल है जिसमें सदहा आदमी मगस (मक्खी) सीरत फंसे रहते हैं। बात के मगज़ की तरफ़ मुतवज्जा नहीं होते बल्कि मगज़ को फेंक देते और पोस्त को चबाया करते हैं।

चहारम गरूर ना कर। मत कह कि मैं बड़ा आलिम हूँ या बड़ा खानदानी शरीफ़ या ज़्यादा नेकोकार हूँ।

ये सब बातें सच्चाई के खिलाफ़ और गुमराही की दलदल हैं। गरूर एक नशा सा है जो आदमी के दिमाग़ को मुकद्दर (कुदूरत आमज़, गदला) रखता है। इन चार बातों को छोड़ कि जो दो बातें तुझे अमल में लाना लाज़िम हैं यह हैं :-

अव्वलन तू अपनी रूह में खुदा से जो खालिक है सच्चाई के लिए इन्किशाफ़ का तालिब हो ताकि तुझे गैबी मदद ऊपर से मिले।

सानियन अगर तू साहब-ए-इल्म है या किसी कद्र खवांदा शख्स है तो तू मुखालिफ़ों और मुवाफ़िक़ों की किताबों पर मुतवज्जा हो। अगर तू बेइल्म है और ना-खवांदा है तो इन दोनों किस्म के लोगों की बातें बग़ौर सुन और जो कुछ तू खुद ना

समझे वो बात जिस गिरोह के लोगों की है उसी गिरोह के लोगों से पूछ कि आप लोग इस बात को क्योंकर समझते हैं? और दूसरी जानिब के सामने उनका बयान पेश कर और सबकी सुन के या पढ़ के अपनी तमीज़ से आप इन्साफ़ कर। और आहिस्तगी और नर्मी से एक एक बात को सुलझा। बहुत सी बातों का हुजूम अपने सामने ना आने दे कि तेरा दिमाग़ बर्दाश्त ना कर सकेगा और तेरे सामने गौगा होगा और गोगे में हक़ पोशीदा हो जायेगा या तू खुद दीवाना सा हो के कहेगा कि ये तो सब झगड़े हैं। मैं सबसे किनारा हो के यूं यूं करूँ गो तब तू खुद अपनी तरफ़ से एक गुमराही का निकालने वाला होगा। अगर तू एक एक बात का फ़ैसला आराम के साथ करेगा तो चंद रोज़ में चंद सदाक़तें तेरे हाथ में आ जाएँगी। और तेरे ख्याल में अजीब रोशनी का बाइस होंगी और वो झगड़े का बड़ा जंजाल तेरे सामने हल हो जाएगा। लेकिन तुझे खूब मालूम हो जाये कि तुझे बवसीला अपनी तमीज़ के गौर से इन्साफ़ करना है क्योंकि ये तमीज़ अल्लाह की तरफ़ से एक रोशनी है। इसी का दूसरा नाम नूर-ए-फ़ितरत है और यही पहला हादी इन्सान के लिए खुदा की तरफ़ से मुकरर है और उस में तारीकी भी छा जाती है। इन्हीं चार मकरूह चीज़ों के सबब से जिनका ज़िक्र मैंने ऊपर किया है। जब तू ने इन चारों को अपने अंदर से निकाल डाला है तो अब तेरी तमीज़ साफ़ हो गई है और सच्चाई की तरफ़ खूब हादी हो सकती है। अब हर बात का मुनासिब फ़ैसला तेरी ही तमीज़ से होगा और तू इस फ़ैसले पर बाइस्तहकाम कायम भी रहेगा क्योंकि तू सच्चाई का तालिब था।

हाँ अगर तू अपनी जान को फ़रेब देगा और उन बद सिफ़तों मजकूर बाला में से कोई बद सिफ़त छुपा के अपने दिल में रखेगा। इस सूरत में तेरे फ़ैसले के दर्मियान इस पोशीदा बद-सिफ़त की कुछ बदबू ज़रूर निकलेगी और तेरा ही दिल तुझे अंदर अंदर इल्ज़ाम देगा और दीगर मुबस्सिरीन रोशन ज़मीर हक़-पसंद तेरे फ़ैसले में तेरी इस बद-सिफ़त का खमीर तुझे दिखाएँगे और तू बे इन्साफ़ होके अदालत ईलाही में सज़ा का सज़ावार होगा। हज़ारों आदमी हैं जो अपने आपको हक़ का तालिब कहते हैं मगर किज़ब को बग़ल में दबाए हुए नापाक बहस किया करते हैं। वो जो फ़िल-हकीकत सच्चाई के सच्चे तालिब हैं वो ज़रूर सच्चाई को पाते हैं।

दफ़ाअ 37

कामिल इन्सान के बयान में

कामिल इन्सान वो है जिसकी इन्सानियत के सब मदारिज जिस्मानी और रुहानी पूरे पूरे और ठीक मुनासबत में हों। यानी उस की इन्सानियत के किसी हिस्से में कमी बेशी ना हो। जब कहते हो कि इस थैली में पूरे सौ रूपये हैं। इस के यही मअनी हैं कि सौ से ना कुछ कम है ना ज़्यादा, मगर सौ इकाईयां पूरी हैं। लफ़ज़ “कामिल” के मअनी हैं “पूरा”, “बेनुक्स”। कामिल इन्सान के लफ़ज़ी मअनी हैं वो इन्सान जिसकी इन्सानियत में कुछ नुक्स नहीं।

हमारे मुल्क के कजफ़हम लोग जो मुर्शिद-ए-कामिल की तलाश में होते हैं। वो अक्सर मुर्ताज़ (रियाज़त करने वाले) और कुछ परहेज़गार लोगों को जब उन से कोई अचंभे की बात देखते हैं कामिल आदमी कहा करते हैं बल्कि अपनी रूह को भी उनके सपुर्द कर देते हैं जो वो फ़रमाते हैं ये करते हैं। क्योंकि उन्हें कामिल इन्सान मिल गया है और उनका पीरो मुर्शिद हुआ है। ये निहायत नाज़ुक मुआमला है। इस में बड़ी गलतीयां होती हैं। अक्सर अंधे लोग इस अंधे मुर्शिद के पीछे चल के उस के साथ दोज़ख की गार में जा गिरते हैं। पस कामिल इन्सान की तारीफ़ बग़ौर समझ के नाज़रीन को होशयार होना चाहिए।

मुहम्मदी लोग कहते हैं कि मुहम्मद साहब कामिल इन्सान थे। मैं समझता हूँ कि इन लोगों ने कामिल इन्सान के मफ़हूम पर ग़ौर नहीं किया है। सिर्फ़ शेफ़तगी (इश्क़) के सबब से और इस लिहाज़ से कि वो उनके पेशवा हैं, उन्होंने हज़रत को कामिल इन्सान कह दिया है। अब ज़माना रोशनी का है और बहुत कुछ साफ़ साफ़ नज़र आता है। इसलिए हम ख़ूब दर्याफ़्त कर के कहेंगे कि कामिल इन्सान कौन है? कामिल इन्सान की वही तारीफ़ है जो इस दफ़ाअ की पहली सतरों में मैंने लिखी है। इस को हिफ़ज़ रखना चाहिए। इस के मुवाफ़िक़ अगर कोई शख्स नज़र आए तो उस को कामिल इन्सान समझना मुनासिब होगा।

लफ़ज़ “इन्सान” पर बहुत बहस हो चुकी है और इस का मफ़हूम यही है कि इन्सान एक चीज़ है मुक्कब हैवानियत और मल्कियत से खाकी जिस्म उस का खेमा सा है। पस चाहिए कि जिस्मानी आज़ा सब दुरुस्त हों और हैवानी कुव्वतें भी मुनासिब सूरत में मौजूद हों और सिफ़ात मल्किया की रूया नफ़स-ए-नातिका की कुव्वतें या सिफ़तें हैं। सबकी सब मुनासिब शक़ल में हों और ये कुल मजमूआ बेहतर तय्यब

मुनासिब कायम हो के उस अपनी खास निस्बत या इलाका में जो उस को अपने खालिक से अपनी वजाअ में है वो शख्स बेदाग सूरत में कायम हो। वही कामिल इन्सान है।

तोज़िह उस की यूं है कि जिस्मानी और हैवानी और मल्की सब हिस्सों के वजूदी तकमिला के बाद ये भी ज़रूर है कि इन में निस्बतें भी मुनासिब हों ना उनका कोई हैवानी सिफ़त तअदी करके किसी मल्की सिफ़त में खलल-अंदाज़ हो। और ये भी चाहिए कि वो अपनी बनी नो और उन सब दुनियावी खारिजी इश्याय के दर्मियान भी मुनासिब हालत में रहे। फिर अपने खालिक की निस्बत भी ठीक हो और ऐन वक़्त पैदाईश से मौत तक हर हाल में ये कैफ़ीयत तुम इस में साबित कर सको तो वो कामिल इन्सान होगा।

अब बताओ कि दुनिया में कौन ऐसा शख्स कभी ज़ाहिर हुआ है? किस की तारीख़ ऐसी है? किस को ऐसा शख्स बदलील बता सकोगे? सिर्फ़ हम मसीही लोग दिलावरी के साथ कह सकते हैं कि हमारा खुदावन्द यस्ूअ मसीह ऐसा है क्योंकि ये सब मदारिज मज़कूर उस में साबित हैं। पाक तहकीक़ से हमें ये मालूम हो गया है क्योंकि हमने उस की तवारीख़ के हर हर फ़िक़रे और हर हर लफ़ज़ को बग़ौर देखा और समझा है। उन नुक्तों और बारीकियों के साथ जो वहां मज़कूर हैं। इसलिए हम कहते हैं कि **यस्ूअ मसीह कामिल इन्सान है और यह बयान उस की माहीयत (असलियत) इन्सानी का है। उलूहियत की माहीयत (असलियत) इस की जद्दी (आबाई, मौरूसी) बात है और वह भी पूरी खुदाई है। पस वो कामिल खुदा और कामिल इन्सान है।** आदम भी कामिल इन्सान पैदा हुआ था और कुछ अरसा तक कामिल रहा। फिर वह कमाल के रुत्बे से गुनाह के सबब गिर गया और उस की निस्बतों में खलल आ गया और खलल के सबब से रुहानी कुव्वतों में अंधेरा सा छा गया और सारा कारखाना दरहम-बरहम हो गया। तमाम औलाद में बदी और गुमराही फैल गई और लानत के निशान ज़ाहिर हो गए और हम सब के सब निकम्मे और नाकिस ठहरे।

अलबत्ता कभी कभी बाअज़ शख्स दुनिया में ऐसे भी ज़ाहिर हुए जिन्हें खुदा के कलाम में कामिल कहा गया मसलन नूह वह अपने ज़माने में रास्तबाज़ था। (पैदाईश 6:9), दाउद का दिल कामिल हुआ। (1 सलातीन 15:3), अय्यूब कामिल और सादिक़ था। (अय्यूब 1:8) ये सब लोग हकीकी कामिल ना थे, दीनदार और भले आदमी थे। इज़ाफ़ी और मजाज़ी तौर पर कामिल थे और मसीही लोग भी दुनिया में ऐसे ही कामिल होते हैं। आखिर को वो और हम सब अपने कमाल को पहुँचेंगे। हकीकी कामिल सिर्फ़ यस्ूअ मसीह है। वो दुनिया में पैदा हो के हिक्मत में और क़द में खुदा के और इन्सान के नज़दीक़ मक़बूलियत में तरक्की करता गया। (लूका 2:52) वही खुदा का और इस्राईल

का कुद्स है। अल्लाह का बेऐब बर्रा है। उसने खुदा की मर्जी पर पूरा पूरा ऐसा अमल किया कि खुदा की निगाह में अपने और खुदा के दर्मियान किसी दक्कीका (बात) के भी कसूर ना आने दिया। उसने आदमीयों के हुक्क भी पूरे किए बल्कि अपने जायज़ हुक्क भी छोड़ के आदमीयों के लिए बेहद फ़ज़ल तैयार कर दिया। इसी लिए तमाम अक्वलीन और आखरीन की निगाह उस पर है। अक्वलीन बहिदायत ईलाही उधर से और हम आखरीन इधर से उसी को तकते हैं और वो सबकी निगाहों का निशाना है। और जब हम उसे तकते हैं तो उस का अक्स हम पर पड़ता है और हम सुधरते और कामिल होते चले जाते हैं। यहां तक कि हम अपने कमाल को पहुँचेंगे और तमाम नुक्स हम में से निकल जाएँगे। कामिल इन्सान यानी मसीह के पूरे क़द के अंदाज़े तक पहुंचे। (इफ़िसियों 4:13)

पस वो सब लोग जो कामिल मुर्शिद के तालिब हैं चाहिए कि मसीह यस्ूअ को ताकें। नाक़िस आदमीयों की तरफ़ ताकने से क्या फ़ायदा है। नाक़िस से नाक़िस बनते हैं और कामिल से कामिल होते हैं। वो जो कामिल खुदा और कामिल इन्सान है और अक्वलीन व आखरीन की निगाहों का निशाना खुदा से मुकर्रर है और वह अनदेखे खुदा की सूरत है। उस का तसव्वुर ऐन खुदा-परस्ती है और ग़ैर का तसव्वुर जो तसव्वुर शेख कहलाता है बुत-परस्ती है। **आदमी जब बुत-परस्ती करते हैं तो खुद मिस्ल बुत के हो जाते हैं और जब खुदा-परस्ती करते हैं तो खुदा की सूरत में बहाल होते चले जाते हैं।** ये सिर्फ़ यस्ूअ मसीह की तरफ़ ताकने से होता है और वह ताका जाता है अपनी तवारीख में जो किताब इंजील में मज़कूर है।

दफ़ाअ 38

इन्सान के पैदा करने से खुदा का क्या मतलब है

हर मौजूद शैय के लिए ये हकीम लोग चार इल्लतों या सबबों का ज़िक्र करते हैं :-

अक्वल “इल्लत-ए-माद्दी” (علتِ مادی) है मसलन तख्त के लिए इल्लत माद्दी लकड़ी है जिससे वो बना है। इन्सान के लिए इल्लत माद्दी क्या है? ये बताना मुश्किल है क्योंकि इन्सानी जिस्म के लिए तो हम जल्द कह सकते हैं कि अर्बा अनासिर उस की इल्लत माद्दी हैं। लेकिन उस की रूह का माद्दा अनासिर नहीं हैं वो कोई आलम-ए-

बाला की शैय है जिसकी हकीकत मालूम नहीं है। पस यही कहना पड़ता है कि इन्सान का मादा मुरक्कब है, सफलियत (पस्ती) और अलवियत से।

दोम “इल्लत-ए-सूरी” (علتِ صوری) है यानी उस शैय की सूरत मसलन तख्त की खास सूरत जो नज़र आती है ये उस की “इल्लत-ए-सूरी” कहलाती है। इन्सान की भी जो सूरत देखते हो ये उस की इल्लत-ए-सूरी है।

सोम “इल्लत-ए-फाइली” (علتِ فاعلی) जिससे वो शैय बन गई मसलन तख्त बन गया है। बख्खार से इन्सान को किस ने बनाया? अक्ल कहती है कि खुदा ने बनाया। तब उस की इल्लत-ए-फाइली खुदा है।

चहारुम “इल्लत-ए-गाई” (علتِ غائی) है यानी उस शैय की वज़ाअ से जो गरज़ और मतलब है इस का नाम “इल्लत-ए-गाई” है मसलन तख्त की इल्लत-ए-गाई ये है कि उस पर बैठें। इन्सान की पैदाइश से क्या मतलब है? खुदा तआला तो चीज़ों के पैदा करने में किसी गरज़ और मतलब का हरगिज़ मुहताज नहीं है। तो भी साफ़ देखते हो कि चीज़ें मौजूद हैं और उन की पैदाइश से जो गरज़ें हैं वो उनको चस्पॉ हैं, बेगर्ज़ी कोई चीज़ ही नहीं। हम नहीं कहते कि खुदा इन चीज़ों का मुहताज था इसलिए बनाया। उस ने अपनी खुशी से इन्सान को पैदा किया और सब कुछ उस के फ़ायदे के लिए बनाया है।

हुज्जत इस में है कि इन्सान को क्यों पैदा किया? इस की इल्लत-ए-गाई क्या है? ये तो ज़ाहिर है कि सब कुछ इन्सान के लिए पैदा हुआ फिर इन्सान किस मतलब के लिए पैदा हुआ? वो बहुत ही बड़ा और भारी मतलब होगा। कुर्राह अर्ज़ी (पृथ्वी) की पैदाइश और जो कुछ इस में है ज़रूर इन्सान के लिए है। हर इन्सान की पैदाइश जिस मतलब पर होगी वो मतलब सब मतलबों के ऊपर होगा जिसके लिए इतना बड़ा कारखाना कायम किया गया है। भाईओ उस मतलब को दर्याफ़्त करो और उस में कायम हो ताकि तुम्हारी पैदाइश का मतलब तुम में पाया जाये।

मुहम्मद साहब ने अपनी हदीस में ये बताया है शायद किसी रहबान से उन्हीं ने सुना होगा कि (كنت كنزاً مخفياً فأحببت أن أعرف فخلقتُ الخلق) गोया खुदा कहता है कि “मैं पोशीदा खज़ाना था मैंने चाहा कि ज़ाहिर हो जाऊं पस मैंने जहान को पैदा कर दिया।” कुरआन में मुहम्मद साहब ने कहा है कि आदम को खुदा ने इसलिए पैदा किया कि अपना खलीफ़ा या नायब दुनिया में बनाए।

हमा ओसत (همہ اوست) वाले कहते हैं कि खुद (खुदा) इस सारी पैदाइश में जलवागर है। तब अपना तमाशा आप ही देख रहा है, आप ही मादा है, आप ही सूरत है, आप ही फ़ाइल है, आप ही गायत है। ये ख़्याल अहमक भंगड़ों का है ना उस के लिए कोई दलील, ना हुज्जत।

ये ऐसी बात है जिसे एक ग़मज़दा शायर ने अपने दिल का बुखार निकालने को कहा है कि :-

दर्द-ए-दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को वर्ना ताअत के लिए कुछ कम ना थे करू बयाँ

और उन अक्लमंदों में से भी जिसके ख़्याल में जो कुछ आता है वो कहता है। लेकिन नफ़स-परवर और पेटू लोग अपने कामों से ज़ाहिर करते हैं कि गोया वो अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशों के पूरा करने के लिए पैदा हुए हैं। वो कहते हैं कि खाओ, पियो कि कल मरेंगे। हमारी अक्ल ना तो ये बात मानती है कि ये सब खुदा ही खुदा है और ना ये कि हम दुखों के लिए पैदा हुए हैं, ना ये कि शिकम-परवरी और अय्याशी हमारी इल्लत-ए-गाई है। क्योंकि इतना बड़ा कारखाना और इन्सान की ये अजीब पैदाइश और सूरत किसी ज़लील मक्सद पर तो हरगिज़ नहीं है।

अव्वलन कलाम-उल्लाह की तरफ़ देखो कि इन्सान की पैदाइश से वहां खुदा का क्या मतलब मज़कूर है? (पैदाइश बाब 1,2 से) ज़ाहिर है कि आदम को खुदा ने अपना हमशकल इसलिए पैदा किया था कि वो सब चीज़ों पर हाकिम और सिर्फ़ खुदा का महकूम हो कर अबद तक ज़िंदा आराम में रहे। लेकिन उसने बइख़्तियार खुद इस गरज़ को बर्बाद कर दिया, अपनी सूरत भी बिगाड़ी और अपनी हुकूमत भी खोई और खुदा का महकूम ना रह के अपने ऊपर मौत भी ली। क्योंकि खुदा का नाफ़रमान मौत का मुस्तहिक है।

सानियन उस कामिल इन्सान यानी यसूअ मसीह की तरफ़ देखो जो दुनिया में यगाना ज़ाहिर हुआ। उस की तवारीख़ साबित करती है कि वो बेशक नादीदा (अनदेखे) खुदा की सूरत था और सब चीज़ों पर उस की हुकूमत भी थी। वो बाइख़्तियार खुद हुआ और दरिया, अर्वाह मर्दुम, शयातीन, अमराज़ और मौत व हयात वगैरा सब चीज़ों पर हाकिम था और खुदा तआला का भी बेकसूर, महकूम और ताबे फ़रमान रहा। उस पर मौत का फ़त्वा ना था क्योंकि वो बेगुनाह था तो भी उस ने हमारे लिए मौत को अपने ऊपर आने दिया मर गया, दफ़न हुआ, तीसरे दिन मुर्दा में से जी उठा और अबद तक ज़िंदा है और खुदा तआला के अर्थ मजीद पर तख़्त नशीन है। उस के सारे काम जो

हमारे लिए हुए, उस की तमाम ताअलीम जो उस ने हमें दी, उस की रूह की तासीरें जो हम पर होती हैं ये सब कुछ इसी एक मतलब पर है कि हमें मौत में से निकाले और पाक साफ़ करके और खुदा का हम-शकल बना के सिर्फ़ खुदा का महकूम और सब चीज़ों पर हाकिम ठहरा दे ताकि हम अबद तक आराम में ज़िंदा रहें और कि खुदा हम में सुकूनत करे।

पस इन्सान की पैदाइश से मतलब और मक़सद और इल्लत गाई यही है कि इन्सान ऐसा हो और ऐसे काम करे तब वो खुदा का नायब बजाय खवेश (किराबती) हो सकता है। ये कैसी उम्दा और आला और अफ़ज़ल गरज़ इन्सान की पैदाइश से है जो ठीक इस अज़ीम दायरा पैदाइश के मुनासिब और हमारी इल्लत मादी और सूरी और फ़ाइली के भी मुवाफ़िक़ है। ऐसी इल्लत-ए-गाई का इज़हार कभी किसी दानिशमंद की दानाई से हुआ था? हरगिज़ नहीं और ना हो सकता है। अगर कोई आदमी इस गलत गाई को कुबूल ना करे और कुछ इल्लत-ए-गाई सुनाए उस का बयान इस बयान से कुछ नीचे ही गिरा हुआ होगा। काश के हर कोई अपनी इस इल्लत-ए-गाई से आगाह हो जाए और इस मक़सद के हासिल करने के लिए यसूअ मसीह के पास चला आए कि वो इस को बहाल करेगा और वह मक़सद हासिल करा देगा।

(फ) ये सच्च है कि खुदा किसी गरज़ का मुहताज नहीं तो भी तमाम कारखाना पैदाइश में हर शैय के लिए कुछ इल्लत-ए-गाई है। इस से उस की खुदाई मुहताज बागराज़ नहीं हो जाती बल्कि उस की मुहब्बत और कुदरत और हिक्मत वगैरा सिफ़ात का इज़हार और बयान होता है।

(फ) वो गरज़ जो इन्सान की पैदाइश से है हर फ़र्द बशर में हरगिज़ पूरी ना होगी क्योंकि वो जबरी गरज़ नहीं है बल्कि आज़ादी के साथ आदमीयों में मतलूब है सिर्फ़ उन के फ़ायदे के लिए। अगर आदमीयों में से कोई शख्स खुद इस गरज़ से अलग होना पसंद करे तो इस का इख़्तियार है और इसी लिए लिखा है कि बनी-आदम में से एक बक़ीया नजात पायगा।

(फ) वो गरज़ जो हमारी पैदाइश से हम में मतलूब है और जिस से हम सब आदमी बहुत ही दूर जा पड़े हैं जिसमें आदमीयों को फिर बहाल करने के लिए यसूअ मसीह खुदावन्द दुनिया में आया है, इसी ज़िंदगी के दर्मियान मसीहियों में मुकम्मल नहीं होती है। हाँ हमारे अंदर बवसीला मसीही ईमान के वो गरज़ कुछ जलवागर और मोअस्सर होती है और इस का बैयाना सा हम में आ जाता है जिससे यकीन होता है कि आइन्दा जहान में वो गरज़ हम में खुदा तआला पूरी करेगा। तमाम ईमानदार और मोअतबर मुक़द्दस इसी उम्मीद में दुनिया से चले गए कि हम आइन्दा वक़्त में इस

गरज़ को हासिल करेंगे। देखो क्या लिखा है “पर मैं सदाक़त में तेरा दीदार हासिल करूँगा। मैं जब जाऊँगा तो तेरी शबाहत से सैर हूँगा।” (ज़बूर 17:15)

(फ) मसीह ख़ुदावन्द बाएतिबार उलूहियत ख़ुदा बाप के बराबर है और बाएतबार इन्सानियत वो ख़ुदा तआला का पूरा खलीफ़ा और ज़मीन व आस्मान का पूरा इख़्तियार उस के हाथ में है। हम सब मसीही बवसीला ईमान के उस से अक्वलन गुनाहों की माफ़ी हासिल करते हैं। फिर हम आप को मअ (साथ) अपनी सब ख्वाहिशों के उस का मुतीअ (फर्माबरदार) करके कुदूसीयत के रुत्बे में बतदरीज तरक्की करते और ख़ुदा की सूरत बनते चले जाते हैं और तक्मील हमारी इस सूरत में उस वक़्त होगी जबकि हम क्रियामत के फ़र्ज़द होके फिर नए बदन में मसीह से उठाए जाएंगे। उस वक़्त हम सब उस की मानिंद होंगे और हमारी बहाली कामिल होगी।

(फ) इस मतलब के लिए एक खास दिन ख़ुदा से मुकर्रर है। उसी दिन का नाम “ख़ुदा के फ़र्ज़न्द के ज़ाहिर होने का दिन है।” उस दिन वो गरज़ हम में बवसीला मसीह के पूरी होगी और हम अबद तक इस जलाल में रहेंगे। इस वक़्त दुनिया में इस गरज़ की तैयारी बवसीला मसीह के रूह से हम हो रही है और कुछ ऐसा काम हम में ख़ुदा से हो रहा है जिससे हमें यकीन है कि तकमिला इस काम का हम में इस गरज़ को ज़रूर पूरा करेगा। उस वक़्त मसीह के सब मुखालिफ़ खार और रुस्वा होंगे और शैतान के साथ जिसके वो दुनिया में साथी थे अबदी दुख में चले जाएंगे। ज़्यादा हसरत उन्हें इस बात पर होगी कि ख़ुदा की तरफ़ से उन की बहाली का इंतिज़ाम मसीह हुआ और वह बुलाए भी गए मगर अज़ ख़ुद ना आके उन्होंने ने अपनी बेहतरी का मौक़ा खो दिया।

दफ़ाअ 39

मौत के बयान में

किसी हैवान की ज़िंदगी का जाता रहना “मौत” कहलाता है। इन्सान के सिवा सब हैवान मुत्लक़ फ़ानी हैं। पस उन की मौत ये है कि उन की ज़िंदगी बिल्कुल मादूम (गायब) हो जाएगी यानी बदन टूट के अनासिर में मिल जाये और जान भी कहीं ना रहे, बिल्कुल नेस्तनाबूद हो जाएगी। इन्सान की मौत कुछ और चीज़ है। इसलिए कि वो महज़ हैवान नहीं है बल्कि उस की हैवानियत के ऊपर कुछ और चीज़ इस में है जो ग़ैर-फ़ानी है। पस जहां तक इन्सान में हैवानियत है वहां तक उस के साथ भी वही मुआमला होता है जो सब हैवानों के साथ मौत में हुआ करता है लेकिन उस चीज़ में

जो हैवानियत से बुलंद इस में है नीस्ती का मुआमला अमल में नहीं आता है सिर्फ इखराज का मुआमला होता है। इसी वास्ते इन्सान की मौत के लिए एक दूसरा लफ़्ज़ “इंतिकाल” दुनिया में मुरव्वज हुआ है। कलाम-उल्लाह में पाँच लफ़्ज़ इन्सान की मौत के लिए इस्तिमाल में आए हैं जिनसे कुछ-कुछ मौत की कैफ़ीयत मालूम हो जाती है।

- 1) **बदन से रूह का निकलना** (अय्यूब 11:20) इस से मालूम होता है कि रूह इन्सानी उस के मुर्दा बदन ही में तहलील नहीं हो जाती मगर उस से अलग हो जाती है।
- 2) **रूह का उंडेला जाना** जैसे पानी एक बर्तन से दूसरे बर्तन में उन्डेलते हैं (यसअयाह 53:12) इस लफ़्ज़ में इशारा है कि रूह इन्सानी बदन से निकल के कोई और बदन अल्लाह से पाती है। (1 कुरंथियो 15:35-44)
- 3) **चला जाना** यानी इस जहान को मअ (साथ) बदन के छोड़ के किसी दूसरे जहां में चला जाना। (ज़बूर 39:13)
- 4) **सो जाना** या मौत की नींद में आ जाना या ख़्वाब दाइमी में चले जाना (युहन्ना 11:11, ज़बूर 13:3, यरमयाह 51:39) ये अल्फ़ाज़ बदन की निस्बत मालूम होते हैं क्योंकि रूह कभी नहीं सोती। दुनिया में देखते हैं कि नींद के वक़्त बदन सोता है रूह बेदार रहती है। हाँ आअज़ा (बदन के हिस्सों) को कुछ हवास के कामों से मुअत्तल करके चुप-चाप हो जाती है।
- 5) **सूरज का डूबना** या गुरुब होना। (यरमयाह 15:9) में लिखा है “उस का सूरज डूब गया।” यहां “रूह” को “सूरज” कहा गया है और दुनिया का सूरज जब डूबता है तो वो मादूम (गायब) नहीं हो जाता लेकिन ज़मीन की दूसरी तरफ़ चला जाता है।

(फ) कलाम-उल्लाह से और अक़ल से भी मौत की दो किस्में बलिहाज़ शख्स मुर्दा के मालूम होती हैं।

अव्वल सादिकों की मौत है, **दोम** बेईमानों की मौत है। सादिकों की मौत ये है कि इन्सान ईमान में मग़फ़िरत हासिल करके मरे। बलआम ने भी इस मौत की तमन्ना की थी मगर ना पाई (गिनती 23:10) इस दुनियावी ज़िंदगी के अंजाम पर भी मौत इन्सान के लिए फ़्तहयाबी का पहला दरवाज़ा है। बेईमानों की मौत क्या है? ये कि आदमी अपने गुनाहों में लिपटा हुआ बग़ैर ईमान और मग़फ़िरत के मर जाये। (युहन्ना 8:24) ये मौत जहन्नम में दाखिल होने का पहला दरवाज़ा है।

(फ) मौत के ज़ाहिरी अस्बाब पर निगाह करके हकीमों ने इस की दो किस्में बयान की हैं। **अव्वल** "मौत तिब्बी" वो है कि जिस्म के फ़ित्री इंतज़ाम में कुछ खलल आ जाए या वो शख्स अपनी पूरी उम्र को पहुंच के मर जाये जैसे दरख्तों के पके फल गिर जाते हैं। दोम "मौत इख्तरामी" (موت اختزائی) वो है कि भले चंगे आदमी की मौत किसी और सबब से आ जाए मसलन वो दुश्मनों से या हाकिम से क़त्ल किया जाये या डूब मरे या आग में जल जाये या कोई और नागहानी सदमें से मर जाये। ख़ैर किसी तरह मर जाये मगर बग़ैर इजाज़त अल्लाह के कोई नहीं मरता। मसीह खुदावन्द फ़रमाता है कि कोई चिड़िया भी बे इजाज़त अल्लाह के ज़मीन पर नहीं गिरती।

(फ) मौत का वजूद इन्सान की पैदाइश से पहले मालूम होता है। इल्म तरकीब अर्ज़ी (علم ترکیب ارضی) से ज़ाहिर करते हैं कि इन्सान से पहले ज़मीन पर हैवान रहते थे और वह मरते भी थे। तब मौत का वजूद पहले से था लेकिन आदम को जब खुदा ने पैदा किया तो अपनी शकल पर बनाया था। उस के लिए मौत ना थी और उस से कहा गया था कि इस दरख्त से ना खाना वर्ना तू मरेगा। पस अगर वो ना खाता तो हरगिज़ ना मरता और हमेशा ज़िंदा रहता और औलाद भी ना मरती। मौत उस के लिए अम्र तिब्बी ना था जैसे हैवानात और नबातात के लिए अम्र तिब्बी है। लेकिन आदम ने नाफ़रमानी करके अपने ऊपर मौत का तसल्लुत होने दिया और यूँ मौत उस को लाहक़ हो गई और ऐसी लाहक़ हुई कि गोया उस के लिए अम्र तिब्बी है, उस वक़्त तक कि सब कुछ नया हो, नई ज़मीन, नया आस्मान और नया बदन ज़ाहिर हो। अभी तमाम हकीकी मसीहियों की रूहों में और उन के दिलों में नौज़ादगी ज़ाहिर हुई है तो भी वो सब मौत के बदन में रहते हैं यानी उस बदन में जिस पर मौत का फ़त्वा है और जिसके लिए ये मौत एक अम्र तिब्बी हो गया है। वक़्त चला आता है कि हम मौत के बदन से भी मखलिसी पाएंगे बवसीला मसीह के।

(फ) खुदा का कलाम मौत की दो किस्में दिखाता है "जिस्मानी मौत" जिसका बयान हो चुका। "रुहानी मौत" जिसका ये बयान है कि इन्सान की रूह में मौत का ज़हर छोड़ा जाये और उस पर मौत छा जाये। चुनान्चे जिस वक़्त आदम ने गुनाह किया था रुहानी मौत से वो उसी वक़्त मर गया था। जिस्मानी मौत 930 बरस बाद आई थी और इस अरसा में वो जिस्मानी ज़िंदा और रुहानी मुर्दा रहा था जब तक कि बवसीला मसीही ईमान के मौत उस की रूह पर से ना हटी, वो रुहानी मुर्दा था क्योंकि फ़त्वा मौत का उस पर आ गया था और निस्बत ईलाही टूट गई थी और खुदा की हुज़ूरी से निकाला गया था। इसलिए बरकते ईलाही की ओस उस पर गिरनी मौकूफ़ हो गई थी और रूह में तारीकी छा गई थी और मिज़ाज में जिस्मानियत ग़ालिब आ गई थी और

यही रहानी मौत है। पौलुस रसूल कहता है कि “जिस्मानीयत मौत है।” (रोमीयों 8:6) यही बड़ी मौत है और यह सब आदमीयों की रूहों में है। अगर ये मौत आदमीयों की रूहों में से इसी ज़िंदगी के दौरान निकल ना जाये तो उन शख्सों को अबद-उल-आबाद मौत में रहना होगा। जहां खुदा से जुदाई और शैतान से कुर्बत (नज़दिकी) है, रात-दिन रोना और दाँत पीसना है। सिर्फ मसीह खुदावन्द है जो इस मौत से आदमीयों की रूहों को छुड़ाता है और बदनों को मरने देता है क्योंकि नए बदन उन लोगों को मिलने वाले हैं।

(फ) मसीह पर मौत का फ़त्वा ना था। वो हमारे लिए मुआ (कुर्बान हुआ) कि मौत के फ़त्वे को मुकम्मल कर के हम पर से हटाए। देखो क्या लिखा है “कोई उसे (यानी मेरी जान को) मुझसे छीनता नहीं बल्कि मैं उसे आप ही देता हूँ। मुझे उस के देने का भी इख्तियार है और उसे फिर लेने का भी इख्तियार है। ये हुक्म मेरे बाप से मुझे मिला।” (युहन्ना 10:18) मसीह खुदावन्द जो कामिल इन्सान और महज़ बेगुनाह शख्स था उस पर मौत का फ़त्वा ना था क्योंकि मौत गुनाहगार के लिए है और वह बेगुनाह था, इसलिए उस का हिस्सा मौत में ना था। उस ने अपनी मर्ज़ी और खुशी से हमारे फ़ायदे के लिए अपनी जान दी और फिर अपनी जान को ले लिया। अगर मसीह पर भी मौत का फ़त्वा होता जैसे सब आदमीयों पर है तो वो हमारे गुनाहों का कफ़ारा ना हो सकता। हमारे कर्ज़ वही शख्स अदा कर सकता है जो खुद कर्ज़दार नहीं है जो खुद कर्ज़दार है वो अपना कर्ज़ अदा नहीं कर सकता हमारे कर्ज़ कैसे अदा करेगा? पस मसीह खुदावन्द मौत का मुतलक कर्ज़दार ना था और इसी लिए उस ने आयत बाला में साफ़ बताया है कि मैं अपनी जान पर इख्तियार रखता हूँ मरूँ या ना मरूँ। खुदा बाप की मर्ज़ी तो ये है कि मैं अपनी जान कफ़ारे में दूँ मगर जबर नहीं है। मुझे इख्तियार दिया गया है। सो मैं अपने बाप की मर्ज़ी को अपने इख्तियार से कुबूल करता हूँ और जान देता हूँ और फिर अपनी जान को मौत के नीचे से निकाल के आप ले लूँगा।

(1 पतरस 3:18) रास्तबाज़ ने नारास्तों के लिए दुख उठाया। (1 कुरंथियो 15:54) मौत को फ़त्ह ने निगल लिया। (यसअयाह 25:8) वो मौत को हमेशा के लिए नाबूद करेगा। आदम के सबब से आदमीयों में मौत आई है मसीह के सबब से मौत दफ़ाअ हुई और ज़िंदगी आई और सारी बहाली की सूरत दिखाई दी। फ़िलहाल मौत जहान में नज़र आती है लेकिन उस की जड़ें कट गई हैं और एक वक़्त चला आता है कि ये मौत, ग़म, रोना और आह-ओ-नाला मुतलक इस जहान से दफ़ाअ हो जाएगा। सारे बेईमान लोग और यह सब आफ़तें हट जाएँगी और सब कुछ नया और निहायत खूब और पुर जलाल होगा।

(फ) मौत की चाबी मसीह यूसूअ खुदावन्द के पास है। “...में मर गया था और देख अबद-उल-अबाद ज़िंदा रहूंगा और मौत और आलम-ए-अर्वाह की कुंजियाँ मेरे पास हैं” (मुकाशफ़ा 1:18) मौत से रिहाई बख़्शना यहोवा खुदावन्द ही का काम है (ज़बूर 68:20) मसीह खुदावन्द “यहोवा” है, इसलिए मौत की चाबियाँ उस के पास हैं और इसलिए भी कि वो मौत पर ग़ालिब आया। उस का सारा ज़ोर उस ने सहा। उस का तमाम ज़हर-नोश कर लिया। अपने आप को इस के कब्ज़े में कर दिया और इस की सारी कैफ़ीयत का लुत्फ़ देख के उस के नीचे से अज़ खुद निकल आया और क्रियामत अपनी आप कर ली और मुर्दों में से पहलौठा हो के जी उठा और खुदा तआला की दहनी तरफ़ उस के अर्श मजीद पर जा बैठा। अब वो सब अक्वलीन और आखरीन को मौत के कब्ज़े से निकाल के ज़िंदा करेगा और उन के बदनो में उन्हें खड़ा करेगा और अपने सब बंदों को अपने साथ जलाल में और हकीकी खुशी व आराम में लाएगा और सब शैतान के फ़रज़न्दों को और उन सब आदमीयों को जो मसीही होके नहीं मरते थे, अबदी मौत के हवाले कर देगा कि हमेशा दुःख में रहें।

दफ़ाअ 40

ताल्लुकात अर्वाह मोमिनीन बाखुदावन्द यूसूअ मसीह

मोमिनीन को बवसीला ईमान और बर्गुज़ीदगी के खुदावन्द मसीह के साथ एक खास इलाका हासिल हो जाता है जिसके सबब से वो लोग मसीह में पैवंद होके खुदा के मुतबन्ना फ़र्ज़द हो जाते हैं और ईलाही मीरास में शरीक होते हैं। इसी इलाके के सबब से मसीही बरकतें उनमें आ जाती हैं और उन की कमज़ोरियाँ और खताएँ दफ़ाअ होती हैं। “तुम सब जितनों ने मसीह में शामिल होने का बपतिस्मा लिया मसीह को पहन लिया।” (ग़लतियों 3:27) “और नई इन्सानियत को पहनो जो खुदा के मुताबिक़ सच्चाई की रास्तबाज़ी और पाकीज़गी में पैदा की गई है।” (इफ़िसियों 24:4) “और नई इन्सानियत को पहन लिया है जो मार्फ़त हासिल करने के लिए अपने खालिक़ की सूरत पर नई बनती जाती है।” (कलसियों 3:10) क्योंकि हम जीते जी यूसूअ की खातिर हमेशा मौत के हवाले किए जाते हैं ताकि यूसूअ की ज़िंदगी भी हमारे फ़ानी जिस्म में ज़ाहिर हो।” (2 कुरंथियो 4:11) और तुम भी इस में बाहम तामीर किए जाते हो ताकि रूह में खुदा का मस्कन बनो।” (इफ़िसियों 2:22) “पस ऐ भाईयों! चूँकि हमें यूसूअ के खून के सबब से उस नई और ज़िंदा राह से पाक मकान में दाखिल होने की दिलेरी है। जो उस ने

पर्दा यानी अपने जिस्म में से हो कर हमारे वास्ते मख्सूस की है।” (इब्रानियों 10:19-20) “गरज़ हमारी खातिर जमा है और हम को बदन के वतन से जुदा हो कर खुदावंद के वतन में रहना ज़्यादा मंज़ूर है।” (2 कुरंथियो 5:8)

इसी तरह के और बहुत से मुकाम कलाम-उल्लाह में हैं जिन्हें नाज़रीन खुद देख सकते हैं। हासिल कलाम ये है कि सच्चे मोमिनीन की अर्वाह (रूहों) में दर्मियान इसी दुनिया के बइलाका ईमान बरकाते ज़ेल नमूदार होती हैं। नई पैदाइश, नई ज़िंदगी, नई इन्सानियत खुदा की सूरत पर बनती चली जाती है और दिल खुदा का घर होता है। मसीह की मौत और ज़िंदगी की तासीर से गुनाह की निस्बत मुर्दा और रास्तबाज़ी में ज़िंदा होते हैं और लायक कुर्बत (नज़दिकी) और हुज़ूरी के होते हैं। ये सब कुछ मसीह की रूह से और उस के कफ़ारे की तासीर से उनमें होता है।

(फ) इस में कुछ शक-ओ-शुब्हा नहीं है कि ज़रूर ऐसा होता है। तवारीख कलीसिया से ज़ाहिर है कि हज़ारहा हज़ार आदमीयों की रूहों में ऐसी तासीरें हुई हैं और हर ज़माने में ख़ास बंदगाने मसीह खुदा के गवाह ऐसी तासीरों से भरपूर पाए जाते हैं। अब भी मौजूद हैं और आइन्दा को भी मिलेंगे। अगर कोई चाहे कि ऐसे लोगों को देखे तो हक़ीकी मसीहीयों के साथ रिफ़ाक़त और दोस्ती पैदा करके वो दर्याफ़्त कर सकता है कि ऐसी तासीरें मसीह से उस के मोमिनीन की अर्वाह (रूहों) में फ़िल-हक़ीक़त मौजूद हैं और वह कुछ बात नहीं है जो बाअज़ मुखालिफ़ बैठे हुए तास्सुब की राह से हक़ के ख़िलाफ़ ऐसी तासीरों का इन्कार करते हैं। हमें ऐसे आदमी कलीसिया में कहीं कहीं साफ़ नज़र आते हैं और हम अपने अंदर भी ऐसी पाक तासीरें मसीह की तरफ़ से देखते हैं और साफ़ कहते हैं कि कलाम-उल्लाह का बयान हक़ है।

ये सब पाक तासीरें और तब्दीलीयां जो मसीह से मोमिनीन में हुई हैं ये सब मसीह की रूह से हैं जो उन में मोअस्सर हैं। और जब कि ये बात साबित है कि मसीह की रूह ने उन में मोअस्सर होके उन्हें क्या से कुछ कर दिया तो हम क्योंकर कुबूल ना करें कि आइन्दा को उसी की रूह से इनमें क्या कुछ ना होगा। जिस रूह से हमारी रूहों में फ़िलहाल ज़िंदगी आई है, उसी रूह से हमारे बदनो की क्रियामत भी जलाल के लिए होगी। “और अगर उसी का रूह तुम में बसा हुआ है जिसने येसूअ (ईसा) को मुर्दों में से जिलाया तो जिस ने मसीह येसूअ को मुर्दों में से जिलाया वो तुम्हारे फ़ानी बदनो को भी अपने उस रूह के वसीले से ज़िंदा करेगा जो तुम में बसा हुआ है।” (रोमीयो 8: 11) ये एक दम में, एक पल में, पिछला नर्सिगा फूँकते वक़्त होगा। (1 कुरंथियो 15:52) और जो मसीह में होके मुए (मरें) हैं वो पहले जी उठेंगे। (1 थिस्सलुनीकियो 4:16) मसीह खुदावंद “अपनी इस कुव्वत की तासीर से.... हमारी पस्त हाली के बदन की शक़ल बदल कर अपने जलाल के बदन की सूरत पर बनाएगा।” (फिलिप्पियो 3:21)

युहन्ना रसूल बयान करता है कि हम उस की मानिंद होंगे। (1 युहन्ना 3:2), जहां मसीह है वहां होंगे और उस का जलाल देखेंगे। (युहन्ना 17:24)

(फ) अगर तुमने इस दुनिया में मसीही होके मसीह की रूह पाई है और वह रूह तुम में अब मोअस्सर है और तुम्हें वो रूह खुदा की रिफ़ाक़त का लुत्फ़ अब दिखा रही है तो यक़ीन करो कि इसी रूह से तुम्हारे बदनो की क्रियामत भी जलाल के लिए होगी। और अगर रूह नहीं पाई तो क्रियामत तो होगी मगर रुस्वाई और ज़िल्लत और अबदी दुख के लिए।

अगरचे बाद मौत रूह और बदन में जुदाई हो जाती है। रूह बदन से निकल के या अब्रहाम के पास या शैतान के फ़रज़न्दों के झुण्ड में चली जाती है और बदन खाक में मिल जाता है। तो भी कलाम-उल्लाह के बाअज़ मुक़ामों से साबित है कि रूहों को अपने बदनो से एक इज़ाफ़ी इलाक़ा बाक़ी रहता है और आख़िर को रूह अपने ही बदन में आएगी। हाँ ईमानदार का बदन जलाल में और बे ईमान का बदन ज़िल्लत में उठेगा तो भी वही बदन होगा और वही सूरत उस शख्स की होगी जो पहले थी। जलाल में सूरत साबिका नुमायां होगी और ज़िल्लत में वही पहली सूरत दिखाई देगी जिससे वो पहचाना जाएगा कि फ़ुलां शख्स है। पस जिस्म और रूह के इलाक़े को मौत मादूम (खत्म) नहीं करती है। अय्यूब कहता है मेरी यही आँखें उसे देखेंगी ना बेगाना की (अय्यूब 19:27), (2 सलातीन 13:21) में देखो क्या लिखा है कि जब वो मुर्दा एलीशा नबी की क़ब्र में गिराया गया और एलीशा की हड्डीयों से लगा तो वो जी उठा और अपने पांव पर खड़ा हो गया।

एलीशा की रूह को उस की मदफून हड्डीयों के साथ इलाक़ा था तब ही तो ये हुआ कि ग़ैर मुर्दा उस से महसूस हो के जी उठा। इस बात के सबूत के लिए ग़ौर कीजिए। उस लड़के की जान उस में फिर आई। (1 सलातीन 17:21) उन की लाशों पर जो मुझसे बागी हुए नज़र करेंगे। (यसअयाह 66:24) मैं उसे आख़िरी दिन में फिर ज़िंदा करूंगा। (युहन्ना 6:40) क़ब्रें खुल गईं और बहुत से जिस्म उन मुक़द्दसों के जो सो गए थे जी उठे। (मत्ती 27:52) बदन और रूह के दर्मियान जो इज़ाफ़ी इलाक़ा है इस का ज़िक्र बहुत आयतों में है।

दफ़ाअ 41

इन्सानी रूह के लिबास के बयान में

जबकि सच्चे ईमानदार मसीही की रूह उस के बदन से निकल जाती है तो खुदा तआला उस को, और एक बदन देता है, और वो बदन जिस्मानी नहीं है बल्कि नूरानी है और एक लिबास भी रूह को इनायत होता है जिससे उस की ब्रहंगी पोशीदा होती है और वह रूह उस लिबास में खूबसूरत नज़र आती है। हम हकीकतन मुल्बस (लिबास पहने हुए) होंगे ना कि नंगे पाए जाएंगे। (2 कुरंथियो 5:3) आस्मानी जिस्म भी हैं और ज़मीनी भी हैं, आस्मानियों का जलाल और है, और ज़मीनियों का और है। (1 कुरंथियो 15:40) ये फ़ानी जिस्म बक्का को और ग़ैर फ़ानी को पहनेगा। (आयत 53) सब मुबद्दल (बदले हुए) हो जाएंगे। (आयत 51), एक अमारत खुदा से पाएंगे। (2 कुरंथियो 5:1) ये रूह के बदन का ज़िक्र है। मौत का बदन छूट जाएगा। (रोमीर्यो 7:24) जैसा वो आस्मानी है वैसे वो भी जो आस्मानी हैं। (1 कुरंथियो 15:48) जिसमें होके (यानी रुहानी बदन में होके) उस ने उन रूहों के पास जो कैद थीं जाके मुनादी की। (1 पतरस 3:19)

फिर लिखा है कि वो जलाल में ज़ाहिर हुए यानी मूसा और एलयाह (लूका 9:31) जलाली और ग़ैर फ़ानी बदन की पोशाक सफ़ैद होगी। (लूका 24:4, मुकाशफ़ा 3:4,18) खुदावन्द मसीह की सूरत जब तब्दील हो गई थी तो उस का चेहरा आफ़ताब सा चमका था और उस की पोशाक नूर की मानिंद सफ़ैद हो गई थी। (मत्ती 17:2) समोएल नबी जब बुलाया गया तो वो अपनी पुरानी वज़ा के लिबास में आया था ताकि साउल से पहचाना जाये। (1 समोयल 28:14) मसीह की रास्तबाज़ी तमाम मोमिनीन सलफ़ व ख़लफ़ (सलफ़ यानी आबा-ओ-अजदाद, अगले ज़माने के लोग, और ख़लफ़ यानी जानंशीन, पीछे वाले) की रूहों का खूबसूरत लिबास है और यही शादी का लिबास है जो बादशाह की तरफ़ से हमें बख़्शा जाता है। चाहीए कि इसी दुनिया में हम इस लिबास को रूहों में पहनें और इस लिबास की हिफ़ाज़त करें। ये लिबास अब भी खुशनुमा है और आइन्दा को इस का जलाल खूब ज़ाहिर होगा। **फ़क़त**

तमत्